जयपुर • कोटा • बीकानेर • उदयपुर • अजमेर • जालोर • हिण्डौनसिटी • चूरू

राष्ट्रदूत

बीकानेर

Rashtradoot

epaper.rashtradoot.com

बीकानेर, बुधवार 21 मई, 2025

विचार बिन्दु

जो निर्बलों पर दया नहीं करता, उसे बलवानों के अत्याचार सहने पड़ेंगे। –शेख सादी

न्याय व्यवस्था की लेखा परीक्षा करती एक जरूरी रिपोर्ट

आम आदमी के जीवन से सरोकार रखने वाली बहसें लोकतंत्र को जीवंत बनाए रखती हैं। न्याय प्रणाली के बारे में ऐसी बहसें शीघ्र न्याय प्रदान करने के लिए समयबद्ध समाधान खोजने को भी प्रेरित करती हैं। न्यायिक संस्था में आम जन का विश्वास तभी बना रह सकता है जब न्याय में देरी न हो। ऐसा न हो कि कोई नौजवान न्याय के लिए अदालत का दरवाजा खटखटाए और अदालत का अंतिम फैसला आए तब तक वह बूढ़ा हो जाए। न्याय मिलने में अत्यधिक देरी के परिणामस्वरूप नागरिकों द्वारा कानून अपने हाथ में ले लेने की खबरें भी मिलती हैं। किसी भी अन्य संस्था की तरह न्याय प्रणाली को भी स्वतंत्र मूल्यांकन की आवश्यकता होती है। हाल ही में 'टाटा ट्रस्ट्स' के सहयोग से 'इंडिया जस्टिस रिपोर्ट 2025' जारी हुई है। न्याय प्रदान करने की प्रणाली का स्वतंत्र लेखा परीक्षण का कार्य कर रही सभ्य समाज की एक संस्था की यह रिपोर्ट है। इसमें न्याय व्यवस्था के सभी अंगों का समावेश है जैसे पुलिस और जेल प्रशासन व अभियोजन, क्योंकि ये सभी मिल कर न्याय प्रणाली बनाती हैं। यह रिपोर्ट एक कठोर मगर निर्विवाद सत्य को उजागर करती है कि हमारी न्याय प्रदान करने की प्रणाली अब भी अपने जनादेश को पूरा करने से बहुत दूर है। रिपोर्ट की प्रामाणिकता यह है कि अपने निष्कर्ष पर पहुंचने में वह पूरी तरह सरकार के ही आंकड़ों पर आधारित साक्ष्य पर निर्भर करती है। यह परीक्षण इस सर्वज्ञात वास्तविकता से फिर रूबरू कराता है कि संविधान में नागरिकों से किया गया कानून के जरिए समान न्याय का वादा अब भी पूरा होना बाकी है, वैसे ही जैसे सब बालकों को समान शिक्षा देने का वादा। रिपोर्ट में प्रस्तुत डेटा हमारी न्याय प्रणाली के प्रबंधन में रुचि रखने वालों के लिए यह बुनियादी सवाल उठाने का प्रयास करता है कि हम अपनी जड़ता के चक्र को कैसे तोड़ें तथा सुधार की राह पर कैसे आगे बढ़ने के लिए कदम बढ़ाएं। इस साल की रिपोर्ट हमें समस्या की पहचान करने को प्रेरित करती है। इसमें जो मूल थीसिस उभर कर आती है, वह सिस्टम में बैठे लोगों की आलोचना नहीं है। यह रिपोर्ट मानती है कि सिस्टम में बैठे लोगों को बहुत लंबे समय से स्वतंत्र रूप से कार्य करने की उनकी अंतर्निहित क्षमताओं से वंचित किया जाता रहा है। सिस्टम के भीतर सेवा देने वाले व्यक्ति अक्सर खुद को उन्हीं संरचनाओं से जूझते हुए पाते हैं जिन्हें बनाए रखने के लिए उन्हें बनाया गया है। सच्ची संस्थागत ताकत व्यक्तियों की क्षणभंगुर प्रतिभा या क्षणिक नवाचारों पर निर्भर नहीं हो सकती। वह तभी सुनिश्चित होती है जब आम लोगों के कौशल और प्रतिभा को उभार कर उन्हें एक मजबूत ढांचे में अपना योगदान देने के लिए प्रोत्साहित किया जाय, जो व्यक्तिगत योगदान से परे हो।

एक अच्छी तरह से काम करने वाली न्याय प्रणाली लचीलेपन, पूर्वानुमान और निष्पक्षता को प्राथमिकता देती है। इसी से असाधारण कौशल की नियमित दक्षता सुनिश्चित होती है। यह केवल इच्छाशक्ति पर निर्भर नहीं हो सकती। व्यक्तिगत योगदान से परे निरंतर, सुसंगत प्रदर्शन के लिए डिज़ाइन किये जाने से ही ऐसा हो सकता है। सही मायने में प्रभावी न्याय प्रणाली को एक स्पष्टस्वतंत्र दृष्टि और अडिग मूल्यों का आधार तैयार करना पड़ता है। भारतीय संविधान में इसकी व्यवस्था मौजूद हैं। संविधान के सिद्धांतों की न्याय प्रणाली के हर पहलू में व्याप्त होने की सबकी अपेक्षा रहती है। न्याय प्रणाली की रैंक में प्रवेश करने वाले सभी लोगों के प्रशिक्षण का यह अनिवार्य हिस्सा होनी चाहिए जिससे उनका अभिविन्यास वैसा बने जिसकी परिकल्पना संविधान में मौजूद है। किसी व्यक्तिगत दृष्टि से परे, प्रणाली में अच्छी तरह से परिभाषित संरचनाएं और प्रक्रियाएं होनी चाहिए, जो नियमितता, पूर्वानुमेयता, पहुंच, जवाबदेही तथा पारदर्शिता सुनिश्चित करती हो और वास्तविक भागीदारी को बढ़ावा देती हो। न्याय प्रणाली को उस विविध आबादी का प्रतिनिधित्व करना होता है जिसकी सेवा के लिए उसका गठन हुआ है। उसे उन उद्देश्यों तथा विशिष्ट आवश्यकताओं के अनुरूप बनाना जरूरी है जिनके लिए यह प्रणाली बनाई गई। महत्वपूर्ण रूप से यह व्यक्तिगत आधारित प्रयास नहीं होना चाहिए बल्कि एक समान प्रणाली–आधारित प्रयास होना चाहिए। आयोग, सरकारऔर नागरिक समाज के अलावा खुद न्यायालय देश की न्याय प्रणाली पर मुकदमों के बढ़ते बोझ का विश्लेषण करते आए हैं। वहीं न्याय पाने के लिए अदालतों में भटक रहे वादी–प्रतिवादी प्रतिदिन इस प्रणाली की जटिलताओं से झूंझते हैं। व्यवस्था ठीक करने के नुस्खों, सिफारिशों और प्रस्तावित समाधानों की लंबी फेहरिस्त है। फिर भी समस्या बनी हुई है, क्योंकि न्याय प्रणाली अलग–थलग नहीं है, वह एक व्यापक शासन ढांचे के भीतर बनी हुई है।

> **समग्र सुधार की व्यवस्था के लिए सभी घटकों-पुलिस, न्यायपालिका, कानूनी सहायता, बचाव और अभियोजन पक्ष के वकील, जेल, फोरेंसिक जांच संस्थाएं और मानवाधिकार आयोगों को एक साथ मजबूत किया जाना जरूरी है। व्यवस्था चलाने वालों की सहमति के बिना कोई भी सुधार सफल नहीं हो सकता।**

वह राजनीतिक, वित्तीय और प्रशासनिक ताकतों के भी अधीन है जो इसके प्रदर्शन की नियति तय करते हैं। इसलिए, इसे सुधारने के लिए सिफारिशों की एक सूची बना देने से समाधान नहीं निकलने वाला है। इसके लिए निरंतर दबाव, राजनीतिक इच्छाशक्ति और बदलाव को प्रोत्साहित करने वाली एक स्पष्ट रणनीति की आवश्यकता है। सम्पूर्ण शासन तंत्र की उप–प्रणालियों में ऐसे उपायों की पहचान करनी होगी जो कागजी सिफारिशों को मूर्त, व्यावहारिक परिणामों में बदल सकें। 'इंडिया जस्टिस रिपोर्ट' इस बात का उदाहरण है कि किस तरह कठोर, डेटा–संचालित आकलन सुधार के लिए उत्प्रेरक का काम कर सकते हैं। यह रिपोर्ट समय के साथ राज्य के प्रदर्शन पर नज़र रखकर, यह ऐसे बेंचमार्क का उपयोग करती है जो नीतिगत निर्णय लेने का मार्ग प्रशस्त कर सकती है और उसके लिए सार्वजनिक चर्चा को आकार दे सकती है। यह रिपोर्ट पारदर्शिता और तुलनात्मक रैंकिंग देती है जो विभिन्न राज्यों के बीच प्रतिस्पर्धा की भावना पैदा कर सकती है, जिससे उन्हें अपनी स्थिति सुधारने के लिए प्रोत्साहन मिलता है। इन अंतर्दृष्टियों को ज़मीनी स्तर पर लाने के लिए नागरिक समाज, शिक्षाविद् और मीडिया इसमें एकत्रित डेटा का उपयोग कर सकते हैं। न्यायालयों, आयोगों और नीति निर्माताओं को इस रिपोर्ट की जानकारी को केवल एक अकादमिक अभ्यास के रूप में नहीं बल्कि वास्तविक जीवन को प्रभावित करने वाले सुधारों को आगे बढ़ाने के उपकरण के रूप में लेना चाहिए। रिपोर्ट का ध्यान एक ही चुनौती पर है कि न्याय संस्थानों के पास संसाधनों की कमी है। चाहे वह पांच करोड़ लंबित मामलों के बोझ तले दबी न्यायपालिका हो, बड़ी संख्या में रिक्त पदों पर काम कर रहे पुलिस विभाग हों या पुनर्वास के बजाय रोकथाम के लिए बनाई गई जेलें हों, वास्तविकता निराशाजनक है।

पिछले कुछ वर्षों में बजट आवंटन में वृद्धि हुई है, फिर भी उनका उपयोग अपर्याप्त है। संरचनात्मक अक्षमताओं पर ध्यान दिए बिना, केवल खर्च में वृद्धि से बेहतर परिणाम नहीं मिल सकते। क्षमता को ठीक करना वास्तव में सफलता के लिए एक आवश्यक कदम है – लेकिन यह अकेला पर्याप्त नहीं है। परिवर्तन की संभावना तब सबसे अधिक होती है जब प्रोत्साहन ठोस होते हैं। प्रदर्शन से जुड़ी फंडिंग, अच्छी तरह से काम करने वाली संस्थाओं के लिए मान्यता, अच्छा नेतृत्व, जवाबदेही तंत्र, उपयोगकर्ता, तथा नागरिक ऑडिट के माध्यम से मिले फीडबैक सभी सुधार के प्रेरक बनते हैं। उदाहरण के लिए, जो राज्य न्यायिक रिक्तियों, पुलिस प्रशिक्षण या जेल पुनर्वास कार्यक्रमों में सुधार प्रदर्शित करते हैं, उन्हें अतिरिक्त वित्तीय सहायता से पुरस्कृत किया जा सकता है। इसी तरह, संस्थानों के भीतर व्यक्तिगत अभिविन्यास और जवाबदेही – बेहतर प्रशिक्षण और पारदर्शी मूल्यांकन प्रणालियों, सेवा की गुणवत्ता से जुड़ी पदोन्नति से सकारात्मक परिणामों को प्रोत्साहित किया जा सकता है। यह भी स्पष्ट है कि अपराध की जांच और कानून और व्यवस्था दो अलग–अलग विषय हैं जिनके लिए अलग–अलग योग्यता और प्रशिक्षण की आवश्यकता होती है। अपराधों की वैज्ञानिक जांच समय की मांग है। सुधार टुकड़ों में नहीं हो सकता। न्याय अलग–अलग नहीं बल्कि परस्पर निर्भर संस्थाओं के नेटवर्क के माध्यम से दिया जाता है। यदि पुलिस बल में कम कर्मचारी और अप्रशिक्षित हैं तो न्यायालय कुशलता से काम नहीं कर सकते। यदि कानूनी सहायता अप्रभावी है तो जेल पुनर्वास नहीं कर सकते। दोषी कैदियों के मुकाबले विचाराधीन कैदियों की बड़ी संख्या इस समस्या का प्रतिबिंब है। समग्र सुधार की व्यवस्था के लिए सभी घटकों–पुलिस, न्यायपालिका, कानूनी सहायता, बचाव और अभियोजन पक्ष के वकील, जेल, फोरेंसिक जांच संस्थाएं और मानवाधिकार आयोगों को एक साथ मजबूत किया जाना जरूरी है। व्यवस्था चलाने वालों की सहमति के बिना कोई भी सुधार सफल नहीं हो सकता। न्यायपालिका, सरकार और सिविल सेवाओं का नेतृत्व करने वालों को बदलाव लाने, जोखिम उठाने और यथास्थिति को चुनौती देने के लिए तैयार रहना चाहिए। जनता के दबाव की भूमिका भी उतनी ही महत्वपूर्ण है। न्याय सुधार इतना महत्वपूर्ण है कि इसे केवल संस्थाओं पर नहीं छोड़ा जा सकता, इसे एक सामाजिक मांग बनना चाहिए। इसका मतलब यह है कि इस बात को व्यापक मान्यता मिलनी चाहिए कि न्याय प्रदान करना केवल नैतिक अनिवार्यता नहीं है, बल्कि राष्ट्र की आर्थिक प्रगति, सामाजिक शांति, तीव्र विकास और व्यक्तिगत स्वतंत्रता की प्राप्ति का एक महत्वपूर्ण मार्ग है। भारत न्याय रिपोर्ट इस आवश्यक संवाद के लिए एक महत्वपूर्ण उत्प्रेरक के रूप में काम कर सकती है। यह रिपोर्ट केवल आंकड़ों का दस्तावेज नहीं है। यह कार्रवाई का आव्हान है। इसके निष्कर्ष हमारी न्याय प्रणाली की वास्तविकता को दर्शाते हुए एक दर्पण और एक रोडमैप दोनों देती हैं। साथ ही वे आगे का रास्ता भी सुझाती हैं। हमारे सामने सवाल यह है कि क्या हम इस ज्ञान का उपयोग बदलाव लाने के लिए करेंगे या निष्क्रियता के एक और चक्र को पनपने देंगे। हमारे सामने जो स्पष्ट है वह है कार्य करने की इच्छाशक्ति।

–अतिथि संपादक,
राजेन्द्र बोड़ा
(वरिष्ठ पत्रकार एवं विश्लेषक)

डिजिटल इंडिया के आर्किटेक्ट और सूचना तकनीक दूरसंचार क्रांति के जनक एवं पंचायती राज के सशक्तिकरण के प्रणेता राजीव गांधी

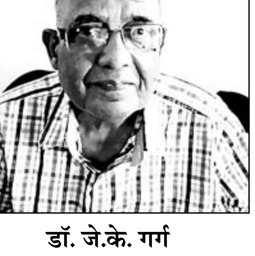

डॉ. जे.के. गर्ग

प्रधानमंत्री रहते हुए स्व गांधी ने कई महत्वपूर्ण काम किए, जिन्होंने देश के विकास को नई दिशा प्रदान की। राजीव गांधी को डिजिटल इंडिया का आर्किटेक्ट और सूचना तकनीक और दूरसंचार क्रांति का जनक कहा जाता है। राजीव गांधी ने अगस्त 1984 में भारतीय दूरसंचार नेटवर्क की स्थापना के लिए सेंटर पार डिवेलपमेंट ऑफ टेलीमैटिक्स की स्थापना करवाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। इस पहल से शहर से लेकर गांवों तक दूरसंचार का जाल बिछना शुरू हुआ, जगह–जगह पीसीओ खुलने लगे। जिससे गांव की जनता भी संचार के मामले में देश–दुनिया से जुड़ सकी। फिर 1986 में राजीव की पहल से ही एमटीएनएल की स्थापना हुई, जिससे दूरसंचार क्षेत्र में और प्रगति हुई।

स्व. गांधी मानते थे कि युवा पीढ़ी ही भारत को विकसित राष्ट्र बनाने में अहम भूमिका निभाएगा, इसके लिए उनको कंप्यूटर टेक्नोलॉजी और विज्ञान की शिक्षा देना जरूरी है। कंप्यूटर की कीमतें घटाने के लिए राजीव ने इसे सरकारी नियंत्रण से बाहर निकल दिया और असेंबल कंप्यूटर का आयात शुरू किया। बड़ी टेलीकॉम कंपनी एमटीएनएल और बीएसएनएल की शुरुआत उनके कार्यकाल में ही हुई। राजीव ने ही पंचायती राज अधिनियम के माध्यम से केन्द्रीकृत सत्ता का विकेंद्रीकरण करके पंचायतों को कई महत्त्वपूर्ण और वित्तीय अधिकार दिये थे। अयोध्या में विवादित स्थल का ताला खुलवाया। उन्होंने सनातनधर्मीयों की नाराजगी को दूर करने के लिए अयोध्या के विवादित स्थल का ताला खुलवा दिया और 1989 में राम मंदिर के निर्माण के लिए शिलान्यास की इजाजत भी दे दी।

युवाओं को रोजगार देने के लिए जवाहर रोजगार योजना को शुरू किया था। राजीव ने 1986 की शिक्षा नीति के तहत ग्रामीण क्षेत्र के लाखों बच्चों को सर्वोत्तम शिक्षा देने के उद्देश्य से जवाहर नवोदय स्कूल प्रारम्भ किये है और आज तो स्थिति ऐसी है कि शहरी क्षेत्र के बच्चे भी नवोदय स्कूलों में प्रवेश ले रहे हैं।

इंदिरा गांधी एवं फिरोज गांधी के ज्येष्ठ पुत्र राजीव का जन्म 20 अगस्त 1944 को मुंबई में हुआ था। राजीव गांधी बचपन में बहुत ही संकोची स्वभाव के थे। जब वे दून स्कूल में पढ़ रहे थे, तब उनके नाना पंडित जवाहरलाल नेहरू पहली बार उनसे मिलने स्कूल पहुंचे तो राजीव बाथरूम की बास्केट में छिप गए थे। राजनीति में आने से पहले राजीव गांधी एयरलाइंस में पायलट की नौकरी करते थे। राजीव का पूरा नाम राजीव रत्न गांधी था उनका यह नाम उनके नाना नेहरूजी ने रखा क्योंकि नेहरू जी की पत्नी का नाम कमला था और राजीव का मतलब कमल होता है कमला की याद को ताजा बनाए रखने के लिए नेहरू जी ने राजीव नाम रखा था। राजीव गांधी संगीत प्रेमी थे, उनको पश्चिमी संगीत के साथ हिन्दुस्तानी शास्त्रीय एवं आधुनिक संगीत पसंद था। लन्दन में राजीव गांधी की मुलाकात एड्विगो मानिओ से हुई थी। 1968 में राजीव गांधी ने उनसे शादी कर ली और उनका ये नाम बदलकर सोनिया गांधी रखा गया। राजीव और सोनिया के पुत्र और पुत्री राहुल और प्रियंका है।

राजीव गांधी का स्वभाव स्नेहमय सहनशील और सरल था वे जन्म से ही दयालु और करुणा मय व्यक्ति थे स्वर्गीय राजीव गांधी एक ऐसे इंसान थे, जिन्होंने ज़मीन पर ही नहीं, किन्तु जनमानस के हृदय पर भी राज किया। स्व. राजीव गांधी ही वो इंसान थे जिन्होंने उन्नीसवीं सदी में इक्कीसवीं सदी के भारत का सपना देखा था। स्वभाव से धीर–गंभीर किन्तु आधुनिक सोच एवं तार्किक क्षमता के धनी राजीव ने बीसवीं सदी में ही हिन्दुस्तान को 21वीं सदी का उन्नत राष्ट्र बनाने का सपना संजोया था।

दूरदर्शी युवा राजीव का सपना था कि भारत एक मजबूत, आत्मनिर्भर, स्वावलंबी और मानवता की सेवा करने वाला दुनिया का अग्रणी राष्ट्र बने। राजीव कहते थे कि हमारे देश की एकता और अखंडता से बढ़कर कुछ भी नहीं है। भारत अविभाज्य है। भारत के ग्रामीण और शहरी क्षेत्रों में कठोर विभाजन भारत का विलुप्त होने वाला वर्गीकरण है जो स्थानीय स्वशासन के लिए औपनिवेशिक शासन व्यवस्था की सबसे बुरी विरासत है। राजीव भारत को 21वीं सदी की दहलीज पर पहुंचना चाहते थे, वो देश को गरीबी के बोझ से मुक्त कराकर विरासत, और हमारे लोगों की बढ़ती आकांक्षाओं को पूरा करने में सक्षम बनाना चाहते थे। लोकतांत्रिक तरीके से राष्ट्र निर्माण के लिए जरूरी है धैर्य, सतत प्रयास और मेल–मिलाप की भावना। हर व्यक्ति को इतिहास से सब लेना चाहिए। हमें चाहिए कि देश में कहीं भी आंतरिक कलह और संघर्ष होता है, तो देश कमजोर होता है। इस कारण, बाहर से खतरा बढ़ जाता है। क्या हमारा लक्ष्य जातिविहीन समाज है? यदि हमारा लक्ष्य, एक जातिविहीन समाज है, तो निश्चित रूप से हमारा हर कदम उस उद्देश्य की ओर होना चाहिए। किसानों के कमजोर होने से देश का स्वावलंबन खत्म हो जाता है। लेकिन, यदि वे मजबूत होते हैं तो देश की आजादी भी मजबूत होती है। वे देश की कंप्यूटर क्रांति के जनक के रूप में भी जाने जाते हैं। रेलवे का कम्प्यूटरीकरण करके उन्होंने इस देश के सामने क्रांतिकारी परिवर्तन करके रख दिया।

40 वर्ष की अल्पआयु में ही में राजीव गांधी विशाल जनादेश के साथ भारत के सबसे कम उम्र के प्रधानमंत्री बन गये थे। उस चुनाव में कांग्रेस को 508 में से रिकॉर्ड 401 सीटें प्राप्त हुई थी। स्मरणीय रहे कि राजीव गांधी राजनीति में आने अनिच्छुक थे किन्तु उनके छोटे भाई संजय की अकाल मृत्यु की वजह से परिस्थतीयां ऐसी बनी कि उन्हें राजनीति में जबरन प्रवेश करना पड़ा। राजीव गांधी को अपने नाना नेहरु की तरह सुरक्षाकर्मियों का घेरा बिलकुल पसंद नहीं था।

वे अपनी जीप और कार खुद ड्राइव करना पसंद करते थे। राजीव गांधी को अपने नाना से आराम हराम है और अपने पिता से अपना काम खुद करो की प्रेरणा मिली थी। विकास को पसंद करने वाले युवा राजीव गांधी ने अपने मन में भारत को मजबूत, आत्मनिर्भर और तकनीकी विकास के मार्ग तेज रफ्तार से दौड़ता मुल्क बनाने का सपना संजोये रक्खा। इक्कीसवीं सदी के भारत का निर्माण उनके जीवन का प्रमुख लक्ष्य था। राजीव गांधी सौम्य एवं निर्मल स्वभाव के दूरदर्शी राजनेता थे और किसी भी निर्णय में जल्दबाजी नहीं करते थे और निर्णय लेने से पहले पार्टी के नेताओं से गहन सलाह मशविरा करते थे क्योंकि उनके दिल मे लोकतंत्र की भावना समाई हुई थी। उन्होंने जो सोचा और किया वो वो पुराने ढर्रे की राजनीति से एक दम अलग था।

राजीव गांधी एक ऐसे प्रधानमंत्री थे, जो जनता से सीधे जुड़े थे और एक ऐसे नेता के रूप में विख्यात थे जिनकी पहुंच देश के आम आदमी के हृदय तक थी। राजीव गांधी ने देश के गरीबों के उत्थान के लिए 1 अप्रैल 1989 को जवाहर रोजगार गारंटी योजना, इंदिरा आवास योजना और 10 लाख कुआं जैसी योजनाएं चालू कीं। लोग राजीव गांधी को देखने व सुनने के लिए टीवी देखा करते थे। एक ऐसा प्रधानमंत्री जिसने उस दौर में पंजाब की यात्रा की, जब देश की खुफिया एजेंसियों ने ऐसा करने से उनको मना किया था। राजीव गांधी ने पंजाब समस्या के समाधान को प्राथमिकता देते हुए 24 जुलाई, 1985 को अकाली दल के अध्यक्ष संत हरचंद सिंह लोंगोवाल के साथ समझौता करके अशांत पंजाब में शांती और सौहार्द के वातावरण का निर्माण किया। राजीव गांधी वो इन्सान थे, जो जब यात्रा पर जाते थे तो तय रास्ते से अलग होकर गांवों में जाते और आम आदमी के घरों में जाना और हर व्यक्ति से हाथ मिलाना जैसे उनको अपनी मां और नाना से विरासत में मिला था। नवंबर 1982 में भारत में आयोजित सफल एशियाई खेलों के संचालन में उनकी महत्वपूर्ण एवं सराहनीय भूमिका थी। प्रधानमंत्री के रूप में राजीव गांधी अपनी माता इंदिरा गांधी से अधिक व्यावहारिक और उदार थे। लालफीताशाही पर लगाम लगाकर और नीतिगत बदलाव के जरिये उन्होंने निजी क्षेत्र को औद्योगिक और वाणिज्यिक गतिविधियों के विस्तार की अनुमति दी। कालांतर में यही दिशा 1990 के दशक में व्यापक आर्थिक उदारवाद और मुक्त व्यापार का आधार बनी जिसे नरसिम्हा राव और मनमोहन सिंह ने आगे बढ़ाया। वर्ष 1986 में मिजोरम में लालडेंगा के नेतृत्व में दशकों से चल रहे अलगाववादी हिंसक आंदोलन को मिजोरम समझौते के द्वारा खत्म कर राज्य में लोकतांत्रिक व्यवस्था की पुनर्स्थापना राजीव गांधी की बड़ी सफलता मानी जाती है। असम गणतन्त्र परिषद के साथ असम समझोता उन्होंने ही किया था, समझोते के बाद हुए चुनाव में विपक्ष की जीत और कांग्रेस की हार पर उन्होंने कहा कि भले ही उनकी पार्टी हार गई हो किन्तु प्रजातंत्र जीत गया है।

राजीव शालीनता की प्रतिमूर्ति थे उन्होंने कभी भी अपने किसी भी राजनेतिक विरोधि के प्रति अनर्गल एवं कर्कश शब्दों का प्रयोग नहीं किया। राजीव को जब मालुम पड़ा कि अटलजी गम्भीर रोग से ग्रस्त है तो उन्होंने उन्हें यू.एन.ओ. जाने वाले देलीएष्ण का सदस्य बना कर उनको अमेरिका भेजा और राजदूत को निर्देश दिय की उनका उपचार राजकीय खर्चे से करवायी जाये। राजीव के राजनेतिक विरोधी श्री अटलबिहारी वाजपेयीजी ने कहा था कि अगर वे आज जिन्दा है तो इसकी वजह राजीव ही है। लोग उनका भाषण सुनने के लिए घंटों इंतज़ार किया करते थे। राजीव ने राजनीति में भी नैतिकता को सर्वोच्च स्थान दिया, बोफोर्स कांड के आरोपी के बीच संसद भंग कर नये चुनाव करवाने का जज्बा उन्हीं में था। बोफोर्स कांड की कई वर्षों तक उनके विरोधीयों द्वारा करवाई गई जाँच में उनके विरुद्ध कोई साक्ष्य नहीं मिले थे, इस जाँच को करवाने में करदाताओं के करोडों रूपये बर्बाद हो गये। सीधे–सच्चे ईमानदार राजीव विरोधियों एवं मीडिया के झूठे कुत्सित प्रचार के शिकार बन गये। 1989 में हुये लोकसभा चुनाव में 195 सीटे जीतने और सबसे बड़े दल के नेता होने के बावजूद उन्होंने कहा कि जनादेश कांग्रेस के खिलाफ है इसलिए उन्होंने विरोधी पक्ष में बैठने का फैसला करके स्वस्थ लोकतान्त्रिक परम्परा स्थापित की थी। वहीं आज येनकेन प्रकारेण सत्ता प्राप्त का निर्लज्ज प्रदर्शन हो रहा है।

राजीव ने ही भारत को विश्व के साथ कदम से कदम मिलाकर चलना सिखाया था। उन्होंने दक्षिण एशिया में शांति के प्रयास किए और इस देश में भाषा के आधार पर हो रहे बिखराव को भी रोका। इसी का परिणाम था कि राजीव गांधी ने श्रीलंका में शांति प्रयासों के लिए भारतीय सैन्य टुकड़ियों को भेजा लेकिन इसके नतीजे में वे खुद लिट्टे के निशाने पर आ गए और उनकी बेरहमी से हत्या कर दी गई। 21 मई, 1991 को राजीव गांधी एक रैली को संबोधित करने के लिए चेन्नई से 30 किलोमीटर दूर श्रीपेरंबुदूर में पहुंचे। इन्हीं में एक लिट्टे सदस्य धनु भी थी। राजीव गांधी के आसपास काफी कड़ी सुरक्षा व्यवस्था के बावजूद धनु ने गाँधी के पैर छूये और एकाएक बम फट गया जिसको धनु ने जो कि उसे अपने कपड़ों में छुपाया हुआ था। राजीव गाँधी समेत 17 अन्य लोग भी काल के ग्रास बन गये। इसी कारण से 21 मई, राजीव गांधी बलिदान दिवस को आतंकवाद विरोधी दिवस के रूप में भी मनाया जाता है। राजीव भी अपनी माँ इंदिराजी के जैसे आतंकवाद के शिकार बनें। उन्हें 'भारत रत्न' से भी नवाजा गया था। कुछ लोग ज़मीन पर राज करते हैं और कुछ लोग दिलों पर। राजीव ने लोगों के दिलों में अपने को बसाया, स्वर्गीय राजीव गांधी एक ऐसे इंसान थे, जिन्होंने ज़मीन पर ही नहीं, किन्तु जनमानस के हृदय पर भी राज किया। समूचा राष्ट्र राजीव गांधी को उनकी 34वीं पुन्य तिथी पर उन्हें श्रद्धा सुमन अर्पित करता है।

–डॉ. जे. के. गर्ग,
पूर्व संयुक्त निदेशक कालेज शिक्षा जयपुर

अमेरिका अपनी आंखों से झूठ की पट्टी खोले : सच्चाई कबूल कर पाकिस्तान को आतंकी देश घोषित करे

बाल मुकुन्द ओझा

भारत एक शांतिप्रिय देश है। भारत ने कभी किसी देश पर चलाकर हमला नहीं बोला और न ही किसी की जमीन हड़पी। हां, यह जरूर है किसी ने भारत के साथ छेड़छाड़ का दुःसाहस किया तो उसे छोड़ा भी नहीं। यहाँ हम बात कर रहे है ऑपरेशन सिन्दूर की। भारत पक्ष रखने के लिए देश के सांसद शीघ्र दुनिया का दौरा कर वास्तविकता से अवगत कराएँगे।

यहां सवाल यह पैदा होता है क्या दुनिया ने आंखे बंद कर रखी है कि उनकी आंखें खोलने या यूँ कहें उन्हें कुम्भकर्णी निंद्रा से जगाने हम जा रहे है। क्या दुनिया लोकतंत्र और छद्म लोकतंत्र को नहीं पहचानती। खैर यह विषय बहुत लम्बा है। अमेरिका स्वयं को सुपर लोकतान्त्रिक देश कहलवाने में बड़ा गर्व महसूस करता है। मगर आँखों पर पट्टी बांधकर अपना निर्णय दूसरे देशों पर थोपने में तनिक भी देर नहीं करता। वह इस बीच यह भी नहीं देखता कि कौन सही और कौन गलत है। यहाँ उसका स्वार्थ और व्यापर आड़े आ जाता है। अमेरिका सहित दुनियाभर के देशों की आंखें खोलने और सच्चाई से रूबरू कराने हमें जाना पड़ रहा है। पाकिस्तान की कुछ सच्चाई पर से हम भी इस लेख के माध्यम से पर्दा उठाने जा रहे हैं।

बता रहे हैं लोकतंत्र और छद्म लोकतंत्र की वास्तविकता। भारत और पाकिस्तान के बीच सीज़फायर का दावा कराने वाला अमेरिका स्वयं को दुनिया का सबसे बड़ा लोकतान्त्रिक देश कहता है, मगर आश्चर्य है उसे लोकतंत्र और छद्म लोकतंत्र में कोई फर्क नज़र नहीं आता। पाकिस्तान की अंदरूनी स्थिति से समूची दुनिया वाकिफ है मगर सच का साथ देने कोई तैयार नहीं है। राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप स्वयं को हमारे प्रधानमंत्री मोदी का दोस्त कहता है मगर संकट में अपने दोस्त की सहायता के लिए आगे आकर अपनी दोस्ती का फ़र्ज़ नहीं निभाता। अमेरिका को चाहिए तो यह था की वह सच्चाई का साथ दे और पाकिस्तान को आतंकी देश घोषित कर तुरंत व्यापार और आर्थिक सहायता देना बंद करें।

आइये, आज मौका है हम अपने पाठकों को एक बार फिर पाक की सच्चाई से रूबरू कराएं। भारत से अलग होने के बाद पाकिस्तान ने भी लोकतंत्र का रास्ता चुना था। मगर शीघ्र ही लोकतंत्र की यह नकाब उतर गई। पाक में लोकतंत्र के पीछे सेना खड़ी हो गई और देखते देखते पाक पर छद्म रूप से सेना काबिज हो गई। कहा जाता है पाक पर वही पार्टी शासन करेगी जिसे सेना का समर्थन मिलेगा। अन्यथा सेना खुद शासन की कमान सँभालते देर नहीं करेगी। यह कोई कल्पित कहानी नहीं है अपितु पाक की असलियत है। कहते है पाक के शासक का पद काँटों के ताज से कम नहीं है। उसे कब सत्ताच्युत होकर जेल जाना पड़ेगा यह किसी को मालूम नहीं है। इससे पहले सुहरावर्दी से लेकर इमरान तक 5 निर्वाचित नेता गिरफ्तार हो चुके हैं। एक को फांसी दी गई थी। पाकिस्तान अपने पूर्व शासकों को जेल भेजने के लिए पूरी दुनिया में जाना जाता है।

पाक के पूर्व प्रधानमंत्री इमरान खान सेना की मदद से पाक पर काबिज हुए थे। जितने दिन उन्हें सेना की छत्रछाया मिली वे निर्बाद रूप से राज करतेरहे फिर जैसे ही उन्होंने अपनी स्वतंत्र आवाज बुलंद करनी चाही तो उनसे जल्द ही शासन से बेदखल होना पड़ा। बेदखल होने के बाद इमरान पर कई मुक़दमे कायम किये गए और अन्तोगत्वा अपने पूर्ववर्ती शासकों की तरह जेल के सींकचों में बंद होना पड़ा। पाकिस्तान के पूर्व प्रधानमंत्री इमरान खान तोशखाना केस में दोषी करार दिए गए। उन्हें तीन साल की सजा हुई। हुसैन सुहरावर्दी, जुल्फिकार अली भुट्टो, बेनजीर, परवेज मुशर्रफ ,नवाज शरीफ, शाहिद खाकान अब्बासी आदि की कहानी ज्यादा पुरानी नहीं है जिन्होंने पहले निर्बाद रूप से पाक पर शासन किया और फिर जेल जाना पड़ा। 1956 से 1957 तक पाकिस्तान के पांचवें प्रधानमंत्री हुसैन सुहरावर्दी को 1962 में गिरफ्तार किया गया था, जब उन्होंने 1958 में जनरल अयूब खान के तख्तापलट का समर्थन करने से मना कर दिया था। हुसैन को 1962 में पाकिस्तान सुरक्षा अधिनियम 1952 के तहत जेल में डाल दिया गया। इसके साथ ही उन्हें पाकिस्तान में राजनीति में भाग लेने से भी प्रतिबंधित कर दिया गया था। इसी तरह जुल्फिकार अली भुट्टो ने 1971 में पाकिस्तान के राष्ट्रपति के रूप में जनरल याह्या खान की जगह ली थी।

उन्होंने 1973–1977 तक प्रधानमंत्री के रूप में कार्य किया था। उनके शासनकाल में पाकिस्तान ने भारत के साथ शिमला समझौते पर हस्ताक्षर किए थे, उस समय इंदिरा गांधी भारत की प्रधानमंत्री थीं। लेकिन जुलाई 1977 में एक सैन्य तख्तापलट के माध्यम से जनरल जिया–उल–हक ने सत्ता हड़प ली। भुट्टो को एक राजनीतिक प्रतिद्वंद्वी की हत्या की साजिश के आरोप में गिरफ्तार कर लिया गया था।

सितंबर 1977 में रिहा तो किया गया लेकिन फिर से गिरफ्तार कर लिया गया। बाद में उन्हें अप्रैल 1979 में सेंट्रल जेल रावलपिंडी में फांसी दे दी गई। शाहिद खाकानअब्बासी, जिन्होंने 2017 से 2018 तक प्रधानमंत्री के रूप में नवाज शरीफ की जगह ली थी, उनको भी कथित भ्रष्टाचार के लिए जनवरी 2019 में 12–सदस्यीय राष्ट्रीय जवाबदेही ब्यूरो (एनएबी) की टीम ने गिरफ्तार किया था। 2001 से 2007 तक पाक के प्रधानमंत्री परवेज मुशर्रफ को भी सत्ताच्युत कर देश से निर्वासित गया था। पाकिस्तान के पूर्व तानाशाह परवेज मुशर्रफ का संयुक्त अरब अमीरात में निधन हो गया। मुर्शरफ के खिलाफ पाकिस्तान में कई मुकदमें चल रहे थे और इसी वजह से वह दुबई में निर्वासन में जी रहे थे। इससे पहले पाकिस्तान के पूर्व प्रधानमंत्री नवाज शरीफ के साथ भी कुछ ऐसा ही हश्र हुआ था। अप्रैल 2018 में पाकिस्तान के सुप्रीम कोर्ट ने नवाज शरीफ को आजीवन सार्वजनिक पद धारण करने से अयोग्य घोषित कर दिया था।

1988 और 1990 के बीच 2 बार और फिर 1993 से 1996 तक पीएम बनने से पहले जुल्फिकार अली भुट्टो की बेटी बेनजीर भुट्टो को कई गिरफ्तारियों और जेल में कई शर्तों का सामना भी करना पड़ा था। 2007 में एक आत्मघाती हमलावर ने बेनजीर की हत्या कर दी थी। रिपोर्ट्स के मुताबिक यह हत्या पाकिस्तानी तालिबान और अलकायदा के इशारे पर की गई थी। पाक अपना इतिहास दोहरा रहा है। अब इमरान खान को गिरफ्तार कर जेल में डाल दिया गया है। असल में पाक में लोकतंत्र का दिखावा मात्र है वहां असली शासन की बागडोर सेना के हाथ में है। जो व्यक्ति सेना की हुक्म उदूली करेगा उसे सत्ता से हटना ही होगा।

-बाल मुकुन्द ओझा,
वरिष्ठ लेखक एवं पत्रकार

राशिफल

पंडित अनिल शर्मा

बुधवार 21 मई, 2025

ज्येष्ठ मास, कृष्ण पक्ष, नवमी तिथि, बुधवार, विक्रम संवत 2082, शतभिषा नक्षत्र सायं 6:58 तक, वैधृति योग रात्रि 12:34 तक, तैतिल सायं 4:04 तक, चन्द्रमा आज कुम्भ राशि में संचार करेगा।

ग्रह स्थिति: सूर्य–वृष, चन्द्रमा–कुम्भ, मंगल–कर्क, बुध–मेष, गुरू–मिथुन, शुक्र–मीन, शनि–मीन, राहु–मीन, केतु–सिंह राशि में।

आज कुमार योग रात्रि 3:22 से सूर्योदय तक है। आज वैधृति पुण्य, पंचक है। आज राजीव गांधी पुण्य दिवस है।

श्रेष्ठ चौघड़िया: लाभ अमृत सूर्योदय से 9:02 तक, शुभ 10:42 से 12:23 तक, चर 3:45 से 5:25 तक, लाभ 5:25 से सूर्यास्त तक।

राहूकाल: 12:00 से 1:30 तक। सूर्योदय 5:40, सूर्यास्त 7:06

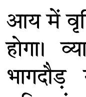

मेष
आर्थिक/वित्तीय मामलों के लिए दिन अच्छा रहेगा। आय में वृद्धि होगी। संभावित धन प्राप्त होगा। व्यावसायिक कार्यों के लिए भागदौड़ रहेगी। परिवार में सुख–सुविधाएं बढ़ेगी।

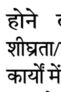

वृष
व्यावसायिक कार्यों में आ रही अड़चनें दूर होने लगेंगी। व्यावसायिक कार्य शीघ्रता/सुगमता से बनने लगेंगे। महत्वपूर्ण कार्यों में उचित सफलता मिलेगी। आर्थिक मामलों के लिए दिन अच्छा रहेगा।

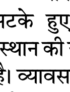

मिथुन
नवीन कार्यों के संबंध में सकारात्मक संदेश प्राप्त होंगे। अटके हुए कार्य बनने लगेंगे। धार्मिक स्थान की यात्रा का कार्यक्रम बन सकता है। व्यावसायिक/आर्थिक स्थिति ठीक रहेगी।

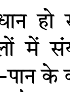

कर्क
चन्द्रमा अष्टम भाव में शुभ नहीं है। शुभ कार्यों में व्यवधान हो सकता है। व्यावसायिक मामलों में संयम रखना ठीक रहेगा। खान–पान के कारण स्वास्थ्य खराब हो सकता है।

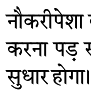

सिंह
व्यावसायिक कार्यों के लिए भागदौड़ रहेगी। नौकरीपेशा व्यक्तियों को अतिरिक्त कार्य करना पड़ सकता है। आर्थिक स्थिति में सुधार होगा। परिवार में आपसी सहयोग–समन्वय बना रहेगा।

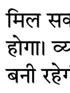

कन्या
आर्थिक मामलों से संबंधित विवादों से राहत मिल सकती है। अटका हुआ धन प्राप्त होगा। व्यावसायिक कार्यों में व्यस्तता बनी रहेगी।

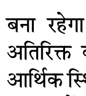

तुला
व्यावसायिक कार्यों के कारण मानसिक तनाव बना रहेगा। नौकरीपेशा व्यक्तियों को अतिरिक्त कार्य करना पड़ सकता है। आर्थिक स्थिति ठीक रहेगी। स्वास्थ्य का ध्यान रखें।

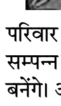

वृश्चिक
घर–परिवार में अतिथियों का आगमन रहेगा। परिवार में धार्मिक–मांगलिक कार्य सम्पन्न हो सकते हैं। व्यावसायिक संपर्क बनेंगे। आर्थिक स्थिति में सुधार होगा।

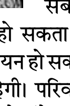

धनु
व्यावसायिक कार्यों के संबंध में उचित सोच–विचार हो सकता है। कार्य योजना का क्रियान्वयन हो सकता है। आर्थिक स्थिति ठीक रहेगी। परिवार में मन को प्रसन्न करने वाले संदेश प्राप्त होंगे।

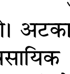

मकर
आर्थिक कारणों से अटके हुए कार्य बनने लगेंगे। अटका हुआ धन प्राप्त होगा। व्यावसायिक प्रयासों में उचित सफलता मिलेगी। व्यावसायिक वार्ता सफल रहेगी।

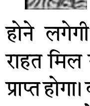

कुंभ
व्यावसायिक कार्यों से संबंधित परेशानियां दूर होने लगेगी। व्यावसायिक विवादों से राहत मिल सकती है। अटका हुआ धन प्राप्त होगा। वर्तमान में चल रहा मानसिक तनाव दूर होगा।

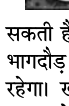

मीन
घर–गृहस्थी के खर्चों में अनावश्यक वृद्धि हो सकती है। पारिवारिक कार्यों के कारण भागदौड़ रहेगी। मन में असंतोष बना रहेगा। खान–पान के कारण स्वास्थ्य खराब हो सकता है।

जयपुर • कोटा • बीकानेर • उदयपुर • अजमेर • जालोर • हिण्डौनसिटी • चूरू

राष्ट्रदूत

epaper.rashtradoot.com

बीकानेर

Rashtradoot

फोनः- 2200660 फैक्स : 0151-2527371 वर्षः 46 संख्याः 298 प्रभात बीकानेर, बुधवार 21 मई, 2025 डाक प.स.बीकानेर/045/2020-22 पृष्ठ 8 मूल्य 2.50 रू.

नीतीश कुमार के दो पुराने व विश्वसनीय चेलों, प्रशांत किशोर व आर.सी.पी. सिंह ने हाथ मिलाया

दोनों चेलों ने नीतीश कुमार के ई.बी.सी. वोट बैंक (मुख्य रूप से कुर्मी वोट बैंक) में सेंध लगाने का लक्ष्य लेकर ही हाथ मिलाया है

- श्रीनन्द झा -
- राष्ट्रदूत दिल्ली ब्यूरो -

नई दिल्ली, 20 मई। राजनीति में कोई स्थाई दोस्त या दुश्मन नहीं होता। प्रशान्त किशोर तथा राम चन्द्र प्रसाद सिंह (आर सी पी सिंह), जो पहले कटु प्रतिद्वन्द्वी थे, ने अपने मतभेद समाप्त कर दिये हैं तथा जे डी यू नेता एवं बिहार के मुख्यमंत्री नीतीश कुमार के "इकॉनॉमिकली बैकवर्ड क्लास (ई बी सी) वोट बैंक (खासतौर से कुर्मी वोट बैंक) को तोड़ने के विचार ने उन्हें एक कर दिया है।

लगभग पांच माह बाद बिहार में विधानसभा चुनाव होने हैं। इस पृष्ठभूमि में, उनका एक होना यह प्रदर्शित करता है कि वे राज्य की राजनीति में भाजपा के नेतृत्व वाले एनडीए तथा आर जे डी के नेतृत्व वाले महागठबंधन के विरूद्ध तीसरे विकल्प के रूप में उभरना चाहते हैं। इस घटनाक्रम, अर्थात इस नज़दीकी को नीतीश कुमार के लिए चेतावनी की घंटी के रूप में लिया जाना चाहिए, क्योंकि आर सी पी और किशोर उनके निकटतम सहयोगी एवं सहायक रहे हैं

- **दोनों चेले, इस नये गठबंधन के सहारे बिहार में भाजपा के नेतृत्व वाले एन.डी.ए. व आर.जे.डी. के नेतृत्व वाले महागठबन्धन के बाद तीसरा स्तम्भ बनना चाहते हैं, बिहार की राजनीति में।**
- **यह घटनाक्रम नीतीश कुमार के लिए खतरे की घंटी है, क्योंकि दोनों चेले, किसी जमाने में नीतीश कुमार के सबसे मजबूत साथी थे, जिन्होंने चार बार नीतीश का ई.बी.सी. वोट बैंक गढ़ा था, और नीतीश की "सुशासन" की छवि बनाने में कामयाबी हासिल की थी।**
- **प्रशांत किशोर उस जमाने में जे.डी.यू. के उपाध्यक्ष थे, तथा उनके जे.डी.यू. छोड़ने का एक बड़ा कारण आर.सी.पी. सिंह थे।**
- **आर.सी.पी. सिंह व प्रशांत किशोर के बीच इतनी राजनीतिक प्रतिस्पर्धा थी, कि आर.सी.पी. सिंह ने प्रशांत किशोर पर तीखी टिप्पणी की थी कि, प्रशांत एक ऐसे राजनीतिज्ञ हैं, जिन्होंने बिहार के लिए कुछ नहीं किया।**

तथा उन्होंने जे डी यू के लिए ई बी सी वोट बैंक बनाने में बहुत मदद की है। यही नहीं, इन दोनों ने नीतीश कुमार की "सुशासन" व्यक्ति की छवि भी बनाई है। आर सी पी मुख्यमंत्री कुमार की तरह "कुर्मी" ही हैं तथा दोनों ही नालन्दा से है। एक समय, आर सी पी, जे डी यू में सर्वाधिक शक्तिशाली नेता माने जाते थे और, कुछ समय तक पार्टी अध्यक्ष भी रहे हैं, फिर उनके नीतीश से मतभेद हो गए। इसी प्रकार, प्रशान्त किशोर एक समय जे डी यू के उपाध्यक्ष थे तथा उनके जे डी यू को छोड़ने का एक कारण आर सी पी के साथ उनकी प्रचंड प्रतिद्वन्द्विता भी बताई जाती है। उस समय आर सी पी ने किशोर का अपमान करते हुए, उन्हें एक ऐसा व्यक्ति बताया था, "जिसका बिहार के लिए कोई योगदान नहीं है।"

पर रविवार के दिन, उनकी सारी पुरानी शत्रुता और प्रतिद्वन्द्विता पीछे छूट गई तथा सिंह ने घोषणा की कि वे किशोर की "जन सुराज पार्टी (जे एस पी) में अपनी अल्पज्ञात पार्टी "आप सबकी आवाज" का विलय कर रहे हैं।

पर्यवेक्षकों का कहना है, "आर सी पी के जे एस पी में आने से कुर्मी मतदाताओं में जे एस पी की संभावनाएं तो काफी बढ़ ही जायेंगी, इसके साथ ही, ऐसे समय पर, जब किशोर सारे समुदायों को मिलाकर एक सामाजिक संयोजन की स्थिति लाने की कोशिश कर रहे हैं, आर सी पी की संगठनात्मक क्षमताओं से उन्हें

(शेष अंतिम पृष्ठ पर)

हाईकोर्ट ने परकोटे के 19 भवनों की पालना रिपोर्ट मांगी

जयपुर, 20 मई। राजस्थान हाईकोर्ट ने शहर की चारदीवारी के आवासीय इलाके में व्यावसायिक गतिविधियों के चलते अवैध तौर पर चिन्हित किए 19 भवनों के मामले में राज्य सरकार को 25 फरवरी के आदेश की पालना के लिए 7 जुलाई तक का समय दिया है। जस्टिस इन्द्रजीत सिंह व आनंद शर्मा की खंडपीठ ने ये आदेश मामले में लिए गए स्वप्रेरित प्रसंज्ञान में भवन मालिकों की ओर से दिए प्रार्थना पत्र पर सुनवाई करते हुए दिए।

सुनवाई के दौरान, राज्य सरकार के एएजी जीएस गिल ने कहा कि 19 भवन

- **जयपुर की चारदीवारी के आवासीय इलाके में व्यावसायिक गतिविधियों के लिए चिन्हित 19 भवनों के मामले में 25 फरवरी को आदेश दिया था।**

मालिकों में से अभी 10 का ही पक्ष सुन पाए हैं और 9 भवन मालिकों का पक्ष जानना बाकी है। इसलिए अदालत राज्य सरकार को तीन महीने का समय दे। इसका विरोध करते हुए न्याय मित्र शोभित तिवाड़ी ने कहा कि पालना रिपोर्ट के लिए तीन महीने का समय ज्यादा है। इस दौरान मामले से जुड़े सीनियर एडवोकेट विमल चौधरी ने कहा कि प्रभावितों ने अदालत से तथ्य छिपाए हैं और सुप्रीम कोर्ट में उनकी

(शेष अंतिम पृष्ठ पर)

'ऑपरेशन सिन्दूर की जानकारियां विदेशी सरकार से साझा की जा रही हैं पर संसद में नहीं'

सी.पी.आई. के नेता डी. राजा ने कहा कि, भारत सरकार की ऑपरेशन सिन्दूर के बारे में सांसदों की यह अवहेलना हमें स्वीकार नहीं है

-डॉ. सतीश मिश्रा-
-राष्ट्रदूत दिल्ली ब्यूरो-

नई दिल्ली, 20 मई। भारतीय कम्युनिस्ट पार्टी (सीपीआई) के महासचिव डी. राजा ने आज एक महत्वपूर्ण बयान में कहा कि ऑपरेशन सिंदूर के मामले में विदेशी सरकारों को जानकारी दी जा रही है, जबकि भारतीय जनता "अंधेरे में रखी गई है", यह कदापि स्वीकार्य नहीं है।

सीपीआई महासचिव ने कहा कि, हालाँकि विपक्ष "ऑपरेशन सिंदूर" पर संसद का विशेष सत्र बुलाने की मांग कर रहा है, पर, सरकार को जनता द्वारा चुनी गई संसद की कोई परवाह नहीं है। ऑपरेशन सिंदूर के बाद सरकार ने संयुक्त राष्ट्र सुरक्षा परिषद (यूएनएससी) के सदस्य देशों सहित प्रमुख देशों में बहुदलीय प्रतिनिधिमंडली भेजने का जो निर्णय लिया है, उसमें पारदर्शिता का अभाव है तथा अधिकांश को इससे बाहर रखा गया "अपारदर्शिता" और "बहिष्करण" से भरा है, उन्होंने कहा।

उन्होंने कहा कि राजनीतिक दलों से इस मुद्दे पर न तो कोई सलाह ली गई और न ही उन्हें जानकारी दी गई, और इन

- **डी. राजा ने यह भी कहा कि देश के राजनीतिक दल कई बार यह मांग कर चुके हैं कि संसद का विशेष सत्र आहूत कर सरकार ऑपरेशन सिन्दूर के बारे में जानकारी दे। सांसद सेना के इस "युद्ध" के बारे में अनुभवों को जानना चाहते हैं। भारत सरकार ये अनुभव विदेशी राष्ट्रों से शेयर करने को तो लालायित है, पर सांसदों को इस बारे में कुछ साझा क्यों नहीं करना चाहती है।**

प्रतिनिधिमंडलों का क्या उद्देश्य है, इस पर भी "कोई स्पष्टता नहीं" है।

उन्होंने एक्स पर लिखा, "यह अस्वीकार्य है कि विदेशी सरकारों को जानकारी दी जाए जबकि भारत की अपनी संसद और जनता को अंधेरे में रखा जाए।"

कांग्रेस सहित कई विपक्षी दल "ऑपरेशन सिंदूर" पर संसद का विशेष सत्र बुलाने की मांग कर रहे हैं, यह ऑपरेशन पहलगाम हमले के बाद शुरू किया गया था।

ऑपरेशन सिंदूर पर एक पोस्ट को लेकर अशोका विश्वविद्यालय के एक प्रोफेसर की हालिया गिरफ्तारी का मुद्दा उठाते हुए, सीपीआई नेता ने इसे असहमति की आवाज को दबाने का प्रयास बताया।

राजा ने भारत और पाकिस्तान के बीच युद्धविराम की शर्तों को लेकर बढ़ रहे भ्रम और अमेरिका के राष्ट्रपति डॉनल्ड ट्रंप की भूमिका पर भी सरकार से स्पष्टीकरण मांगा, "जिन्होंने गैरजिम्मेदाराना ढंग से परमाणु संघर्ष का संकेत दिया था।" उन्होंने कहा, "चौंकाने वाली बात यह है कि सरकार ने अभी तक उनके दावों का स्पष्ट रूप से खंडन या निंदा नहीं की है। यह संसद की एक समिति के सामने विदेश सचिव द्वारा दिए गए कथित बयान से एकदम उलट है, जिसमें कहा गया था कि दोनों पक्षों ने पारंपरिक युद्ध का इस्तेमाल किया था।"

अब नये फ्रैश वकील सीधे ही जुडीशिएरी सर्विस के इम्तिहान में नहीं बैठ पायेंगे

सुप्रीम कोर्ट ने एक आदेश पारित कर यह व्यवस्था बिठाई है, कि, अनिवार्य रूप से एक फ्रेश ग्रैजुएट को कम से कम तीन साल लॉ की प्रेक्टिस करने का अनुभव होना जरुरी होगा, "जुडीशिएरी" एन्ट्री लैवल की परीक्षा में बैठने से पहले

-जाल खंबाता-
-राष्ट्रदूत दिल्ली ब्यूरो-

नई दिल्ली, 20 मई। सुप्रीम कोर्ट ने मंगलवार को फैसला सुनाया कि न्यायिक सेवा में आवेदन करने वाले अभ्यर्थियों को कम से कम तीन साल की वकालत का अनुभव होना अनिवार्य होगा। इस निर्णय के बाद अब ताजा लॉ ग्रैजुएट सीधे न्यायिक सेवा की परीक्षा में शामिल नहीं हो सकेंगे।

यह फैसला न्यायिक सेवा में करियर की तैयारी कर रहे छात्रों पर व्यापक प्रभाव डालेगा। मुख्य न्यायाधीश बी. आर. गवई की अध्यक्षता वाली पीठ ने कहा कि भावी न्यायाधीशों के लिए व्यावहारिक अनुभव अत्यंत आवश्यक है। मुख्य न्यायाधीश ने यह भी टिप्पणी की कि लॉ ग्रैजुएट्स की सीधी नियुक्तियों से कई समस्याएं उत्पन्न हुई हैं, जिनकी ओर विभिन्न उच्च न्यायालयों ने ध्यान दिलाया है। उन्होंने कहा कि कोर्ट रूम में व्यावसायिक अभ्यास से मिलने वाला अनुभव न्यायिक प्रक्रिया की दक्षता और गुणवत्ता के लिए अत्यंत जरूरी है।

इस फैसले के अनुसार, सिविल जज (कनिष्ठ श्रेणी) पद की परीक्षा में शामिल होने के लिए अब न्यूनतम तीन वर्ष की वकालत आवश्यक होगी। यह निर्णय अखिल भारतीय न्यायाधीश संघ (ऑल इण्डिया जजेज़ एसोसिएशन) द्वारा दायर एक याचिका के जवाब में सुनाया गया। मुख्य न्यायाधीश ने कहा कि नए कानून स्नातकों की सीधी भर्ती से व्यावहारिक समस्याएं पैदा हुई हैं, जो कि विभिन्न उच्च न्यायालयों की रिपोर्टों में सामने आई हैं। कोर्ट ने यह भी स्पष्ट किया कि यह तीन साल की अवधि प्रोविज़नल एनरोलमेंट (अस्थायी पंजीकरण) की तारीख से गिनी जाएगी।

तथापि, यह नई शर्त उन भर्तियों पर लागू नहीं होगी, जो इस निर्णय की तारीख से पहले उच्च न्यायालयों द्वारा शुरू की जा चुकी हैं। यह नियम केवल भविष्य की भर्तियों पर लागू होगा।

यह फैसला मुख्य न्यायाधीश बी. आर. गवई, न्यायमूर्ति ए. जी. मसीह और न्यायमूर्ति के. विनोद चंद्रन की पीठ ने सुनाया। इस निर्णय में सीमित विभागीय प्रतियोगी परीक्षा (लिमिटेड डिपार्टमैंटल कॉम्पटिटिव एग्ज़ामिनेशन) के अंतर्गत पदोन्नति को लेकर भी निर्देश शामिल हैं।

सिरसी रोड बायपास से झारखंड मोड़ तक अतिक्रमण कब हटेगा

जयपुर, 20 मई। राजस्थान हाईकोर्ट ने 200 फीट सिरसी रोड बाईपास से झारखंड मोड़ के बीच शेष बचे अतिक्रमणों को हटाने की जानकारी मांगी है। अदालत ने जेडीए से 23 मई तक बताने को कहा है कि शेष बचे दस फीसदी अतिक्रमणों को कब और कैसे हटाया जाएगा। इसके साथ ही, अदालत ने मामले में जेडीए से तथ्यात्मक रिपोर्ट पेश करने को कहा है। जस्टिस इन्द्रजीत सिंह व जस्टिस आनंद शर्मा की खंडपीठ ने यह आदेश विजय कुमार की

- **हाईकोर्ट ने जेडीए से 23 मई तक बताने को कहा।**

अवमानना याचिका पर दिया।

सुनवाई के दौरान, अदालत ने जेडीए के अधिवक्ता अमित कुडी से पूछा कि मामले में अब तक क्या कार्रवाई हुई है। इस पर जेडीए की ओर से कहा गया कि मौके से 90 फीसदी अतिक्रमणों को हटा दिया है। वहीं, 9 अप्रैल को कार्रवाई के दौरान जेडीए को अत्यधिक विरोध का सामना करना पड़ा था। ऐसे में कार्रवाई को आगे टालने का निर्णय लिया था। इस मामले में जेडीए

(शेष अंतिम पृष्ठ पर)

कांग्रेस ने "ऑपरेशन सिन्दूर" पर भाजपा सरकार को घेरने का पूरा प्रयास किया

-डॉ. सतीश मिश्रा-
-राष्ट्रदूत दिल्ली ब्यूरो-

नई दिल्ली, 20 मई - 'ऑपरेशन सिंदूर' से निपटने को लेकर मोदी सरकार आज तीव्र आलोचना के घेरे में आ गई, जब कांग्रेस नेता पवन खेड़ा ने केन्द्र पर नया हमला बोलते हुए, उसे भारत-पाकिस्तान तनाव के बीच लापरवाह रवैया और "भारी कूटनीतिक भूल" का दोषी ठहराया।

कांग्रेस के संचार और प्रचार विभाग के अध्यक्ष खेड़ा ने एक्स पर एक विस्तृत बयान पोस्ट कर कई तीखे सवाल उठाए और इस मुद्दे पर सभी दलों की बैठक तथा संसद का विशेष सत्र बुलाने की मांग की।

खेड़ा ने लिखा, "ऐसे समय में, जब पूरा देश शोक में डूबा है और हमारी सीमाओं पर गंभीर सुरक्षा तनाव है, सत्ताधारी भाजपा ने चौंकाने वाली अपरिपक्वता और लापरवाही दिखाई।"

खेड़ा ने आगे कहा, "हम एक जिम्मेदार विपक्ष के रूप में हमेशा अपनी सेना के साथ मजबूती से खड़े रहे हैं, लेकिन जब सरकार उन नागरिकों की ही सुरक्षा में असफल रहती है, जिनकी रक्षा की उसने शपथ ली है, तब हम चुप नहीं रह सकते।"

- **कांग्रेस के अनुसार प्र.मंत्री ने गत ग्यारह साल में 151 विदेश यात्राएं कीं, 72 देश गये, जिनमें अमेरिका की दस यात्राएं भी शामिल हैं, पर आतंकवादी हमले के सन्दर्भ में भारत के पक्ष में खड़ा होने के लिए कोई देश तैयार नहीं हुआ।**
- **आई.एम.एफ. ने पाकिस्तान को 1.4 बिलियन डॉलर की सहायता का पैकेज देना स्वीकार किया, लेकिन, यह जानते हुए कि इस रकम का उपयोग पाकिस्तान आतंकवादियों को तैयार करने पर खर्च करेगा, भारत यह पैकेज नहीं रुकवा सका।**
- **बार-बार ट्रम्प दावा कर रहे हैं, कि उन्होंने मध्यस्थता कर भारत-पाक के बीच सीज़ फायर करवाई, पर भारत अनर्गल बयानबाजी का भी प्रभावी ढंग से जवाब नहीं दे पाया।**
- **इसी प्रकार, विदेश मंत्री की यह स्वीकारोक्ति, कि उन्होंने पाकिस्तान पर हवाई बमबारी करने से पहले पाकिस्तान को पूर्व सूचना दी, एक बहुत गैर जिम्मेदाराना हरकत थी।**

खेड़ा द्वारा उठाए गए प्रमुख सवालों में शामिल थे: ऑपरेशन से पहले पाकिस्तान को जानकारी क्यों दी गई, जबकि भारत के संवेदनशील क्षेत्रों जैसे पूंछ में नागरिकों को कोई सूचना नहीं दी गई? क्या इस चेतावनी ने मसूद अजहर और हाफिज सईद जैसे आतंकियों को भागने में मदद की? कितने आतंकी भागे और इससे भारत की राष्ट्रीय सुरक्षा को कितना नुकसान हुआ?

कांग्रेस, सरकार द्वारा ऑपरेशन सिंदूर के बाद अचानक युद्धविराम की घोषणा के बाद से ही लगातार इस मुद्दे पर हमलावर है। यह सैन्य कार्रवाई 22 अप्रैल को पहलगाम में हुए आतंकवादी हमले के जवाब में शुरू की गई थी, जिसमें 26 नागरिक मारे गए थे

कांग्रेस अध्यक्ष मल्लिकार्जुन खड़गे ने भी खेड़ा के सवालों को दोहराते हुए एक्स पर लिखा कि प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी की लगातार विदेश यात्राओं के बावजूद, भारत अंतरराष्ट्रीय मंच पर अलग-थलग पड़ा है।

उन्होंने कहा, "पिछले 11 वर्षों में प्रधानमंत्री मोदी ने 151 विदेशी दौरे किए और वे 72 देशों में गए, जिनमें अमेरिका की 10 यात्राएँ शामिल हैं। फिर भी जब भारत को पाकिस्तान की सीमा-पार आतंकवाद में भूमिका उजागर करने के लिए वैश्विक समर्थन की आवश्यकता थी, तब कोई भी देश हमारे साथ खड़ा नहीं हुआ।"

उन्होंने पाकिस्तान को दिए गए 1.4 अरब डॉलर के राहत पैकेज को भारतीय

(शेष अंतिम पृष्ठ पर)

अटारी बॉर्डर पर12 दिन बाद रिट्रीट सैरमनी

अमृतसर, 20 मई। पहलगाम हमले का बदला लेने के लिए भारत की तरफ से ऑपरेशन सिंदूर चलाया गया। ऑपरेशन सिंदूर से बौखलाए पाकिस्तान ने भारत के साथ युद्ध जैसे हालात पैदा किए। दोनों देशों के बीच तनाव के चलते अमृतसर के अटारी-वाघा बॉर्डर पर रिट्रीट सेरेमनी बंद कर दी गई थी। अब हालात सामान्य होने पर मंगलवार को अटारी बॉर्डर पर रिट्रीट सेरेमनी एक बार फिर से शुरू कर दी गई। हालांकि पहले दिन रिट्रीट देखने जाने वाले लोगों की

- **हालांकि दोनों ओर के गेट नहीं खोले गये, पर भारत की तरफ बड़ी संख्या में पर्यटक मौजूद थे, जिन्होंने भारत माता की जय के नारे लगाए।**

संख्या एक हजार से 1500 के बीच रही।

अटारी बॉर्डर पर पहुंचे सैलानियों की ओर से वंदे मातरम और भारत माता की जय के नारे लगाए गए। वहीं सेरेमनी के दौरान बीएसएफ की ओर से गेट पूरी तरह से बंद रखे गए। रिट्रीट सेरेमनी के दौरान सैलानियों ने बीएसएफ जवानों का हौसला बढ़ाया। ऑपरेशन सिंदूर के बाद सात मई से रिट्रीट सेरेमनी बंद कर दी गई थी। रिट्रीट सेरेमनी शुरू हो जाने पर जहां

(शेष अंतिम पृष्ठ पर)

सुप्रीम कोर्ट ने मध्यप्रदेश के मंत्री के खिलाफ "एस.आई.टी." गठित करवाई

मंत्री ने सेना अधिकारी सोफिया कुरैशी के खिलाफ बड़ी भद्दी टिप्पणी की थी

-जाल खंबाता-
-राष्ट्रदूत दिल्ली ब्यूरो-

नई दिल्ली, 20 मई। सुप्रीम कोर्ट ने सोमवार को मध्य प्रदेश के कैबिनेट मंत्री कुँवर विजय शाह द्वारा कर्नल सोफिया कुरैशी, जिन्होंने हाल ही में ऑपरेशन सिंदूर के बारे में मीडिया को ब्रीफ किया था, के खिलाफ की गई "घिनौनी, असभ्य और शर्मनाक" टिप्पणी को लेकर कड़ी आपत्ति जताई और मंत्री के खिलाफ दर्ज एफआईआर की जाँच के लिये स्पेशल इन्वैस्टिगेशन टीम (एसआईटी) गठित करने का आदेश दिया।

न्यायमूर्ति सूर्यकांत और न्यायमूर्ति एन कोटिश्वर सिंह की बैंच ने टिप्पणी करते हुए कहा, "देश आप पर शर्मसार है", और मध्य प्रदेश के पुलिस महानिदेशक को 20 मई तक एसआईटी गठित करने का निर्देश दिया। इस टीम में राज्य कैडर के तीन वरिष्ठ आईपीएस अधिकारी शामिल होंगे, लेकिन कोई भी अधिकारी मध्यप्रदेश का मूल निवासी नहीं होगा। साथ ही, टीम में कम से कम एक महिला अधिकारी अनिवार्य रूप से होनी चाहिए और टीम का नेतृत्व कम से कम इंस्पेक्टर जनरल या डीजीपी रैंक के अधिकारी को करना होगा।

कोर्ट ने यह भी कहा कि यह एक "अग्निपरीक्षा" है और "हम चाहते हैं कि राज्य इस एसआईटी की रिपोर्ट हमें सौंपे। हम इस मामले पर कड़ी नज़र रखेंगे।"

हालाँकि कोर्ट ने फिलहाल शाह की गिरफ्तारी पर रोक लगा दी है, लेकिन यह भी स्पष्ट किया कि उन्हें जांच में सहयोग देना होगा। सुप्रीम कोर्ट ने हालांकि स्पष्ट किया कि वह जांच की निगरानी नहीं

- **कर्नल सोफिया कुरैशी ने बड़ी सौम्यता व गम्भीरता से ऑपरेशन सिन्दूर के बारे में सेना की ओर से ब्रीफिंग की।**
- **सुप्रीम कोर्ट ने मंत्री पर बहुत सख्त टिप्पणी की ओर कहा, मंत्री ने घटना पर जो टिप्पणी की उसमें "सच्चाई" तक नहीं थी और मंत्री द्वारा खेद व्यक्त करना केवल एक औपचारिकता ही थी।**
- **कोर्ट के आदेश से अब तीन सदस्यीय एस.आई.टी. गठित होगी। जिसमें तीन वरिष्ठ पुलिस अधिकारी तथा कम से कम एक महिला पुलिस अधिकारी भी शामिल होगी तथा एस.आई.टी. का नेतृत्व एक आई.जी. व डी.जी.पी. रैंक का पुलिस अधिकारी करेगा।**

करेगा, लेकिन जांच की प्रगति पर करीबी नज़र रखेगा और एसआईटी को 28 मई तक स्टेटस रिपोर्ट दाखिल करने का आदेश दिया

शाह की सार्वजनिक माफी को "बनावटी" करार देकर को खारिज करते हुए न्यायमूर्ति सूर्यकांत ने तीखी टिप्पणी की:

"देश को आप पर शर्म आती है। आपको पश्चाताप करना चाहिए। यह किस तरह की माफी है? लोग कई बार माफी मांगते हैं, ताकि वे कानूनी जिम्मेदारी से बच सकें। कई बार मगरमच्छी आंसू भी बहाते हैं। मगर आपकी माफी में कोई सच्चाई नहीं है।"

बैंच ने कहा, किसने आपको गंभीर कोशिश करने से रोका है। "आपने कहा, "अगर किसी को ठेस पहुँची हो"... आप तो जिम्मेदारी लेने को भी तैयार नहीं हैं। हमें आपकी माफी की जरूरत नहीं है। हम जानते हैं कि कानून के अनुसार कैसे निपटना है।"

कोर्ट ने कहा कि एक अनुभवी राजनेता और सार्वजनिक पद पर होने के नाते शाह को अपने शब्दों का वजन समझना चाहिए था। "आपने असभ्य बातें कीं, बिना सोचे-समझे। जनता की भावनाओं को बुरी तरह आहत किया। अब आप पूरी तरह जनता के सामने बेनकाब हो गए हैं।"

इसके अलावा, कोर्ट ने राज्य पुलिस की निष्क्रियता और एफआईआर के शुरुआती कमज़ोर स्वरूप पर भी नाराज़गी जताई और कहा, "आपने क्या किया? जब हाई कोर्ट को खुद एफआईआर दोबारा लिखनी पड़ी, तो आपने अब तक क्या किया? क्या यह जांच की गई कि इसमें कोई संज्ञेय अपराध है? राज्य से अपेक्षा की जाती है कि वह निष्पक्ष कार्रवाई करेगा।" हाई कोर्ट ने अपनी जिम्मेवारी निभाई। उन्हें

(शेष अंतिम पृष्ठ पर)

अधीक्षण अभियंता का ऑफिस सील हो और वह बाहर बैठकर काम करें

जयपुर, 20 मई। राजस्थान हाईकोर्ट ने पीएचईडी की जनता जल योजना में कार्यरत रहे पंप चालकों को अदालती आदेश के बावजूद भी न्यूनतम वेतन नहीं देने पर कड़ा रुख अपनाया है।

- **हाईकोर्ट ने सीकर डीजे को पी.एच. ई. डी. अधीक्षण अभियंता के बारे में निर्देश दिये।**
- **पंप चालकों के न्यूनतम वेतन के संबंध में अदालत ने 2020 में आदेश दिये थे, जिनकी आज तक पालना नहीं हुई।**

अदालत ने कहा कि ऐसा लगता है कि अधीक्षक अभियंता, सीकर सर्किल ने अदालती आदेश की जानबूझकर

(शेष अंतिम पृष्ठ पर)

बीकानेर में पीएम मोदी की सभा में करीब एक लाख लोगों के आने की संभावना

भाजपा प्रदेश अध्यक्ष मदन राठौड़ ने बताया कि सभा में एक लाख के करीब लोग शामिल होंगे

■ ऑपरेशन सिंदूर की सफलता के बाद प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी पहली बार बीकानेर में आमसभा को संबोधित करेंगे

बीकानेर, (कासं)। ऑपरेशन सिंदूर की सफलता के बाद प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी पहली बार बीकानेर में आमसभा को संबोधित करेंगे। साथ ही देशनोक सहित देशभर के सौ से ज्यादा रेलवे स्टेशनों के नवीनीकरण का लोकार्पण करेंगे। भारतीय जनता पार्टी संभाग कार्यालय में आायोजित पत्रकार वार्ता में जानकारी देते हुए भाजपा प्रदेश अध्यक्ष मदन राठौड़ ने बताया कि सभा में एक लाख के करीब लोग शामिल होंगे। राठौड़ ने बताया कि ऑपरेशन सिंदूर में हमारे सैन्य बलों के शौर्य वीरता का परिचय देते हुए दुश्मन देश पाकिस्तान की धरती पर जो आतंकी कैंपों को ध्वस्त कर 100 से ज्यादा आतंकियों को मार गिराया, पाकिस्तान में गैर जिम्मेदाराना हरकत हुए हमारे नागरिकों को निशाना बनाने का असफल प्रयास किया। इस ऑपरेशन सिंदूर में हमारे सैन्य बलों के साथ-साथ नागरिकों के जोश राष्ट्रीय भक्ति की भावना का जो परिचय दिया वह अपने आप में ऐतिहासिक है। सेना ने पाकिस्तान की 12 एयरबेस को तबाह किया। कई सैन्य ठिकानों को तबाह किया जहां से आतंकी संगठनों को सहयोग, आतंकी गति विधियों का संचालन किया जाता था।

भाजपा संभाग कार्यालय में भाजपा प्रदेशाध्यक्ष मदन राठौड़ व केन्द्रीय मंत्री अर्जुनराम मेघवाल ने पत्रकार वार्ता को संबोधित किया।

ऑपरेशन सिंदूर में अहम भूमिका निभाने वाली मुस्लिम सैन्य अधिकारी पर मध्यप्रदेश के मंत्री द्वारा दिए गये विवादित बयान पर पूछे गये प्रश्न का गोलमोल जबाब देते हुए भाजपा प्रदेश अध्यक्ष मदन राठौड़ ने कहा कि भाजपा धर्म के आधार पर भेदभाव की अनुशासनहीनता का बर्दाश्त नहीं करती है। इस प्रकार की बयानबाजी पर पार्टी ने नाराजगी जताई है। हमने उनका सम्मान नहीं किया बल्कि प्रताड़ित किया। किन्तु उन्हें पद से नहीं हटाने पर जबाब देने से बचते दिखे। साथ ही तिरंगा यात्रा के दौरान जयपुर विधायक व बीकानेर विधायक द्वारा तिरंगे के अपमान पर बचाव करते नजर आए।

राठौड़ द्वारा स्थानीय विधायकों व कार्यकर्ताओं की सुनवाई नहीं होने पर पूछे सवाल का जबाब देते हुए डेढ़ साल में किये गये कार्यों का गुणगान जरूर किया पर इनकी सुनवाई नहीं होने पर संतोषजनक जबाब नहीं दे पाए। बीकानेर शहर व देहात कार्यकारिणी के गठन में हो रहे विलम्ब पर पार्टी संविधान का हवाला देते हुए जल्द गठन के संकेत दिए। फाइटर प्लेन पर राहुल गांधी के सवाल पर राठौड़ ने कहा कि राहुल किसी विषय पर तैयारी ही नहीं करते।

डोटासरा के इस्तीफे पर राठौड़ ने कहा कि उनका व्यवहार कैसा है, किसी से छिपा नहीं है। वे सदन से बहिष्कृत किये जा चुके हैं। पत्रकार वार्ता के दौरान केन्द्रीय मंत्री अर्जुनराम मेघवाल, राजस्थान किसान आयोग बोर्ड के अध्यक्ष सी. आर. चौधरी, प्रदेश उपाध्यक्ष मुकेश दाधीच, शहर जिलाध्यक्ष सुमन छाजेड़, देहात जिलाध्यक्ष श्याम पंचारिया, संगठन प्रभारी दशरथ सिंह शेखावत, ओम सारस्वत, प्रदेश मंत्री विजेंद्र पूनिया, मनीष सोनी, मुकेश आचार्य, विक्रम सिंह राजपुरोहित, देवीलाल मेघवाल, पवन स्वामी आदि उपस्थित थे।

कार और वैन की टक्कर में दो की मौत, पांच घायल

पाली, (नि.सं.)। पाली में बेकाबू अल्टो कार और वैन में आमने-सामने की भिड़ंत हो गई। हादसे में दो लोगों की मौत हो गई। वहीं पांच जने घायल हो गए। टक्कर इतनी भीषण थी कि दोनों गाड़ियां बुरी तरह डैमेज हो गई। लोगों ने कड़ी मशक्कत के बाद वैन और कार में फंसे घायलों को निकालकर अस्पताल भिजवाया। हादसा रानी थाने के वारकाना इलाके के रानी-नाडोल रोड पर हुआ। हादसे में घायल बच्ची बिलखते हुए पानी मांगती रही।

रानी थाना प्रभारी पन्नालाल ने बताया कि वारकाना के पास मंगलवार दोपहर 12 बजे दो गाड़ियों में आमने-सामने की टक्कर हो गई। हादसे में कार सवार जालोर के शंखवाली गांव निवासी रूप सिंह (50) और गुड़ा एंदला निवासी कूकाराम (60) की मौत हो गई। वहीं, राजू सिंह गंभीर घायल है, जिसे जोधपुर रेफर किया है। वैन सवार गुड़ा केसर सिंह निवासी देवी कंवर (50), उनका बेटा युगवीर (13), बेटी अक्षिता (10) और ड्राइवर वीराराम (50) घायल हो गए। उनका पाली के बांगड़ अस्पताल में इलाज चल रहा है। कार में सवार चाचा-भतीजा रूप सिंह और राजू सिंह घर में धार्मिक आयोजन के लिए कूकाराम को लेने आए थे। तीनों जालोर की तरफ जा रहे थे। कूकाराम की मौत की सूचना मिलने पर उनके परिजन हॉस्पिटल पहुंचे।

बच्ची से दुष्कर्म, दो गिरफ्तार

बीकानेर, (निसं)। फैक्टरी में काम करने वाले श्रमिक परिवार की 10 साल की बच्ची से दो पड़ोसियों ने दुष्कर्म किया। पुलिस ने आरोपियों को गिरफ्तार कर लिया है। मुक्ताप्रसाद थाना पुलिस को दी गई रिपोर्ट में बताया गया है कि फैक्टरी में काम करने वाला श्रमिक परिवार थाना क्षेत्र में रहता है। पति-पत्नी काम पर चले जाते थे और 10 साल की बच्ची घर पर अकेली रहती थी। इस दौरान पड़ोस में रहने वाले पश्चिम बंगाल निवासी नरेश प्रधान और रिंकू बर्मन बच्ची को डरा-धमकाकर उससे दुष्कर्म करते थे। मामले की जांच कर रहे सीओ सिटी श्रवणदास संत ने बताया कि अभियुक्त नरेश श्रमिकों को बंगाल से लाकर बीकानेर की फैक्ट्रियों में काम दिलाता है। पीड़िता के माता-पिता को भी फैक्टरी में मजदूरी पर लगवाया इसलिए उसका घर आना-जाना था।

RAJASTHAN STATE GANGANAGAR SUGAR MILLS LIMITED
(Centre of Excellence for Revenue Research & Analysis) तृतीय मंजिल, अरण्य भवन के पास, झालाना डूंगरी, जयपुर-302004
Tel: 0141-2740841, Fax: 0141-2740676, Email-ID : dgmpurchase.rsgsm@rajasthan.gov.in

NIB. No. RSGSM/GP/RC/2025-26/PUR/07 Dated :- 19/05/2025

SHORT E-BIDS NOTICE

Bids for gum paste are invited from interested bidders up to 6.00 p.m. of 02.06.2025. Other particulars of the bid may be visited on the procurement portal **(http://eproc.rajasthan.gov.in and http://sppp.rajasthan.gov.in)** of the state.

UBN: GSM2526GLRC00018

Raj.Samwad/C/25/2599 Dy. General Manager (Purchase)

कार्यालय नगर पालिका राजगढ़ (चूरू) (राज०)

क्रमांक :— 1126 दिनांक :— 15.05.2025

Notice Inviting Bid

Bids for FIRM/CONT./COMPNY are invited from interested bidders upto 09:30 AM (time) 15-05-2025 (date). Other particulars of the bid may be visited on the procurement portal (http://eproc.rajasthan.gov.in, http://sppp.raj.nic.in) of the state website. The approximate value of the procurement in Rs 22.07 lacs

NIB Code-	UBN Code-
DLB2526A1321	DLB2526WSOB04831
DLB2526A1322	DLB2526SSOB04832

Executive Officer
Municipal Board
Rajgarh (Churu)

राज.संवाद / सी / 25 / 2673

अजमेर विकास प्राधिकरण, अजमेर
टोडरमल लेन, सिविल लाईन्स, अजमेर, Email :- ajmerada@gmail.com,
Website :- www.rajasthan.gov.in/ada, Tel.No. :- 0145-2627748-2627749

क्रमांक :- अविप्रा/प.2/तकनीकी/2025-26/15385163 दिनांक :- 19/05/2025

ई-निविदा सूचना संख्या 08/2025-26

अजमेर विकास प्राधिकरण, अजमेर की ओर से कार्य का नाम Supply, Assembly and installation of furniture at New office Building of ADA. राशि 236.00 लाख की ई—निविदा दिनांक 12.06.2025 सांय 06:00 बजे तक आमंत्रित की जाती है। निविदा से संबंधित समस्त विवरण वेबसाईट **(http:://eproc.rajasthan.gov.in)** एवं **(http:://sppp.raj.nic.in)** **http:://www.urban.rajasthan.gov.in/ada** पर देखा जा सकता है।

UBN No. : AJD2526GLOB00013

राज.संवाद/सी/25/2596 अधिशाषी अभियन्ता

राजस्थान सरकार
कार्यालय अधिशाषी अभियंता, चिकित्सा एवं स्वास्थ्य विभाग, खण्ड द्वितीय, जयपुर
सी-ब्लॉक, बेसमेन्ट, स्वास्थ्य भवन, तिलक मार्ग, सी-स्कीम, जयपुर-302005 (राज.),

क्रमांक:248 **ई-निविदा सूचना संख्याः 05/2025-26** दिनांक:9-5-25

राजस्थान के राज्यपाल महोदय की ओर से चिकित्सा एवं स्वास्थ्य विभाग के अन्तर्गत जयपुर खंड कार्यालय में 12 सिविल एवं 03 विद्युत कार्य हेतु कुल राशि रू. 680.15 लाख के उपयुक्त श्रेणी में सार्वजनिक निर्माण विभाग / राज्य सरकार / केन्द्र सरकार के अधिकृत संगठनों / केन्द्रीय लोक निर्माण विभाग / डाक एवं दूर संचार विभाग / रेल्वे इत्यादि में पंजीकृत अनुभवी संवेदकों, जो कि राजस्थान सरकार के उपयुक्त श्रेणी के संवेदकों के समकक्ष किसी भी श्रेणी में पंजीकृत अनुभवी संवेदकों से निर्धारित प्रपत्र में ई-प्रोक्यूरमेंट निविदायें आमंत्रित की जाती है। निविदा से सम्बन्धित विवरण DIPR की वेब साईट www.dipronline.Org. www.sppp.raj.nic.in. http://eproc.rajasthan.gov.in व विभागीय वेब साईट http://rajswasthya.nic.in पर देखा जा सकता है। अधिशाषी अभियन्ता चिकित्सा एवं स्वास्थ्य खण्ड द्वितीय, जयपुर
यू.बी.एन.न.- 1. MHS2526WSOB00920, 2. MHS2526WSOB00924, 3. MHS2526WSOB00927 4. MHS2526WSOB00928, 5. MHS2526WSOB00929, 6. MHS2526WSOB00931 7. MHS2526WSOB00932, 8. MHS2526WSOB00934, 9. MHS2526WSOB00935 10. MHS2526WSOB00936, 11. MHS2526WSOB00937, 12. MHS2526WSOB00939 13. MHS2526WSOB00941, 14. MHS2526WSOB00942, 15. MHS2526WSOB00943

अधिशाषी अभियन्ता
DIPR/C/6353/2025 चिकित्सा एवं स्वास्थ्य खण्ड द्वितीय, जयपुर

पावटा : विराटनगर नगर पालिका क्षेत्र के भीमसेन पहाड़ी क्षेत्र में एक पैंथर के 20 फीट गहरे सूखे कुएं में गिरने से इलाके में हड़कंप मच गया। घटना की जानकारी मिलते ही स्थानीय ग्रामीणों ने तुरंत वन विभाग को सूचित किया। सूचना मिलते ही क्षेत्रीय वन अधिकारी वीरेंद्र सिंह अपनी टीम के साथ मौके पर पहुंचे और रेस्क्यू ऑपरेशन शुरू किया। टीम सतर्कता और सूझबूझ के साथ कार्य करते हुए कुएं में एक सीढ़ी, रस्सियों की मदद से उतरी, ताकि पैंथर स्वयं ऊपर चढ़ सके। करीब दो घंटे चले रेस्क्यू ऑपरेशन के बाद पैंथर सुरक्षित रूप से कुएं से बाहर निकल आया। उसे किसी प्रकार की चोट नहीं आई और वह पास के पहाड़ी वन क्षेत्र की ओर चला गया।

रोडवेज बस और ट्रेलर की भिड़ंत, 13 से अधिक लोग घायल

सभी घायलों को एमडीएम अस्पताल में भर्ती कराया, तीन जनों की हालत गंभीर

जोधपुर, (कासं)। जोधपुर-नागौर हाइवे पर मंगलवार दोपहर एक रोडवेज बस और गलत दिशा में आए ट्रेलर की भिड़ंत हो गई। हादसे में 13 से अधिक लोग घायल हो गए। सभी घायलों को एमडीएम अस्पताल में भर्ती कराया गया है। तीन की स्थिति गंभीर बताई जा रही है।

करवड़ पुलिस ने बताया कि दोपहर साढ़े बारह बजे के करीब नागौर डिपो की बस गंगाराम प्याऊ इलाके में पहुंची थी, तभी सामने से रॉन्ग साइड में आ रहे ट्रेलर से टक्कर हो गई। प्रत्यक्षदर्शियों के अनुसार ट्रेलर चालक शराब के नशे में था। डीसीपी (ईस्ट) आलोक श्रीवास्तव के निर्देशन में पुलिस ने क्रेन से वाहनों को हटवाकर यातायात सुचारू कराया। एमडीएम अस्पताल अधीक्षक डॉ. विकास राजपुरोहित के नेतृत्व में मेडिकल टीम पहले से तैयार थी। घायलों में वीरेंद्र, जितेंद्र, इश्तियाक अहमद, यास्मीन, किस्तूर राम, झूमरू देवी, प्रियंका, जसोदा, नरेंद्र, भगवान राम, पप्पू देवी और पोकरराम सहित अन्य शामिल हैं। एमडीएमएच में भर्ती इश्तियाक अहमद ने बताया कि उनके परिवार के तीन सदस्य घायल हुए हैं, लेकिन अब खतरे से बाहर हैं। एक अन्य घायल जनू देवी, जो खींवसर से जोधपुर जा रही थी, के पैर में चोट आई है।

सड़क हादसे में मां-बेटे की मौत

गुडामालानी, (नि.सं.)। मुख्यालय के अहिंसा सर्किल मेगा हाइवे पर दर्दनाक सड़क हादसे में मां-बेटे की मौके पर मौत हो गई। वहीं पिता घायल हो गया। सूचना पर पुलिस ने मौके पर पहुंचकर 108 एंबुलेंस की सहायता से दोनों शवों को गुडामालानी सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र की मोर्चरी में रखवाया। अहिंसा सर्किल मेगा हाइवे पर मंगलवार सांय केसाराम पुत्र विरधाराम कलबी निवासी उद्दंडी जो अपनी पत्नी निर्मला देवी पुत्र मनमोहन के साथ मोटरसाइकिल पर गुडामालानी से अपने गांव जा रहे थे। इस दौरान अहिंसा सर्किल से थोड़ा सीनियर विद्यालय के पास पीछे आ रहे ट्रेलर चालक ने तेजगति एवं लापरवाही से चलाते हुए मोटरसाइकिल के टक्कर मारी दी। जिसमें केसाराम कलबी के मामूली चोंट आई। वहीं निर्मला देवी, उसका सात वर्षीय पुत्र मनमोहन टायर के निचे आने से दोनों की मौत हो गई।

राजस्थान राज्य वन विकास निगम लिमिटेड
कार्यालय महाप्रबंधक, क्षेत्रीय कार्यालय जयपुर अरावली भवन,संस्थानिक क्षेत्र झालाना डूंगरी जयपुर-302004

क्रमांक :- एफ3( )विकास/RSFDCLROJ/2025-26/ दिनांक :- 01/05/2025

खुली बोली नीलामी सूचना (UBN Code : FOR2526WSOB00104)

महाप्रबंधक, राजस्थान राज्य वन विकास निगम लिमिटेड, जयपुर के क्षेत्राधीन प्रादेशिक वनमण्डल, जयपुर की रेंज फागी के वनखण्ड झाराना बीड के वृक्षारोपण क्षेत्र में मौजूद वनोपज प्रोसोपिस जूलीफ्लोरा (विलायती बबूल) को जड़ सहित उन्मूलन हेतु दिनांक 21/05/2025 को 1.00 बजे तक खुली बोली नीलामी की जानी है। नीलामी की अनुमानित कीमत 100 लाख रूपये है। खुली बोली नीलामी से संबंधित अन्य विस्तृत दस्तावेज एवं शर्ते राज्य लोक उपापन पोर्टल की बेवसाईट **sppp.raj.nic.in** अथवा निगम की वेबसाईट **http://forest.rajasthan.gov.in** से देखे जा सकते है।

UBN : FOR2526WSOB00104

महाप्रबंधक
राजस्थान राज्य वन विकास निगम लिमिटेड
क्षेत्रीय कार्यालय, जयपुर

राज.संवाद/सी/25/2612

श्रीगंगानगर में 46.3, पिलानी में 45.9 डिग्री पहुंचा तापमान

शेखावाटी में लगातार तीसरे दिन पिलानी सबसे गर्म रहा

■ सीकर में 42 तथा चूरू में 45.6 डिग्री तापमान दर्ज किया

झुंझुनूं, (निसं)। लगातार तीसरे दिन मंगलवार को भी झुंझुनूं का पिलानी शेखावाटी में सबसे गर्म जगह रही। सीकर और चूरू से ज्यादा तापमान पिलानी का रहा। वहीं पिछले दो दिन से पिलानी प्रदेश की भी सबसे गर्म जगह थी, लेकिन मंगलवार को श्रीगंगानगर में सबसे ज्यादा गर्मी रही। श्रीगंगानगर में तापमान 46.3 डिग्री दर्ज किया गया। जो पिलानी से प्वाइंट 4 डिग्री ही ज्यादा था। पिलानी में अधिकतम तापमान 45.9 डिग्री दर्ज किया गया, जबकि सीकर में 42 तथा चूरू में 45.6 डिग्री तापमान दर्ज किया गया।

इससे पहले तीन दिन से पिलानी में लगातार दिन और रात, दोनों का तापमान बढ़ रहा था, जो अब थम गया। मंगलवार को ना केवल दिन का तापमान थोड़ा लुढका तो वहीं रात का तापमान में कोई परिवर्तन नहीं रहा। रात का तापमान मंगलवार को 30.2 डिग्री दर्ज किया गया। मौसम विभाग की मानें तो आने वाले दो-तीन दिनों तक गर्मी से राहत नहीं मिलेगी। नौतपा से पहले ही सूरज ने झुंझुनूं के लोगों को तपा दिया है।

बढ़ती गर्मी के चलते आमजन के साथ-साथ मंदिरों की दिनचर्या भी प्रभावित हुई है। गर्मी से निजात पाने के लिए लोगों ने अपने तरीके अपनाए हैं, वहीं मंदिरों में भगवान की प्रतिमाओं को ठंडक पहुंचाने के लिए विशेष प्रबंध किए गए हैं।

दादा की अस्थियां बहाने गए पांच भाई गंगा नदी में डूबे, दो की मौत

दोनों भाइयों के शव कछला घाट से आठ किमी दूर झाड़ियों में फंसे मिले

■ जोर से चिल्लाने पर नाव चलाने वाले व्यक्ति ने तीन भाइयों को बचा लिया, दो नदी में डूब गये

■ परिवार के 35 सदस्य ट्रैक्टर-ट्रॉली से दादा की अस्थियां विसर्जन के लिए यूपी के सोरोंजी गए थे

भरतपुर, (निसं)। सोमवार सुबह गंगा नदी (यूपी) में डूबे दो भाइयों के शव कछला घाट से करीब आठ किलोमीटर दूर झाड़ियों में फंसे मिले। दोनों के शव बदायूं अस्पताल की मोर्चरी में रखवा दिए हैं। पोस्टमार्टम के बाद उनके शवों को भरतपुर लाया जाएगा।

जानकारी के अनुसार भरतपुर जिले में चिकसाना थाना इलाके के पीरनगर गांव से दोनों भाई अपने परिवार के साथ दादा की अस्थियां विसर्जन के लिए यूपी के सोरोंजी गए थे। वहां से जब वह बदायूं जिले में गंगा नदी के कछला घाट पर नहाने लिए गए तो परिवार के पांच भाई गंगा नदी में डूब गए, जिसमें से तीन को बचा लिया गया, लेकिन सुमित (17) पुत्र विजय सिंह और समीर (16) पुत्र रामवीर सिंह नदी में बह गए। 24 घंटे बाद मंगलवार सुबह दोनों के शव झाड़ियों में फंसे मिले।

मोनू ने बताया कि मैं और मेरे चाचा-ताऊ के चार बेटे गंगा नदी में नहाने के लिए गए थे। नहाने वाली जगह एक गड्ढा था, जिसमें हम पांचों भाई डूबने लगे। वहां पास से एक नाव जा रही थी, नाव चलाने वाले व्यक्ति ने जब हमें डूबते देखा तो वह नाव से कूदकर हमारे पास आया और उसने हम तीन भाइयों भोला, अमित और मुझे (मोनू) बचा लिया। वह हमें नदी किनारे छोड़कर वापस सुमित और समीर को बचाने के लिए गया, तो वहां पर वे दोनों नहीं मिले। मोनू ने बताया कि जब हम लोग डूब रहे थे तो, हमारे नाक और मुंह में पानी चला गया। हम पानी में हाथ-पैर मारते रहे, हम जोर से चिल्लाये तो, नाव वाला व्यक्ति हमें बचाने के लिए आया। हम पांचों भाई बेहोश हो गए, उसके बाद हमें कुछ याद नहीं है।

परिवार के सदस्य नवीन कुमार ने बताया कि 13 मई को हमारे बाबा अमर सिंह (90) का निधन हो गया था। रविवार को करीब 35 सदस्य ट्रैक्टर-ट्रॉली से उनकी अस्थियां विसर्जन के लिए सोरोंजी गए थे। शाम के समय हम वहां पहुंच गए। शाम को सोरोंजी रुके और सोमवार सुबह अस्थि विसर्जन कर कछला घाट चले गए। वहां पर परिवार के सभी लोग नहा रहे थे। इस दौरान भोला (24), अमित (26), मोनू (18), सुमित (17), समीर (16) नहाने के लिए गहरे पानी में चले गए, वहां पांचों भाई डूबने लगे, जहां एक नाविक ने तीन भाइयों को बचा लिया, दो भाई नहीं मिले।

नवीन ने बताया कि घटना की सूचना वहां मौजूद पुलिस को दी गई। पुलिस ने सुमित और समीर को बचाने के लिए रेस्क्यू ऑपरेशन चलाया। सुबह दोनों के शव कछला पुल से करीब आठ किलोमीटर आगे झाड़ियों में फंसे मिले। फिलहाल उनके शवों को बदायूं अस्पताल की मोर्चरी में रखवा दिया गया है। पोस्टमार्टम करवाकर उनके शवों को भरतपुर लाया जाएगा।

कार्यालय नगर पालिका मांगरोल, जिला-बारां (राज0)

क्रमांक / न.पा.मा. / 2025 / 777 दिनांक 13.05.2025

ई निविदा सूचना वर्ष 2025-26

NIB CODE- DLB2526A1499

नगर पालिका मांगरोल द्वारा सिविल कार्य हेतु सक्षम श्रेणी में पंजीकृत ठेकेदारों / फर्मो से 01 कार्यो की मोहरबन्द **Online** निविदा (तकनीकी व वित्तीय दो लिफाफा पद्धति) आमंत्रित की जाती हैं। निविदा **Online** दिनांक 21.05.2025 से 02.06.2025 तक प्राप्त कर दिनांक 03.06.2025 को खोली जावेगी। निविदा संबंधी विवरण का अवलोकन नगर पालिका मांगरोल कार्यालय में किसी भी कार्य दिवस को देखा जा सकता है।

कार्य का विवरण www.sppp.raj.nic.in पर देखा जा सकता हैं एवं कार्य की **Online** निविदा http://eproc.rajasthan.gov.in पर ही प्राप्त की जावेगी।

क्र.सं.	UBN No.
1	DLB2526WSOB05276

अधिशाषी अधिकारी
राज.संवाद / सी / 25 / 2618 नगर पालिका मांगरोल

जयपुर विकास प्राधिकरण
इन्दिरा सर्किल, जवाहर लाल नेहरु मार्ग, जयपुर-302004

क्रमांक : जविप्रा / अ.अ.-7 / 093 / 2025-26 / डी-369 दिनांक : 17.05.2025

निविदा सूचना

निविदा सूचना सं. जविप्रा / अधि.अभि.-7 / 14 / 2025-26

जयपुर विकास प्राधिकरण द्वारा "जविप्रा जोन-7 क्षेत्र में गिरधारीपुरा कच्ची बस्ती में पम्पिंग स्टेशन का निर्माण कार्य जिसकी अनुमानित लागत राशि रू. 149.18 लाख के लिए ऑनलाईन बिड्स दिनांक 28.05.2025 सांय 6:00 बजे तक आमंत्रित की जाती हैं। निविदा बोली का ऑनलाईन आवेदन व भुगतान जविप्रा पोर्टल पर करने की अन्तिम तिथि 28.05.2025 को सांय 6.00 बजे तक हैं। निविदा बोली के दस्तावेजों का विस्तृत विवरण www.sppp.rajasthan.gov.in, www.eproc.rajasthan.gov.in and www.jda.rajasthan.gov.in पर देखा जा सकता है।

UBN No.: JDA2526WSOB00168

निविदा में भाग लेने वालो को निम्न शर्तो की पूर्ति करनी होगी :-

1. निविदादाता जयपुर विकास प्राधिकरण की वेबसाईट www.jda.rajasthan.gov.in पर पंजीकृत हो एवं निविदा में भाग लेने के लिए बोलीदाता को आवेदन करने के लिए दस्तावेज शुल्क, अमानत राशि, आर.आई.एस.एल प्रोसेसिंग शुल्क ऑनलाईन जमा करनी होगी।
2. ऑनलाईन निविदा प्रस्तुत करने के लिए निविदादाताओं का राजस्थान सरकार के ई-प्रोक्यूरमेंट पोर्टल www.eproc.rajasthan.gov.in पर पंजीकृत हो।

राज.संवाद/सी/25/2679 अधिशाषी अभियन्ता-7

झाड़ियों में युवती का लहूलुहान शव मिला

युवती के हाथों में मेहंदी लगी हुई है, बाएं हाथ पर 'ॐ' का टैटू बना है

■ युवती का चेहरा कुचलकर शिनाख्त मिटाने की कोशिश की गई थी

■ एफएसएल और डॉग स्क्वायड टीम को साक्ष्य जुटाने के लिये बुलाया

■ पोस्टमार्टम रिपोर्ट के बाद खुलासा होगा

उदयपुर, (कासं)। उदयपुर में गोगुंदा थाना क्षेत्र में मंगलवार को एक युवती का शव लहूलुहान अवस्था में खून से सना हुआ मिला। घटना का पता लगते ही गांव में सनसनी फैल गई।युवती का चेहरा इस कदर कुचला हुआ था कि उसके आंख, नाक और मुंह में गहरे घाव हैं। हाथ-पैर पर भी चोट के निशान थे।

जानकारी के अनुसार घटना जसवंतगढ़ स्थित आड़ी सड़क पावर हाउस के पास की है, जहां किसी ग्रामीण ने शव पड़ा हुआ देखा तो तुरंत पुलिस को सूचना दी। सूचना पर गोगुंदा थाना पुलिस मौके पर पहुंची और घटना की जानकारी ली। साथ ही एफएसएल और डॉग स्क्वायड टीम भी साक्ष्य जुटाने में लगी है।

दोनों हाथों में मेहंदी लगी थी और बाएं हाथ पर 'ॐ' का टैटू :-पुलिस के अनुसार युवती के दोनों हाथों में मेहंदी लगी हुई थी। वहीं बाएं हाथ पर 'ॐ' का टैटू बना हुआ है। प्राथमिक जांच युवती की हत्या की आशंका जताई जा रही है। संभावना है कि अज्ञात बदमाशों ने किशोरी की बेरहमी से हत्या कर शव को झाड़ियों में फेंका और पहचान छिपाने के इरादे से उसके चेहरे को पत्थरों से बुरी तरह कुचल दिया। हालांकि पुलिस का कहना है कि पोस्टमार्टम रिपोर्ट और गहनता से जांच के बाद पूरे मामले का खुलासा होगा।

गोगुंदा थाना अधिकारी श्यामसिंह ने बताया कि संभावना है कि युवती को किसी ने पत्थर से कुचलकर मारा है। मृतक की फिलहाल शिनाख्त नहीं हो पाई है। युवती की पहचान के लिए फोटो भेजकर कर आस-पास के थानों में गुमशुदगी की रिपोर्ट खंगालनी शुरू कर दी है। फिलहाल पुलिस ने अज्ञात बदमाशों के खिलाफ हत्या का मामला दर्ज कर जांच शुरू कर दी है। युवती के शव को उदयपुर चिकित्सालय की मोर्चरी में रखवाया गया है।

गौरतलब है कि करीब एक साल पहले थाना क्षेत्र के भादवि गुड़ा के पास भी एक युवती का शव इसी तरह झाड़ियों में मिला था, जिसकी शिनाख्त आज तक नहीं हो सकी है। उस मामले को पुलिस ने देह व्यापार से जोड़कर जांच की थी। इधर ग्रामीणों का कहना है कि इस क्षेत्र में हाइवे के किनारे कई होटल संचालित हैं जहां अवैध रूप स देह व्यापार का धंधा चल रहा है। पुलिस को इस मामले में सख्त कदम उठाने चाहिए।

ट्रांसफार्मर से भरे ट्रक में आग लगी, लाखों का नुकसान

■ डेढ़ घंटे बाद पहुंची फायर ब्रिगेड

बीकानेर, (निसं)। महाजन में एक्सप्रेस-वे राजमार्ग पर ट्रांसफार्मर से भरे ट्रक में लगी आग से लाखों का सामान जल गया। आग के बाद ट्रांसफार्मर सिर्फ लोहे के ढांचे रह गए।

महाजन थाना अधिकारी कश्यप सिंह ने बताया कि रात करीब साढ़े आठ बजे एक्सप्रेस-वे पर जैतपुर टोल प्लाजा से हनुमानगढ़ की तरफ एक ट्रक में आग लगने की सूचना मिली। सूचना के तुरंत बाद पुलिस मौके पर पहुंची। फायर ब्रिगेड को बुलाया गया और आग पर काबू पाया गया। थाना अधिकारी ने बताया कि मिली सूचना से प्रथमदृश्य ट्रक पूर्व में यहीं पर खड़ा था, जिसमें अचानक अज्ञात कारणों से आग लग गई। हालांकि दमकल के देरी से पहुंचने के कारण आग पर काबू करीब डेढ़ घंटे बाद पाया गया। फायर बिग्रेड को सूचना करने के बाद भी करीब एक घण्टे देरी से पहुंची। फायर बिग्रेड को सूरतगढ़ से बुलाया गया था, हालांकि इससे पहले सूरतगढ़ थर्मल स्टेशन पर फायर ब्रिगेड को सूचना की गई थी। समय रहते दमकल की व्यवस्था होती तो इतना बड़ा नुकसान नहीं होता। पुलिस ने बताया कि ट्रक की छानबीन करने पर ट्रक में कोई व्यक्ति नहीं मिला और ना ही ट्रक के ड्राइवर व खलासी आसपास कहीं दिखाई दिए। उक्त ट्रक हरियाणा नंबर का बताया जा रहा है, जो पंजाब की तरफ से आ रहा था और बीकानेर की तरफ जा रहा था, जोकि वहां पर पूर्व में ही खड़ा था।

कार्यालय नगर पालिका मण्डल, चाकसू

क्रमांक न.पा.चा. / विकास / 2025 / 1092 दिनांक: 16.05.2025

ई-निविदा सूचना संख्या 08/2025-26

नगर पालिका चाकसू की ओर से निम्न कार्य के लिए उपयुक्त श्रेणी में नगर पालिका चाकसू में पंजीकृत उपयुक्त श्रेणी के संवेदकों एवं अन्य विभागो के संबंधित "A" "AA" श्रेणी में पंजीकृत संवेदको एवं स्वायत्त शासन विभाग में पंजीकृत उपयुक्त श्रेणी के संवेदको से, जो कि राजस्थान सरकार के उपयुक्त श्रेणी के संवेदकों के समकक्ष हो, उनके निर्धारित प्रपत्र में ई-प्रोक्युरमेन्ट प्रक्रिया हेतु ऑन-लाईन बोली आमंत्रित की जाती है, बोली फार्म एवं ई-बोली से सम्बन्धित विवरण व शर्ते वेब साईट www.sppp.rajasthan.gov.in & http://www.eproc.rajsthan.gov.in पर देखा जा सकता है।

S. No	UBN No.	S. No	UBN No.
1	DLB2526WSOB04969	12	DLB2526WSOB04984
2	DLB2526WSOB04971	13	DLB2526WSOB04985
3	DLB2526WSOB04972	14	DLB2526WSOB04986
4	DLB2526WSOB04973	15	DLB2526WSOB04987
5	DLB2526WSOB04974	16	DLB2526WSOB04989
6	DLB2526WSOB04976	17	DLB2526WSOB04990
7	DLB2526WSOB04977	18	DLB2526WSOB04991
8	DLB2526WSOB04978	19	DLB2526WSOB04992
9	DLB2526WSOB04980	20	DLB2526WSOB04993
10	DLB2526WSOB04981	21	DLB2526WSOB04994
11	DLB2526WSOB04982		

अधिशाषी अधिकारी
राज.संवाद / सी / 25 / 2622 नगर पालिका चाकसू

कोटपूतली में मकानों और दुकानों की नगर पालिका द्वारा बेतरतीब तोड़फोड़ करने पर हाईकोर्ट ने फैसला सुरक्षित रखा

न्यायाधीश अनूप कुमार ढंढ ने करीब 150 याचिकाकर्ताओं की ओर से दायर याचिका पर सुनवाई पूर्ण की

जयपुर, (का.सं.)। कोटपूतली में करीब 150 मकानों-दुकानों व अन्य स्थाई निर्माणों पर नगर पालिका द्वारा उपयुक्त कानूनी प्रावधानों की पालना नहीं करते हुए तोड़फोड़ करने के मामले में सुनवाई हुई और सभी तथ्यों को सुनने के बाद हाईकोर्ट ने अपना फैसला सुरक्षित किया है। जैसा कि विदित है पिछली गहलोत सरकार के दौरान कोटपूतली में तत्कालीन नगर परिषद में हाईवे से जुड़े रास्ता जो अम्बेडकर स्कूल तक जाता था, इस सड़क मार्ग पर पर बने अस्थाई अतिक्रमण को हटाने के लिये नोटिस जारी किये थे। परंतु आमजन में प्रशासन में यह भय का माहौल तैयार किया था कि वह सड़क को 60 फीट तक चौड़ा करेगी और बीच में आने वाले मकानों और दुकानों को ध्वस्त करेगी।

हालांकि कई समृद्ध याचिकाकर्ताओं ने अदालत से अंतरिम राहत पाई थी और नगर परिषद को आदेश पारित किये थे कि वह सड़क चौड़ी करने से पूर्व आपत्तियों की सुनवाई करेगी। अदालत से अंतरिम सुरक्षा मिलने के दौरान राज्य सरकार द्वारा नगर परिषद को नगर पालिका में परिवर्तित कर दिया गया।

इस मामले में जिन याचिकाकर्ताओं के मकान टूटे उनकी तीन श्रेणियां बनीं, पहला जिन्हें खेतड़ी महाराज से पट्टे प्राप्त थे, दूसरे वे जिन्हें

- **याचिकाकर्ताओं का कहना था कि हाईकोर्ट के आदेश के बावजूद नगर पालिका ने सभी दुकानदार और मकान मालिकों से आपत्तियां नहीं सुनीं और ना ही इमारतों को तोड़ने से पूर्व कोई मुआवजा देने की बात की। कई याचिकाकर्ताओं का कहना था कि नगर पालिका के अधिकारियों ने बैक डेटिड नोटिस देकर मकान तोड़ने की कार्रवाई शुरू की थी**
- **याचिकाकर्ताओं का कहना है कि स्थाई अतिक्रमण हटाने के लिये नगर परिषद ने कभी नोटिस जारी नहीं किये थे**

नगर परिषद ने पट्टे जारी किये थे और तीसरे वे जिनके पास पट्टे नही थे।

उल्लेखनीय है कि कई याचिकाकर्ताओं का कहना था कि हाईकोर्ट के आदेश के बावजूद नगर पालिका ने सभी दुकानदार और मकान मालिकों से आपत्तियां नहीं सुनीं और ना ही इमारतों को तोड़ने से पूर्व कोई मुआवजा देने की बात की। कई याचिकाकर्ताओं का कहना था कि नगर पालिका के अधिकारियों ने बैक डेटिड नोटिस देकर मकान तोड़ने की कार्रवाई शुरू की थी।

नगर पालिका की ओर से तर्क दिये कि उसने केवल अतिक्रमण कारियों के ही मकान तोड़े हैं और सड़क चौड़ा करने के लिये ही कार्रवाई की है। नगर पालिका की ओर से कहा गया है कि उन्होंने तोड़फोड़ करने से पूर्व सभी याचिकाकर्ताओं को नोटिस भी जारी किये थे। इस मामले में नगर पालिका की ओर से बहस में कहा गया था कि जिन याचिकाकर्ताओं को पट्टे जारी किये हैं, वे अवैध रूप से जारी किये हैं और जिन लोगों के पास पट्टे नहीं हैं वे अतिक्रमणकारी हैं। परंतु हैरानी की बात है कि नगर परिषद ने स्थाई अतिक्रमण हटाने के लिये कभी नोटिस जारी नहीं किये थे। और मास्टर प्लान में बदलाव कर सड़क को चौड़ी करने के लिये और फिर अधिकारिक गजट में प्रकाशित करने के लिये कभी कोई कानूनी कार्रवाई नहीं की थी।

न्यायाधीश अनूप कुमार ढंढ ने इस मामले पर पूरी सुनवाई को सुना है और अपना अंतिम निर्णय सुरक्षित रखा है।

राज्यपाल हरिभाऊ बागडे से मंगलवार को राजभवन में विधानसभा अध्यक्ष वासुदेव देवनानी ने पहुंचकर मुलाकात की। इस दौरान उन्होंने राज्यपाल को वर्ष प्रतिपदा पर प्रकाशित नववर्ष की डायरी भेंट की। राज्यपाल ने वर्ष प्रतिपदा पर प्रकाशित नव वर्ष डायरी की सराहना की। देवनानी और बागडे ने इस दौरान विभिन्न विषयों पर संवाद किया। उनकी यह शिष्टाचार भेंट थी।

काग़ज़ी क्रिकेट एकेडमी का शुभारंभ

शिकारपुरा रोड, सांगानेर में मंगलवार को काग़ज़ी समाज द्वारा स्वमं की भूमि पर बनाया गया क्रिकेट ग्राउंड का शुभारंभ पूर्व उपमुख्यमंत्री, एआईसीसी के महासचिव व विधायक सचिन पायलट ने किया। इसके बाद उन्होंने मैदान में क्रिकेट खेलने का आनंद लिया।

जयपुर। शिकारपुरा रोड, सांगानेर में आज काग़ज़ी समाज द्वारा स्वेम की भूमि पर बनाया गया क्रिकेट ग्राउंड जिसका शुभारंभ पूर्व उपमुख्यमंत्री एआईसीसी के महासचिव व विधायक सचिन पायलट, किशनपोल विधायक अमीन काग़ज़ी, आरसीए के पूर्व उपाध्यक्ष अमीन पठान , इंडिया टीम के खिलाड़ी अनिकेत चौधरी द्वारा किया गया। पायलट ने बताया खेल हमें अनुशासन सिखाता है, खेल में खिलाड़ी की काबिलियत को छुपाया नहीं जा सकता। कागज़ी ने कहा क्रिकेट अकादमी हमारी इस यात्रा में एक और मील का पत्थर साबित होगी और अपने समाज की और से आयोजकों का व समाज के सभी लोगो का धन्यवाद दिया।

पठान ने कहा एकेडमी के माध्यम से युवा खिलाड़ियों को उच्च स्तरीय क्रिकेट प्रशिक्षण मिलेगा। इस कार्यक्रम में लाडनूं विधायक मुकेश भाकर, पूर्व विधायक वेद प्रकाश सोलंकी, अजमेर क्रिकेट के पूर्व अध्यक्ष इलयास कुरैशी, अल्पसंख्यक वित्त आयोग के पूर्व सदस्य असरार कुरैशी सहित कई लोगो ने शिरकत की।

नगरीय विकास कर जमा कराने के लिए लगेंगे नियमित शिविर

जयपुर। हेरिटेज निगम की नगरीय विकास कर समिति की बैठक मंगलवार को हेरिटेज निगम मुख्यालय में संपन्न हुई। इस दौरान समिति चेयरमैन प्रकाश चंद्र शर्मा ने समिति सदस्यों के साथ की बैठक की। बैठक में सचिव सुनील कुमार बैरवा ने समिति के सदस्यों के सामने विभिन्न एजेंडे रखे। इस दौरान चेयरमैन प्रकाश चंद्र शर्मा ने निगम अधिकारियों को निर्देश दिए कि नगरीय विकास कर के बकायादारों के खिलाफ सख्त कार्रवाई की जाएं। साथ ही नगरीय विकास कर जमा करने के लिए जोन स्तर पर कैंप आयोजित किए जाएं।

नगरीय विकास कर समिति चेयरमैन और सदस्य हर महीने रिव्यू करेंगे।

कारोबारी के घर से 3 नौकर उड़ा ले गए 67 लाख, पुलिस पहुंची बिहार

जयपुर। बनीपार्क थाना इलाके में एक कारोबारी के घर से तीन नौकरों ने 67 लाख रुपए पार कर लिए। घटना का पता लगने पर पीड़ित ने पुलिस की शरण ली। फरार नौकरों की तलाश में पुलिस की टीम बिहार सहित उनके संभावित स्थानों पर छापामारी कर रही है। मामले की जांच एएसआई मोहम्मद रफीक कर रहे है। बिहार गई टीम को जांच अधिकारी लीड कर रहे है।

थानाधिकारी बृजमोहन कविया ने बताया कि सिंधी कॉलोनी बनीपार्क निवासी मनीष चांदवानी कारोबार करता है। उसके घर पर तीन नौकर काम करते थे। इसमें स्वागतम, सुनील तूती और सिकंदर शामिल है। आरोपियों ने

- **नौकरों के वेरिफिकेशन को लेकर की जाएगी जांच**
- **प्रॉपर्टी का हो सकता है पैसा**

कारोबारी के घर से करीब 67 लाख रुपए पार कर लिए। पीड़ित ने शिकायत में बताया कि यह राशि 8 से 14 मई के बीच निकाली गई है। रुपए पार करने के बाद आरोपी एक-एक कर घर से गायब हो गए। आरोपियों से पीड़ित ने सम्पर्क भी करने का प्रयास किया, लेकिन उनके नम्बर बंद आए। इस पर पीड़ित ने पुलिस की शरण ली। पुलिस ने मामला दर्ज कर जांच शुरू कर दी है।

थानाधिकारी ने बताया कि पीड़ित ने आरोपी नौकरों का वेरिफिकेशन करवाया था या नहीं इसकी भी जांच की जा रही है। अगर उनका वेरिफिकेशन नहीं करवाया होगा तो मालिक के खिलाफ मामला दर्ज कर कार्रवाई की जाएगी। फिलहाल फरार नौकरों की तलाश में आधा दर्जन टीमों का गठन किया गया है जो कि नौकरों के संभावित स्थानों पर छापामारी कर रही है। पुलिस फरार नौकरों का आपराधिक रिकॉर्ड भी खंगाल रही है। इसके अलावा पीड़ित के घर और उसके आसपास लगे सीसीटीवी कैमरों की फुटेज भी जुटाई जा रही है ताकि साक्ष्य के रूप में काम में लिए जा सके।

थानाधिकारी ने बताया कि पीडित छोटा कारोबारी है। उसके पास इतना पैसा कहा से आया, यह भी जांच का विषय है। लेकिन प्राथमिक जांच में यह सामने आया है कि कारोबारी ने कोई प्रॉपर्टी बेची थी और यह राशि उसकी थी जो कि अलमारी में रखी थी। तीनों नौकर लम्बे समय से काम कर रहे थे। ऐसे में उन्हें हर बात की जानकारी थी। यह भी जानकारी ली जा रही है कि क्या फरार सभी नौकर पुराने है या नए भी है। हो सकता है कि इस अपराध को पूरी योजना बनाकर अंजाम दिया गया हो।

प्रतिबंधित दवाइयों का भारी मात्रा में जखीरा पुलिस ने पकड़ा

जयपुर। सोडाला थाना पुलिस ने कार्रवाई करते हुए बाईस गोदाम करतारपुरा रोड स्थित एक दुकान से प्रतिबंधित दवाइयों का भारी मात्रा में जखीरा पकड़ा है और 14 हजार 400 प्रतिबंधित गोलियां, 157 प्रतिबंधित शीशीयॉ, सफेद रंग का 3 हजार 911 ग्राम पाउडर एवं 944 ग्राम हल्के गुलाबी रंग का पाउडर बरामद किया गया है। वहीं फरार आरोपियों की तस्दीक कर उनकी तलाश की जा रही है।

अतिरिक्त पुलिस उपायुक्त जयपुर (दक्षिण) ललित शर्मा ने बताया कि अंकित ताम्बी निवासी सिरसी रोड गोविन्दपुरी जयपुर ने पुलिस कन्ट्रोल रूम में सूचना दी थी कि सोडाला थाना इलाके में स्थित बाईस गोदाम करतारपुरा रोड पर उसने दुकान श्री देव कृष्णा टॉबर 22 गोदाम करतारपुरा रोड जयपुर पर कृष्णा खंडेलवाल पत्नी देवेन्द्र खंडेलवाल निवासी मानसरोवर जयपुर से किराये पर ले रखी है। जिसकी एक चाबी उनके पास है और 17 मई को दुकान मंगल कर के गया

- **14 हजार 400 प्रतिबंधित गौलियां, 157 प्रतिबंधित शीशी, सफेद रंग का 3 हजार 911 ग्राम पाउडर एवं 944 ग्राम हल्के गुलाबी रंग का पाउडर बरामद**
- **फरार आरोपियों की जा रही है तस्दीक**

था और 19 मई को दुकान को खोला तो वहा पर एक बैग में कुछ प्लास्टिक के डिब्बों में पाउडर जैसा भरा है दो कार्टून सीसीयो से भरे रखे है जो संदिग्ध है। इस पर औषधि नियंत्रण अधिकारी जयपुर और सोडाला थाना जाब्ता मौके पर पहुंचा। टीम ने दुकान से काफी भारी मात्रा में कोलिसेड की शीशियां, अल्प्राजोलम टैबलेट गोलियां,पाउडर आदी रखे हुए थे। वहीं सूचनाकर्ता अंकित ताम्बी से इन प्रतिबंधित दवाइयों व पाउडर के बारे में पूछताछ में सामने आया कि उसकी दुकान की एक चाबी मकान मालिक देवेन्द्र खण्डेलवाल के पास है। जिसका लड़का धीरज व देवेन्द्र किराये लेते व दुकान को संभालने के लिए आते रहते है तो यह दवाइयों व पाउडर उन्हीं का हो सकता है। इसी दौरान मुखबिर खास से भी सूचना प्राप्त हुई कि इस बिल्डिंग का मालिक देवेन्द्र खण्डेलवाल व उसका लड़का धीरज पूर्व में अवैध मादक पदार्थ की तस्करी में लिप्त रहे है और उक्त नशीली दवाईया वपाउडर भी उन्हीं के है। पुलिस टीम संदिग्ध आरोपी देवेन्द्र खंडेलवाल एवं धीरज खंडेलवाल का पूरा नाम पते तस्दीक की जा रही है।

फर्जी आई बना कर क्रिप्टोकरेंसी यूएसडीटी लूट और धोखाधड़ी करने वाला मास्टर माइंड गिरफ्तार

जयपुर। सिंधी कैंप थाना पुलिस ने कार्रवाई करते हुए फर्जी आई बना कर सोशल मीडिया के मार्फत क्रिप्टो करेंसी यूएसडीटी लूट और धोखाधड़ी करने वाले मास्टर माईंड को धर-दबोचा है। पुलिस जानकारी में सामने आया कि गिरफ्तार आरोपी आईआईटी का छात्र है। फिलहाल आरोपी से पूछताछ की जा रही है।

पुलिस उपायुक्त जयपुर पश्चिम अमित कुमार ने बताया कि सिंधी कैंप थाना पुलिस ने कार्रवाई करते हुए फर्जी आई बना कर सोशल मीडिया के मार्फत क्रिप्टो करेंसी यूएसडीटी लूट और धोखाधड़ी करने वाले मास्टर माईंड और वांछित आरोपी 21 वर्षीय दीव्यांशु सिंह श्याम उर्फ गुल्ला निवासी सुभाष चौक जयपुर को गिरफ्तार किया है।

थानाधिकारी (पुलिस उप निरीक्षक) श्याम सुन्दर शर्मा ने बताया कि 21 नवम्बर 2024 को पीडित समीर खान निवासी चुरू ने सिंधी कैंप थाने में मामला दर्ज करवाया था कि 14 नवम्बर 2024 को श्याम नामक व्यक्ति ने शेयर मार्केट में नौकरी दिलाने का मैसेज कर जयपुर बुलाया। जहां पीड़ित अपने दो दोस्तों के साथ जयपुर आने पर सिंधी कैंप से उन्हें गाडी में बैठा कर दौलतपुरा टोल की तरफ सुनसान जगह ले गए।

सात प्रतिष्ठानों से लिए गए सैंपल अनसेफ मिले

जयपुर। मुख्य चिकित्सा एवं स्वास्थ्य अधिकारी डॉ. रवि सिंह शेखावत ने बताया कि आयुक्त खाद्य सुरक्षा एवं औषधि नियंत्रण राजस्थान के निर्देशानुसार लिये गये खाद्य पदार्थों के नमूनों में से अनसेफ पाये गये प्रकरणों में निम्न फर्मों रस्तोगी सेल्स प्राइवेट लिमिटेड जयपुर का एमडीएच गरम मसाला, श्याम धणी इंडस्ट्रीज जयपुर का श्याम धणी गरम मसाला, लक्ष्मी स्वीट्स केटर्स सुभाष चौक जयपुर की नमकीन,पेट पूजा होटल महादेव बनीपार्क जयपुर की ग्रेवी, अमरलाल स्वीट्स केटर्स जयपुर के लडडू,लक्ष्मी जोधपुर मिष्ठान भंडार, स्वेज फार्म जयपुर के लड्डू, मोहम्मदी पैलेस चांदपोल जयपुर की ग्रेवी, चिकन चंगेजी एवं काली मिर्च, के विरुद्ध प्रकरण मुख्य महानगर मजिस्ट्रेट जयपुर प्रथम/द्वितीय में प्रस्तुत किये जा चुके हैं।

मालवीय नगर मडल में निकली तिंरगा यात्रा

जयपुर। मालवीय नगर विधानसभा के मालवीय नगर मंडल में तिरंगा यात्रा को विधायक कालीचरण सराफ ने रवाना किया। मंडल अध्यक्ष हरीश खड़िया ने बताया कि तिरंगा यात्रा सेक्टर 10 काली माता मंदिर से रवाना होकर पालिका बाजार होते हुए शहीद अमित भारद्वाज पार्क पर जाकर संपन्न हुई। तिरंगा यात्रा महिला आयोग की पूर्व अध्यक्ष सुमन शर्मा के नेतृत्व में निकली।

चार पुलिस स्टेशनों पर बम की झूठी सूचना देने वाला बदमाश गिरफ्तार

जयपुर। विधायकपुरी थाना पुलिस ने कार्रवाई करते हुए चार पुलिस स्टेशनों पर बम गिराने की धमकी की झूठी सूचना देने वाले बदमाश को गिरफ्तार किया है। पुलिस पूछताछ में सामने आया कि आरोपी ने भारत-पाकिस्तान के बीच तनावपूर्ण माहौल के चलते शराब के नशे में पुलिस कंट्रोल रूम में कॉल कर पाकिस्तान से आए कुछ लोगों के चौमू,सामोद, बनीपार्क और सांगानेर थानों पर बम गिराने की झूठी सूचना दी थी। पुलिस ने आरोपी के कब्जे से धमकी में यूज मोबाइल व सिम कार्ड को जब्त किया है। फिलहाल आरोपी से पूछताछ की जा रही है।

पुलिस उपायुक्त जयपुर (दक्षिण) दिगंत आनंद ने बताया कि विधायकपुरी थाना पुलिस ने कार्रवाई करते हुए चार पुलिस स्टेशनों पर बम गिराने की धमकी देने वाले बदमाश समुद्र सिंह (40) निवासी गांव भोपावास सामोद जयपुर ग्रामीण को गिरफ्तार किया। पुलिस ने आरोपी के कब्जे से धमकी भरा कॉल में यूज मोबाइल व सिम कार्ड जब्त किए है। पुलिस पूछताछ में सामने आया है कि आरोपी समुद्र सिंह एम.ए पास है, जो शराब के नशे का आदी है। उसके खिलाफ पहले लड़ाई-झगड़े और जमीन से संबंधित मामले चल रहे है। जिससे परेशान होकर शराब के नशे में जानबूझकर भारत-पाकिस्तान के बीच चल रहे तनावपूर्ण माहौल को ढाल बनाकर पुलिस कंट्रोल रुम में फोन कर चार थानों पर पाकिस्तान से आए कुछ लोगों के बम गिराने की झूठी सूचना दे डाली। थानाधिकारी बनवारी लाल मीणा ने बताया कि विधायकपुरी थाने में पुलिस कंट्रोल रूम में तैनात एएसआई रमेश चंद्र ने थाने में मामला दर्ज करवाया था कि अनजान कॉलर ने मोबाइल से पुलिस के डायल-100 पर कॉल किया।

जयपुर की रुचि गुर्जर का 'रेड कारपेट लुक' बना चर्चा का विषय

जयपुर। जयपुर की रुचि गुर्जर कांस के रेड कारपेट पर चर्चा का विषय बनी हुई है। अपने राजस्थानी पहनावे और अनोखे जेवरों से रुचि ने कांस में सभी के आकर्षण अपनी ओर खींचा।

जयपुर की रहने वाली रुचि ने मुंबई में अपनी एक्टिंग का सिक्का जमाया और अब अपनी फ़िल्म 'लाइफ' के लिए कांस फ़िल्म फेस्टिवल की 2025 जा पहुंची है। इस दौरान रुचि ने रेड कारपेट पर रेड और गोल्ड थीम पर राजस्थानी पोशाक और संस्कृति को शोकेस किया। वहीं राजस्थानी बोलड़े को माथे पर सजाए रुचि ने गले के हार में प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी की तस्वीरों को सजाया। डिज़ाइनर रूपा शर्मा ने रुचि की रेड कारपेट पोशाक गोल्डन रेड लहंगे को शीशे, गोटा पट्टी और कढ़ाई से सजाया। जिसमे जयपुर की शाही कला को आधुनिक स्टाइल से परोसा। जहां लहंगे के साथ ज़रिबारी के डिज़ाइनर राम द्वारा बनाया गया बंधनी दुपट्टा पहना, जो ज़रदोज़ी और गोटा पट्टी से सुसज्जित था। इस लुक का असली आकर्षण का केंद्र रुचि के प्रधानमंत्री मोदी से प्रेरित हार था। बारीकी से बनाई गई इस जड़ाऊ ज्वेलरी ने न सिर्फ फैशन स्टेटमेंट दिया, बल्कि देशभक्ति की भावना को भी उजागर किया।

सेवानिवृत होने वाले कर्मचारियों को न्याय दिलाने की मांग

जयपुर। आज अखिल राजस्थान राज्य कर्मचारी संयुक्त महासंघ एकीकृत एवं राजस्थान राज्य कर्मचारी संघ के संयुक्त शिष्ट मंडल ने अतिरिक्त मुख्य सचिव वित्त अखिल अरोड़ा एवं कार्मिक सचिव के के पाठक को ज्ञापन सौंप कर छोटे विभाग के कर्मचारियों को भी आर्थिक न्याय दिलाने की मांग की। कर्मचारी महासंघ के प्रदेश अध्यक्ष गजेंद्र सिंह राठौड़ एवं राजस्थान राज्य कर्मचारी संघ के प्रदेश महामंत्री देवेंद्र सिंह नरूका ने संयुक्त विज्ञिप्त जारी कर बताया कि छोटे विभाग में पदोन्नति के कम अवसरों के कारण चार बार कैडर रिव्यू करने के पश्चात भी ऐसे मंत्रालयिक कर्मचारी जिनका पहला प्रमोशन 2022 साल में हुआ है वह आज 4200 के वेतन में ही सेवानिवृत होने को मजबूर है जबकि उनके ही साथके बड़े विभाग में पद स्थापित साथी ग्रेड पे 6600 तक वेतन ले रहे हैं। अतिरिक्त मुख्य सचिन अखिल अरोड़ा एवं कार्मिक शासन सचिव के के पाठक द्वारा आश्वस्त किया गया से जल्दी ही सबकी प्रथम नियुक्ति की दिनांक और वर्तमान में धारित पद एवं वेतन की सूचनाये एकत्रित कर सभी के साथ न्याय किया जाएगा।

शिष्टमंडल में गजेंद्र सिंह राठौड़, देवेंद्र सिंह नरूका, ओम प्रकाश चौधरी, पप्पू शर्मा आशीष सिंह शेखावत रामावतार मीणा आदि कर्मचारी नेता शामिल थे।

प्रदेश में प्रत्येक ग्राम पंचायत स्तर पर निकलेगी तिरंगा यात्रा : अंकित चेची

जयपुर। भाजपा प्रदेश मंत्री एवं तिरंगा यात्रा के प्रदेश संयोजक भूपेंद्र सैनी ने मंगलवार को प्रदेश कार्यलय में तिरंगा यात्रा और सिंदूर यात्रा को लेकर प्रेसवार्ता की। सैनी ने बताया कि ऑपरेशन सिंदूर की सफलता के बाद

- **राजस्थान के 7 संभाग, 44 जिलों, 72 विधानसभाओं और 338 मंडल स्तर पर निकाली गई तिरंगा यात्रा, 4.45 लाख नागरिकों की रही सहभागिता : भूपेंद्र सैनी**

देशभर में तिरंगा यात्रा निकाली जा रही है। देशवासियों में देशभक्ति की भावना को और अधिक मजबूत करने के उद्देश्य से निकाली जा रही तिरंगा यात्रा को प्रदेश में भरपूर समर्थन मिल रहा है। तिरंगा यात्रा में महिलाएं, पुरूष, सेना के सेवानिवृत्त अधिकारी, जवान, शहीदों परिवार के सदस्य, एनसीसी के स्टूडेंट्स, साधु-संत शामिल हो रहे है।

तिरंगा यात्रा प्रदेश संयोजक भूपेंद्र सैनी ने बताया कि राजस्थान में 15 मई से जयपुर संभाग स्तर पर शुरू की गई तिरंगा यात्रा जिला, मंडल, विधानसभा, शक्ति केंद्र, बूथ, ग्राम पंचायत स्तर तक निकाली जाएगी। अब तक प्रदेश के 7

भाजपा प्रदेश मंत्री एवं तिरंगा यात्रा के प्रदेश संयोजक भूपेंद्र सैनी और अंकित चेची ने मंगलवार को प्रदेश कार्यलय मे तिरंगा यात्रा और सिंदूर यात्रा को लेकर प्रेसवार्ता की।

संभाग और 44 जिलों में तिरंगा यात्रा निकाली जा चुकी है। प्रदेश की 72 विधानसभाओं में और भाजपा के 338 मंडल स्तर पर भी बड़े स्तर पर तिरंगा यात्रा निकाली गई। अब तक प्रदेशभर में 454 कार्यक्रम आयोजित किए गए, इनमें 4 लाख् 45 हजार नागरिकों की सहभागिता रही। सैनी ने बताया कि 31 मई तक प्रदेश के 8297 शक्ति केंद्र और 52187 बूथ स्तर पर भी तिरंगा यात्रा निकाली जाएगी। इसके साथ ही प्रदेश के प्रत्येक ग्राम पंचायत स्तर पर भी तिरंगा यात्रा निकलेगी।

तिरंगा यात्रा प्रदेश संयोजक अंकित चेची ने बताया कि तिरंगा यात्रा किसी राजनीतिक पार्टी का कार्यक्रम नहीं है, ना ही इसमें भाजपा का झंडा, भाजपा के नारे लगाए जा रहे है, बल्कि तिरंगा यात्रा भारतीय सैनिकों के मनोबल बढ़ाने के लिए आमजन का कार्यक्रम है। इसमें हर वर्ग, हर समुदाय और हर क्षेत्र के लोग बढ़चढ़ कर अपनी भागीदारी निभा रहे है। भाजपा प्रदेश अध्यक्ष मदन राठौड़ ने भी सीमा पर जाकर भारतीय जवानों को बधाई दी और मुंह मीठा करवाया। भारतीय सेना के समर्थन में निकाली जा रही तिरंगा और सिंदूर यात्रा में प्रत्येक नागरिक अपने आप को गौरवान्वित महसूस कर रहा है। आगामी तिरंगा यात्रा में हम सभी को बढ़ चढ़कर सहभागिता निभानी है। प्रेसवार्ता में भाजपा प्रदेश मीडिया संयोजक प्रमोद वशिष्ठ और प्रेमसिंह बनवासा भी उपस्थित रहे।

भीषण गर्मी में पी.बी.एम. हॉस्पिटल में फेल हो रहे ए.सी.

- पीबीएम की आईसीयू में रात को 8 ए.सी. बंद, तीन के कंप्रेशर खराब, रिपेयरिंग सही नहीं होने के कारण बार-बार बंद हो रहे हैं
- आईसीयू छत पर होने और मशीनों की हीट के कारण पूरी रात तप रहा था। मरीजों में भारी बेचैनी रही, परिजन रातभर पंखी या गत्ते से हवा करते रहे

बीकानेर, (कासं)। भीषण गर्मी का दौर शुरू होते ही पीबीएम हॉस्पिटल में ए.सी. फेल होने लगे हैं। रिपेयरिंग सही नहीं होने के कारण बार-बार बंद हो रहे हैं। मेडिसिन आईसीयू भी तप रहा है। वहां भर्ती गंभीर मरीज पसीने में तरबतर रहे। परिजन रात भर गत्ते से हवा करते रहे।

गर्मी में पारा 45 पार हो चुका है। पीबीएम हॉस्पिटल में मरीजों की भीड़ भी बढ़ने लगी है। पीबीएम परिसर और कॉलेज सहित सभी बिल्डिंग्स को मिलाकर करीब एक हजार एसी लगे हुए हैं, जिनमें से चार सौ से अधिक खराब पड़े हैं। जिन ए.सी. की रिपेयरिंग हो गई उनके भी बार-बार बंद होने की समस्या आ रही है। मेडिसिन विभाग के पोस्ट कोविड आईसीयू में दस ए.सी. में से रात को आठ बंद पड़े थे। इनमें से तीन ए.सी. का कंप्रेशर ही फट गया था। इस आईसीयू में भर्ती सभी मरीज गंभीर किस्म के हैं और ऑक्सीजन पर हैं। इनमें से कुछ वेंटिलेटर पर हैं।

आईसीयू छत पर होने और मशीनों की हीट के कारण पूरी रात तप रहा था। मरीजों में भारी बेचैनी रही। परिजन रातभर पंखी या गत्ते से हवा करते रहे। मामला चिकित्सा शिक्षा सचिव तक पहुंचने पर डॉक्टरों के हाथ पैर फूल गए। सुबह आठ बजे ही ईएमडी विभाग और ठेकेदार के श्रमिक मौके पर पहुंचे। उन्होंने सात एसी चला दिए लेकिन तीन नहीं चले। उनके कंप्रेशर दिल्ली से मंगवाए गए हैं।

हॉस्पिटल में मेडिसिन, सर्जरी सहित विभिन्न विभागों के करीब एक दर्जन आईसीयू हैं। सभी में ए.सी. के ऐसे ही हालात हैं। हल्दीराम मूलचंद हार्ट हॉस्पिटल में एक करोड़ रूपए की लगात से कूलिंग प्लांट लगाने की तैयारी की जा रही है। यह राशि भामाशाह हल्दीराम ट्रस्ट ने मुहैया कराई है। इसके लिए बाहर से इंजीनियर बुलाए गए हैं। वर्तमान में हार्ट हॉस्पिटल में भी एसी बार-बार बंद हो रहे हैं। 15 साल पुराना कूलिंग प्लांट अब किसी काम का नहीं रहा। सीसीयू, कॉटेज वार्ड सहित जनरल वार्डों में पिछले साल अलग से ए.सी. लगाए गए थे, लेकिन टेम्परेचर बढ़ने के कारण वे भी जवाब देने लगे हैं।

पीबीएम हॉस्पिटल में एसी 24 घंटे चलते हैं। हॉस्पिटल में मेडिसिन, सर्जरी सहित विभिन्न विभागों के 12 आईसीयू हैं। इसके अलावा पोस्ट ऑपरेटिव वार्ड और ऑपरेशन थिएटर भी हैं। इस स्थानों पर हर जगह आठ से दस एसी लगे हुए हैं, जो 24 घंटे चलते हैं। मरीज और मशीनों के कारण उन्हें बंद नहीं किया जा सकता। एसी के आउटर छत पर रखे हुए हैं। ईएमडी कर्मचारियों का कहना है कि आउटर भी गर्म हवा फेंकते हैं। टेम्परेचर बढ़ने के कारण उनमें डबल गर्मी हो जाती है, जिससे ए.सी. ट्रिप नहीं करता और उसकी कूलिंग बंद हो जाती है।

आईसीयू में एसी का ध्यान कोई नहीं रखता, जबकि दस ए.सी. हैं तो आधे ए.सी. दिन में और आधे रात में चलाकर मैनेज करना चाहिए। इसी प्रकार डॉक्टर्स, नर्सिंग सुपरवाइजर, मैटर्न, डीसीएनएस, नर्सिंग नेता, नर्सिंग स्कूल, क्लास सभी जगह पर ए.सी. खाली कमरों में भी चलते रहते हैं। यही हालात मेडिकल कॉलेज के हैं। हाल ही में वहां 15 ए.सी. भामाशाह ने दिए हैं, जिनमें से 9 लाइब्रेरी में लगा दिए। बाकी एसी की मांग पीबीएम प्रशासन कर रहा है। भीषण गर्मी में ले लगने के साथ ही खान-पान का ध्यान नहीं रखने के कारण लोग बीमार पड़ने लगे हैं। पीबीएम हॉस्पिटल में मेडिसिन आउटडोर में सोमवार को 800 मरीज पहुंचे, जिनमें से 44 भर्ती किए गए हैं। इनमें आठ-दस उल्टी, दस्त और बुखार के हैं। सोमवार को प्रथम यूनिट का ओपीडी था। इस यूनिट को ई और के वार्ड में 22-22 कुल 44 बैड आवंटित हैं। भर्ती हुए कुछ मरीजों को छुट्टी देने पर भी करीब 15 बैड ही खाली हुए हैं।

फलस्वरूप मरीजों को फर्श पर ही सोना पड़ रहा है। प्रथम यूनिट हैड डॉ. वी.बी. सिंह ने बताया कि गर्मी में लोग लू लगने से बीमार हो रहे हैं। दूसरा कारण बाहर का खाना है। होटल, रेस्टोरेंट, फास्ट फूड के गाड़ों आदि पर खाद्य सामग्री शाम तक खराब हो जाती है। इन दिनों पेयजल को लेकर भी काफी शिकायतें आ रही हैं।

पानी दूषित होने के कारण भी पेट संबंधी विकार हो रहे हैं। इसलिए बर्फ के गोले, आइसक्रीम आदि ठंडी वस्तुएं खाते समय स्थान और क्वालिटी का जरूर ध्यान रखें। उल्टी, दस्त, बुखार की समस्या होने पर तत्काल नजदीक के डॉक्टर को दिखाएं।

अमानक खाद्य पदार्थों के 13 मामलों में जुर्माना

श्रीगंगानगर, (कासं)। मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा एवं जिला कलेक्टर डॉ. मंजू के निर्देशों पर चिकित्सा एवं स्वास्थ्य विभाग की ओर से खाद्य सुरक्षा अधिनियम के तहत लगातार कार्रवाई की जा रही है। सैंपल रिपोर्ट में अमानक पाए गए खाद्य पदार्थों के मामलों में अधिनियम के तहत न्यायालय की ओर से ऐसे 13 संस्थान मालिकों को जुर्माना लगाकर दंडित किया गया है।

सीएमएचओ डॉ. अजय सिंगला ने बताया कि खाद्य सुरक्षा अधिनियम के तहत विभाग लगातार कार्रवाई कर रहा है और अमानक खाद्य पदार्थ बेचने वालों के नाम विभाग सार्वजनिक कर रहा है ताकि आमजन जागरूक हो सकें। वहीं न्यायालय की ओर से भी ऐसे लोगों को दंडित किया जा रहा है। न्यायालय की ओर से पुरानी छोटी धान मंडी स्थित मैसर्स खजान चंद एंड संस की डेयरी क्रीम सब स्टैंडर्ड मिलने पर एक लाख रूपए जुर्माना, पुरानी आबादी वार्ड नंबर नौ टावर रोड स्थित गणेश किराना स्टोर का घी (ॐ कृष्णा ब्रांड) सब स्टैंडर्ड मिलने पर 70 हजार रूपए जुर्माना, सुखाडिया सर्किल मार्ग स्थित होटल खुराना पैलेस का पनीर सब स्टैंडर्ड मिलने पर 15 हजार रूपए जुर्माना, सेंट्रल सिटी मार्किट रीको स्थित हर्ष ट्रेडिंग कंपनी का एडिबल ऑयल (राज किंग ब्रांड) सब स्टैंडर्ड मिलने पर 40 हजार रूपए जुर्माना लगाया गया।

लू के कारण आंगनबाड़ी केन्द्र बंद रहेंगे

श्रीगंगानगर, (कासं)। जिले में पड़ रही भीषण गर्मी और तेज लू के चलते जिला कलेक्टर ने सभी आंगनबाड़ी केन्द्रों को आगामी आदेश तक बंद रखने, 3 से 6 साल तक के बच्चों को केन्द्र नहीं बुलाने, बच्चों को मिलने वाला पोषण राशन अब टेक होम पैकेज के रूप में घर-घर पहुंचाने के आदेश जारी किए हैं।

कलेक्टर डॉ. मंजू ने आदेश जारी कर कहा कि यह कदम बच्चों की सुरक्षा को देखते हुए उठाया गया है। गर्भवती और धात्री महिलाओं को भी समय पर पोषण सामग्री देने के निर्देश दिए गए हैं। पिछले कई दिनों से श्रीगंगानगर समेत उत्तर-पश्चिमी राजस्थान में लू का प्रकोप जारी है। दिन का तापमान 45 डिग्री से ऊपर पहुंच चुका है। ऐसे में छोटे बच्चों का बाहर निकलना जानलेवा हो सकता है।

विशेषज्ञों ने चेतावनी दी है कि आने वाले दिनों में हीटवेव और तेज हो सकती है। प्रशासन ने सभी आंगनबाड़ी कार्यकर्ताओं और सहायिकाओं को निर्देश दिए हैं कि कोई भी बच्चा पोषण लाभ से वंचित न रहे। घर-घर जाकर पोषण सामग्री बांटी जाए। यह आदेश महिला एवं बाल विकास विभाग जयपुर के निर्देश पर जारी किया गया है। श्रीगंगानगर महिला एवं बाल विकास विभाग उपनिदेशक सुमित्रा बिश्नोई सभी संबंधित ब्लॉक अधिकारियों को आदेश की सख्ती से पालना कराने के निर्देश दिए गए है।

श्रीराम जल मंदिर सेवा का उद्घाटन

केईएम रोड़ बाबा शूज शोरूम के आगे विधायक जेठानंद व्यास ने श्रीराम जल मंदिर सेवा का उद्घाटन किया।

बीकानेर, (कासं)। बीकानेर के सेवा भावी सेवादार रामकिशन महाराज कोलासर वाले पिछले 11 वर्षों से लगातार बीकानेर शहर के व्यस्तम मार्ग केईएम रोड़ बाबा शूज शोरूम के आगे आम राहगीरों के लिए 'श्री राम जल मंदिर' के नाम से शीतल पीने के पानी की मई- जून माह के महिनें में सेवा देते आ रहे हैं। इस साल भी20 मई को 12 वीं (श्री राम जल मंदिर) सेवा का शुभारंभ बीकानेर पश्चिम विधायक जेठानंद व्यास द्वारा फीता काट कर किया गया। इस अवसर पर केईएम रोड पर शीतल जल व्यवस्था करने वाले रामकिशन महाराज कोलासर वालों ने प्रेस विज्ञप्ति में बताया कि मई जून माह के भयंकर तपन में राहगीरों के लिए केईएम रोड़ पर मंगलवार को विधिवत श्रीराम मंदिर जल सेवा का उद्घाटन बीकानेर पश्चिम विधायक जेठानंद व्यास द्वारा फीता काट कर किया गया। इस अवसर बीकानेर शहर भाजपा अध्यक्ष सुमन छाजेड़, पूर्व पार्षद सुनील बांठिया, बैंक कर्मचारी नेता सुनील दत्त नागल, समाजसेवी एवं विप्र नेता किसन जोशी, पूर्व पार्षद किसन चौधरी, बीजेपी नेता जोगेंद्र शर्मा, रामकुमार व्यास, जल सेवा व्यवस्थाओं में विशेष सहयोगी सैय्यद अख्तर, शाकिर हुसैन चौपदार, हिम्मत जोशी, श्याम जोशी, देवेश भाटी, ओम जोशी सहित आदि सेवादार मौजूद थे। इस अवसर पर रामकिशन महाराज ने बताया कि ये सेवा हर रोज की सुबह ग्यारह बजे से सांय 6 बजे तक निशुल्क राहगीरों को जल सेवा दी जायेगी। बीकानेर पश्चिम विधायक जेठानंद व्यास ने कहा कि रामकिशन महाराज व उनके साथियों द्वारा समय-समय पर शहर में जल सेवा के कार्यों के अलावा अन्य सेवाएं भी दी जाती आ रही हैं।

मोदी करेंगे 26,000 करोड़ की परियोजनाओं का शिलान्यास

- 1300 से अधिक स्टेशनों को आधुनिक सुविधाओं के साथ पुनर्विकसित करेंगे

बीकानेर,(कासं)। प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी 22 मई को राजस्थान के दौरे पर बीकानेर आयेंगे और सुबह करीब 11 बजे देशनोक स्थित करणी माता मंदिर में दर्शन करेंगे। इसके अलावा, प्रधानमंत्री सुबह लगभग 11:30 बजे अमृत भारत स्टेशन योजना के तहत पुनर्विकसित देशनोक स्टेशन का उद्घाटन करेंगे और बीकानेर-मुंबई एक्सप्रेस ट्रेन को हरी झंडी दिखायेंगे।

इसके बाद प्रधानमंत्री 26,000 करोड़ रूपये से अधिक की लागत वाली कई विकास परियोजनाओं का शिलान्यास और उद्घाटन कर राष्ट्र को समर्पित करेंगे और पलाना में एक सार्वजनिक समारोह को भी संबोधित करेंगे। प्रधानमंत्री देश में रेल अवसंरचना को निरंतर बेहतर बनाने की अपनी प्रतिबद्धता के अनुरूप, 18 राज्यों और केंद्र शासित प्रदेशों के 86 जिलों में 1,100 करोड़ रुपये से अधिक की लागत से 103 पुनर्विकसित अमृत स्टेशनों का उद्घाटन करेंगे। अमृत भारत स्टेशन योजना के तहत 1300 से अधिक स्टेशनों को आधुनिक सुविधाओं के साथ पुनर्विकसित किया जा रहा है, जिन्हें क्षेत्रीय वास्तुकला को प्रतिबिंबित करने और यात्री सुविधाओं को बढ़ाने के लिए डिज़ाइन किया गया है।

करणी माता मंदिर में आने वाले तीर्थ यात्रियों और पर्यटकों की सेवा करने वाला देशनोक रेलवे स्टेशन मंदिर वास्तुकला, मेहराब और स्तंभ विषय वस्तु से प्रेरित है। तेलंगाना में बेगमपेट रेलवे स्टेशन काकतीय साम्राज्य की वास्तु कला से प्रेरित है। बिहार में थावे स्टेशन में 52 शक्तिपीठों में से एक मां थावेवाली का प्रतिनिधित्व करने वाले विभिन्न भित्ति चित्र और कलाकृतियां शामिल हैं और मधुबनी पेंटिंग को भी दर्शाया गया है। गुजरात का डाकोर स्टेशन रणछोड़राय जी महाराज से प्रेरित है।

देश भर में पुनर्विकसित अमृत स्टेशनों में सांस्कृतिक विरासत के साथ आधुनिक बुनियादी ढांचे, दिव्यांगजनों के लिए यात्री-केंद्रित सुविधाओं और यात्रा के अनुभव को बेहतर करने के लिए टिकाऊ प्रथाओं को एकीकृत किया गया है। भारतीय रेलवे अपने नेटवर्क के 100 प्रतिशत विद्युतीकरण की ओर अग्रसर है, जिससे रेलवे संचालन अधिक कुशल और पर्यावरण अनुकूल बन रहा है।

इसी क्रम में प्रधानमंत्री चूरू-सादुलपुर रेल लाइन (58 किलोमीटर) और सूरतगढ़-फलोदी (336 किलोमीटर) फुलेरा-डेगाना (109) उदयपुर-हिम्मतनगर (210 किलोमीटर) फलोदी-जैसलमेर की आधारशिला रखेंगे।

निगम कार्मिक व चालकों से मारपीट

बीकानेर, (कासं)। नगर निगम के सफाईकर्मी और जेसीबी-डंपर चालकों से मारपीट का मामला कोटगेट पुलिस थाने में दर्ज किया गया है।

गंगाशहर में वाल्मीकि बस्ती निवासी नगर निगम में जमादार सफाईकर्मी ब्रह्मानंद राय की ओर से पुलिस को दी गई रिपोर्ट में बताया गया है कि उसकी ड्यूटी वार्ड नंबर 77 में है। शाम को 4.45 बजे वह सफाई कार्य के लिए जेसीबी ड्राइवर मोहनलाल वाल्मिकी और डंपर ड्राइवर केशरीचंद वाल्मीकि के साथ कचरा उठाने रोशनी चौराहे से बड़ी गुवाड़ में सामुदायिक भवन जा रहा था। रास्ते में महेश कुमार मोची के मकान का निर्माण कार्य चल रहा था। उसने बल्लियां लगा रखी थी जिससे जेसीबी और डंपर निकलना मुश्किल था। उसे हटाने के लिए कहा तो वह धक्का मुक्की और गाली-गलौज करने लगा। उसने अपने भाई और भतीजे सन्नी के साथ मिलकर मिलकर मारपीट की। मामले की जांच एएसआई जिलेसिंह को सौंपी गई है।

पीबीएम में 85 यूटीबी नर्सेज का हटना तय

- अर्जेन्ट टेम्परेरी बेस (यूटीबी) पर कार्यरत नर्सिंग ऑफिसर्स आमने-सामने हो गए
- दिनभर चले हंगामा होता रहा लेकिन कोई हल नहीं निकला

बीकानेर, (कासं)। पीबीएम हॉस्पिटल और एसपी मेडिकल कॉलेज में अर्जेन्ट टेम्परेरी बेस (यूटीबी) पर कार्यरत नर्सिंग ऑफिसर्स आमने-सामने हो गए। दिनभर चले हंगामा होता रहा लेकिन कोई हल नहीं निकला।

पीबीएम हॉस्पिटल में पिछले कई दिनों से नए नर्सिंग ऑफिसर्स की ज्वाइनिंग का काम चल रहा है। वर्तमान में 85 पद ही खाली हैं, जिन पर यूटीबी नर्सेज कार्यरत हैं। इन पदों के विपरीत चिकित्सा एवं स्वास्थ्य विभाग ने 96 नए नर्सिंग ऑफिसरों की सूची भेज दी है। इससे 85 यूटीबी नर्सेज का हटना तय हो गया है। रोज 10-11 की ज्वाइनिंग हो रही है। यूटीबी को हटना प्रशासन के लिए बड़ी परेशानी बन गया है।

सरप्लस होने वालों को मेडिकल कॉलेज के लिए रिलीव किया जा रहा था, लेकिन अब प्रिंसिपल ने ऐसा करने से अधीक्षक को मना कर दिया है। क्योंकि कॉलेज के पास पद ही खाली नहीं है।

सरप्लस को एडजस्ट करने के चक्कर में पहले से काम कर रहे यूटीबी नर्सेज को हटना पड़ेगा। इसे लेकर यूटीबी के ही दो गुट बन गए। प्रिंसिपल के समक्ष दोनों ही आमने-सामने हो गए। दिन भर हंगामा होता रहा। प्रिंसिपल डॉ. गुंजन सोनी ने दोनों ही पक्षों को समझाने का प्रयास किया लेकिन दोनों ही अपनी-अपनी मांग पर अड़े रहे। एक पक्ष वहीं पर धरने पर बैठ गया। अंत में प्रिंसिपल को कक्ष से उठकर जाना पड़ा।

तैराकी 25 से

बीकानेर, (कासं)। जिला तैराकी संघ बीकानेर के अध्यक्ष हीरालाल हर्ष ने बताया कि सत्र 2025 की राज्य स्तरीय सीनियर तैराकी प्रतियोगिता 25 मई से सवाई मानसिंह स्टेडियम जयपुर में आयोजित होगी। इस प्रतियोगिता में बीकानेर जिले की टीम भी भाग लेगी। संघ के सचिव शशांक शेखर जोशी ने बताया कि जिला स्तरीय सीनियर, जूनियर व सब जूनियर तैराकी प्रतियोगिता का आयोजन होगा।

एस.के.फाइनेंस लिमिटेड
(CIN : U65923RJ1994PLC009051)
पंजीकृत कार्यालय: जी 1-2, न्यू मार्केट, खासा कोठी सर्किल, जयपुर- 302001 टोल फ्री: 1800 1039 039
ई-मेल: info@sfkin.in

शाखा कार्यालय स्थानान्तरण करने हेतु सार्वजनिक सूचना

सर्वसूचित किया जाता है कि कम्पनी प्रबंधक के निर्णयानुसार हम अपनी **महाजन शाखा** को नये पते पर स्थानान्तरित कर रहे हैं:-
पुराना पता- पहला फ्लोर, बाबा रामदेव होटल के सामने, एनएच-62, सूरतगढ़ रोड, महाजन, तहसील-लूनकरनसर, जिला-बीकानेर-334604 (राजस्थान)
नया पता- ग्राउंड फ्लोर, वार्ड नं.-14, एनएच 62, बाबा रामदेव होटल के सामने, महाजन, जिला बीकानेर-334604 (राजस्थान)
अतः हम अपने सभी ग्राहकों से अनुरोध करते है कि भविष्य में हमारी किसी भी तरह की लोन सुविधाओं के लिए हमारे नये पते पर संपर्क करें।

कार्यालय प्राधिकृत अधिकारी, नगर विकास न्यास, श्रीगंगानगर

क्रमांक :- LU2012/SGN/2025-26/101359 **लोक सूचना** दिनांक : 16.05.2025

श्री नितिन कुमार पुत्र श्री श्याम लाल निवासी आरजी-08 रिद्धि सिद्धि एन्कलेव, श्रीगंगानगर ने इस कार्यालय में नीचे उल्लिखित भूमि का व्यावसायिक प्रयोजनार्थ के उपयोग हेतु ऐसी भूमि के अपने अभिधृति अधिकारों के निर्वापन के लिए आवेदन प्रस्तुत किया है, अर्थात् :-

क्र. सं.	ग्राम तहसील व जिले का नाम	खातेदार का नाम	खसरा सं./भूमि का विवरण	क्षेत्रफल (हैक्टेयर)
1	चक 16 एमएल तहसील व जिला श्रीगंगानगर	श्री नितिन कुमार पुत्र श्री श्याम लाल	चक 16 एमएल मुरब्बा नं. 35 के किला नं. 18/8 में 0.0580 है. यथाकुल 0.0580 हैक्टेयर	कुल 0.0580 हैक्टेयर

इसलिए, इसके द्वारा समस्त संबंधित व्यक्तियों को सूचित किया जाता है कि यदि किसी व्यक्ति को राजस्थान भू-राजस्व अधिनियम, 1956 की धारा 90-क और राजस्थान अभिधृति अधिनियम, 1955 की धारा 63 के अधीन पूर्वोक्त प्रयोजनों के लिए भूमि के उपयोग हेतु अनुज्ञा प्रदान करने और अभिधृति अधिकारों के निर्वापन पर कोई आक्षेप है तो वह इस नोटिस के प्रकाशन के 7 दिन के भीतर-भीतर एसएसओ आईडी से लॉग इन कर 90-A For Development Authority (UDH) आईकॉन पर जाकर समर्थक दस्तावेज को अपलोड कर अपना आक्षेप दर्ज कर सकते है। उपर्युक्त नियम समय के भीतर-भीतर किसी आक्षेप के अभाव में यह समझा जायेगा कि किसी को आक्षेप नहीं है और तद्नुसार मामले का निपटारा किया जायेगा। यह सूचना मेरे हस्ताक्षर और मुहर के अधीन आज 16.5.2025 को जारी की गयी। - प्राधिकृत अधिकारी, नगर विकास न्यास, श्रीगंगानगर

कार्यालय प्राधिकृत अधिकारी, नगर विकास न्यास, श्रीगंगानगर

क्रमांक :- LU2012/SGN/2025-26/101358 **लोक सूचना** दिनांक : 16.05.2025

श्री विपिन कुमार पुत्र श्री श्याम लाल निवासी 01 ए 08, जवाहर नगर, श्रीगंगानगर ने इस कार्यालय में नीचे उल्लिखित भूमि का व्यावसायिक प्रयोजनार्थ के उपयोग हेतु ऐसी भूमि के अपने अभिधृति अधिकारों के निर्वापन के लिए आवेदन प्रस्तुत किया है, अर्थात् :-

क्र. सं.	ग्राम तहसील व जिले का नाम	खातेदार का नाम	खसरा सं./भूमि का विवरण	क्षेत्रफल (हैक्टेयर)
1	चक 16 एमएल तहसील व जिला श्रीगंगानगर	श्री विपिन कुमार पुत्र श्री श्याम लाल	चक 16 एमएल मुरब्बा नं. 35 के किला नं. 11/7 में 0.0323 है. किला नं. 12/10 में 0.0290 है. यथाकुल 0.0613 हैक्टेयर	कुल 0.0613 हैक्टेयर

इसलिए, इसके द्वारा समस्त संबंधित व्यक्तियों को सूचित किया जाता है कि यदि किसी व्यक्ति को राजस्थान भू-राजस्व अधिनियम, 1956 की धारा 90-क और राजस्थान अभिधृति अधिनियम, 1955 की धारा 63 के अधीन पूर्वोक्त प्रयोजनों के लिए भूमि के उपयोग हेतु अनुज्ञा प्रदान करने और अभिधृति अधिकारों के निर्वापन पर कोई आक्षेप है तो वह इस नोटिस के प्रकाशन के 7 दिन के भीतर-भीतर एसएसओ आईडी से लॉग इन कर 90-A For Development Authority (UDH) आईकॉन पर जाकर समर्थक दस्तावेज को अपलोड कर अपना आक्षेप दर्ज कर सकते है। उपर्युक्त नियम समय के भीतर-भीतर किसी आक्षेप के अभाव में यह समझा जायेगा कि किसी को आक्षेप नहीं है और तद्नुसार मामले का निपटारा किया जायेगा। यह सूचना मेरे हस्ताक्षर और मुहर के अधीन आज 16.5.2025 को जारी की गयी। - प्राधिकृत अधिकारी, नगर विकास न्यास, श्रीगंगानगर

48 घंटे बाद शोभासर जलाशय में आयेगा पानी

- हरिके बैराज से 11 मई को खत्म की गई नहरबंदी के बाद 18 मई तक पूरे नहरी क्षेत्र में पानी पहुंचना चाहिए था जो अब 22 मई तक पहुंचेगा

बीकानेर, (कासं)। यहां हरिके बैराज से पानी अब बढ़कर 3500 क्यूसेक हो गया। पहले से धीरे-धीरे चलकर आए पानी को जब पीछे से बढ़े हुए पानी की ठोकर मिली तो उसने गति पकड़ ली। शोभासर जलाशय तक पानी आने में अभी भी 48 घंटे लगेंगे। यानी 21 की शाम तक पानी आयेगा। पानी 22 से 23 मई के बीच तक जोधपुर और बाड़मेर तक पहुंचेगा।

इसके बावजूद हरिके से 11 मई को खत्म की गई नहरबंदी के बाद 18 मई तक पूरे नहरी क्षेत्र में पानी पहुंचना चाहिए था जो अब 22 मई तक पहुंचेगा। दरअसल 10 मई को जब नहरबंदी खत्म करने का ऐलान हुआ और 11 मई को हरिके बैराज से पानी छोड़ भी दिया गया। शुरूआत तो ठीक की मगर 24 घंटे में ही पानी 1000 क्यूसेक तक ही रह गया। सूखी नहर में 1000 क्यूसेक पानी तले में रह गया और आगे बढ़ने में उसने रफ्तार नहीं पकड़ी। ऐसे हालात 15 मई तक रहे। 15 के बाद जब राजस्थान का दबाव पड़ा तो पंजाब ने भाखड़ा डैम से 3500 क्यूसेक पानी लिया। वो पानी सतलुज नदी होते हुए जब हरिके पर पहुंचा तो पंजाब ने हरिके से आईजीएनपी में पानी बढ़ाया। अब जाकर पानी 3500 क्यूसेक हुआ।

गाय से अनैतिक कार्य, केस दर्ज

बीकानेर, (कासं)। यहां केजी काम्पलैक्स के पास गाय से अनैतिक काम करने और धार्मिक उन्माद फैलाने के प्रयास का आरोप लगाते हुए कोटगेट पुलिस थाने में केस दर्ज कराया गया है।

गंगाशहर में ललवानी मोहल्ला निवासी और युवा गौ सेवा समिति के अध्यक्ष धनपत मारू की ओर से पुलिस को दी गई रिपोर्ट में बताया गया है कि नवाब गौवंश के साथ अनैतिक काम कर रहा था। मोहल्ले के लोग पहुंचे तो वह फरार हो गया।

सीसीटीवी फुटेज में घटनाक्रम आया है। आरोपी ने गाय के साथ दुष्कर्म किया और धार्मिक उन्माद पैदा करने का प्रयास किया। एसएचओ विश्वजीत सिंह ने बताया कि मुकदमा दर्ज कर लिया है।

गोगागेट स्थित पशु चिकित्सालय में गाय का मेडिकल मुआयना करवाया गया है। आरोपी की तलाश की जा रही है।

बीकानेर से चलने वाली ए.सी. बसों का संचालन ठप

- जयपुर-जोधपुर जाने वाले यात्रियों को दूसरी बसों में किया शिफ्ट

बीकानेर, (कासं)। लगातार तकनीकी खामियों के कारण यात्रियों को रोडवेज बस स्टैंड पहुंचने के बाद ही पता चलता है कि उनकी बस रद्द कर दी गई है। यह स्थिति यात्रियों में असंतोष और भ्रम पैदा कर रही है। कई बार यात्रियों को वैकल्पिक साधन ढूंढने पड़ते हैं जिससे उनकी यात्रा असुविधाजनक और महंगी हो जाती है।

पूर्व रोडवेज अधिकारियों के अनुसार बीते वर्ष अनुबंध पर ली गई एसी बसों के चयन और संचालन प्रक्रिया में कई नियमों को दरकिनार किया गया था। इन बसों में बैठने की क्षमता सीमित होने के बावजूद इन्हें महंगी दरों पर अनुबंधित किया गया। न केवल बीकानेर बल्कि पूरे राजस्थान से इन बसों में बार-बार तकनीकी खराबी की शिकायतें मिल रही है।

यहां से जयपुर और जोधपुर के बीच चलने वाली रोडवेज से अनुबंधित वातानुकूलित बसों की तकनीकी खामियों का सिलसिला थमने का नाम नहीं ले रहा है। एक बार फिर इन दोनों रूट की बसों के एसी ने काम करना बंद कर दिया, जिससे यात्रियों को भारी दिक्कतों का सामना करना पड़ा। से जयपुर के लिए दोपहर 1:45 बजे और जोधपुर के लिए सुबह 11 बजे रवाना होने वाली अनुबंधित एसी बसों की एयर कंडीशनिंग प्रणाली ने काम करना बंद कर दिया। इस वजह से यात्रियों को या तो टिकट रिफंड करवाना पड़ा या दूसरी बसों में स्थानांतरित होना पड़ा।

यह पहली बार नहीं है, इससे पहले भी जयपुर रूट की एसी बस में तकनीकी खराबी के चलते दूसरी बस को भेजना पड़ा था। आगार की मुख्य प्रबंधक इंदिरा गोदारा ने बताया कि जोधपुर जाने वाली बस को ठीक होने में कुछ दिन लग सकते हैं। जबकि जयपुर रूट की बस एक-दो दिन में फिर से संचालन में आ सकती है।

उन्होंने गर्मी को तकनीकी खराबी का एक संभावित कारण बताया है। अनुबंध शर्तों की पुनः समीक्षा होनी चाहिए,अनुबंधित बसों के चयन के मानकों को तकनीकी रूपसे मजबूत करना चाहिए। संचालन से पूर्व प्रत्येक बस की एसी प्रणाली सहित तकनीकी जांच अनिवार्य की जानी चाहिए। तय समयपर मेंटेनेंस की निगरानी होनी चाहिए।

राजस्थान राजपत्र विशेषांक | **RAJASTHAN GAZETTE Extraordinary**

साधिकार प्रकाशित | **Published by Authority**

वैशाख 05, शुक्रवार, शाके 1947- अप्रेल 25, 2025
Vaisakha 05, Friday, Saka 1947- April 25, 2025

भाग-1 (ख)

महत्वपूर्ण सरकारी आज्ञायें।

सार्वजनिक निर्माण विभाग

अधिसूचना

जयपुर, अप्रेल 07, 2025

(अतंर्गत भूमि अर्जन, पुनर्वासन और पुनर्व्यवस्थापन में उचित प्रतिकर और पारदर्शिता अधिकार अधिनियम 2013 की धारा 4(1))

Rajkaj 14635565 :- राजस्थान के राज्यपाल द्वारा भूमि अर्जन, पुनर्वासन और पुनर्व्यवस्थापन में उचित प्रतिकर और पारदर्शिता अधिकार अधिनियम 2013 के तहत् राजस्थान भूमि अर्जन, पुनर्वासन और पुनर्व्यवस्थापन में उचित प्रतिकर और पारदर्शिता अधिकार नियम 2016 के प्रावधान अनुसार एवं राजस्थान सरकार के राजस्व (ग्रुप-6) विभाग के परिपत्र क्रमांक प. 1 (150) राज-6/2016/02 दिनांक 27/01/2017 के निर्देशानुसार केन्द्रिय सड़क एवं आधारभूत संरचना निधि (सी.आर.आई.एफ) की परियोजना सेतु बंधन के अन्तर्गत स्वीकृत रेलवे ओवर ब्रिज (आर.ओ.बी) बीकानेर LC No. 147 Block Section Kanasar- Lalgarh विकसित किये जाने के प्रयोजन से जिला बीकानेर की तहसील बीकानेर में निम्नानुसार प्रभावित गांव में भूमि अर्जन प्रस्तावित हैः-

क्रम संख्या	जिला	तहसील	राजस्व ग्राम/नगर का नाम
1	2	3	4
1	बीकानेर	बीकानेर	कानासर

परियोजना हेतु नियमानुसार सामाजिक समाघात निर्धारण हेतु सार्वजनिक निर्माण विभाग द्वारा सामाजिक आर्थिक विकास समिति, अधिषाशी अभियन्ता सार्वजनिक निर्माण विभाग जिला खण्ड प्रथम बीकानेर, (राजस्थान) एजेंसी का चयन किया गया है।

उपर्युक्त चयनित संस्था द्वारा परियोजना हेतु प्रस्तावित भू-अर्जन से प्रभावित गांवों में सामाजिक समाघात निर्धारण राजस्थान भूमि अर्जन, पुनर्वासन और पुनर्व्यवस्थापन में उचित प्रतिकर और पारदर्शिता अधिकार नियम 2016 के प्रावधानानुसार किया जायेगा। सामाजिक समाघात निर्धारण की प्रक्रिया निम्नानुसार होगी :-

1. संस्था द्वारा परियोजना हेतु प्रस्तावित भू-अर्जन से प्रभावित व्यक्तियों का विवरण तैयार कर सामाजिक समाघात निर्धारण की प्रारूप रिपोर्ट तैयार की जावेगी।
2. प्रारूप रिपोर्ट की प्रति प्रभावित गांवों में समुचित स्थान पर प्रदर्शित की जावेगी। तत्पश्चात प्रभावित गांवों में पर्याप्त प्रचार प्रसार के उपरान्त जन सुनवाई की जावेगी, जिसकी कार्यवाही विवरण समुचित रूप से रिकॉर्ड किया जावेगा।
3. जन सुनवाई के दौरान आये सुझाओं/आपत्तियों के समुचित समाधान को शामिल कर सामाजिक समाघात निर्धारण रिपोर्ट एवं सामाजिक समाघात प्रबंध योजना रिपोर्ट तैयार की जावेगी।
4. सामाजिक समाघात निर्धारण की प्रक्रिया प्रभावित गांवों में सम्बन्धित ग्राम पंचायत/ नगरपालिका के परामर्श से की जावेगी।
5. सार्वजनिक निर्माण विभाग माध्यम के तहत विकसित किये जाने वाली परियोजनाओं हेतु अधिनियम की धारा 2(2)() (पप) के प्रावधानानुसार प्रभावित परिवारों की सहमति आव यक होगी।
6. सामाजिक समाघात मूल्यांकन के दौरान किसी भी प्रकार के बल प्रयोग या धमकी का प्रयत्न इस कवायद को अंकृत और शून्य बना देगा।
7. सामाजिक समाघात निर्धारण प्रक्रिया को इस अधिसूचना की तिथि से अधिकतम 6 माह की अवधि से पूर्ण / सम्पूर्ण कराया जाना आव यक है।

सम्पर्क सूत्रः-
सामाजिक समाघात निर्धारण इकाई
अधिषाशी अभियन्ता
सार्वजनिक निर्माण विभाग
जिला खण्ड प्रथम बीकानेर (राजस्थान)
फोन नं. 9414271363
सामाजिक समाघात निर्धारण एजेन्सी
सामाजिक आर्थिक विकास समिति
अधिषाशी अभियन्ता
सार्वजनिक निर्माण विभाग
जिला खण्ड प्रथम बीकानेर (राजस्थान)
फोन नं. 9414271363 DIPR/C/6232/2025

आर.के. लूथरा,
संयुक्त सचिव (पथ),
सार्वजनिक निर्माण विभाग,
राजस्थान, जयपुर

करूणा क्लब टीम की बालिकाओं ने घायल कबूतर की जान बचाई

- कबूतर को स्थानीय पशु चिकित्सालय गोगागेट में सौंपा

करुणा क्लब टीम की बालिका मानवी सोलंकी और शैली सोलंकी ने मांझे से घायल कबूतर का इलाज कर जान बचाई।

बीकानेर, (कासं)। जहां एक और सभी विद्यालयों में ग्रीष्मकालीन अवकाश चल रहा है वहीं शीतला गेट स्थित शांति विद्या निकेतन माध्यमिक विद्यालय के बच्चे भी अपने मौज मस्ती के माहौल और व्यस्तता के साथ साथ शाला की करूणा क्लब और स्काउट- गाइड टीम नियमितता से अपने करूणा, जीव दया, सेवा कार्यों के लिए अनवरत जागृत है।

इसी के चलते हमारी शाला की करूणावान गाइड मानवी सोलंकी और शैली सोलंकी सुबह सुबह अपने परिवारजनों के साथ मॉर्निंग वॉक से वापस घर आ रही थी कि अचानक मांझे से लटका हुआ कबूतर दिखाई दिया। मानवी सोलंकी ने तुरन्त अपने परिवारजन की सहायता से लटक रहे कबूतर को निकलवाया और तुरन्त प्रभाव से शाला के कब मास्टर रमेश कुमार मोदी को फोन करके घायल कबूतर की सहायता करने की सूचना दी। कुछ ही देर में शाला के कब मास्टर रमेश कुमार मोदी, प्रधानाध्यापक हनुमान छींपा एवं शाला के करूणा क्लब प्रभारी सौरभ बजाज द्वारा शाला की करूणावान गाइड मानवी सोलंकी और शैली सोलंकी ने शाला में पहुंच कर कबूतर को उलझे हुए मांझे से निजात दिलाकर उसके कटे हुए घाव पर मेडिसिन स्प्रे किया। परन्तु घाव अधिक होने के कारण कबूतर उड़ने योग्य ना होने के कारण से कबूतर को स्थानीय पशु चिकित्सालय, गोगागेट में पशु चिकित्सालय कर्मचारी सुमित पुरोहित को सौंप दिया।

इस प्रकार ग्रीष्मावकाश में भी करूणावान मानवी सोलंकी और शैली सोलंकी की सहायता से एक कबूतर को जीवनदान मिला। हमारी शाला की करूणा क्लब टीम हर वक्त ऐसे सेवा कार्यों के लिए निरन्तर तत्पर रहती हैं। अंत में शाला के करुणा क्लब प्रभारी सौरभ बजाज ने करूणा क्लब टीम की बालिकाओं का आभार प्रकट किया।

मुख्यमंत्री का बीकानेर दौरा आज से

बीकानेर, (कासं)। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के 22 मई को बीकानेर दौरे की तैयारियों को लेकर मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा दो दिन बीकानेर दौरे पर रहेंगे।

शहर जिलाध्यक्ष सुमन छाजेड़ ने बताया कि मुख्यमंत्री कल 2:30 बजे बीकानेर पहुंचेंगे। बीकानेर में प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी दौरे को लेकर लगातार बैठके करेंगे ओर देशनोक करणी माता के मंदिर सभा स्थल का दौरा करेंगे। 22 को प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के साथ सभी कार्यक्रम में भाग लेंगे। वहीं राज्यपाल हरिभाऊ बागडे 22 मई को बीकानेर आएंगे। बागडे जयपुर से वायु मार्ग से रवाना होकर प्रातः 9:30 बजे नाल एयरपोर्ट पहुंचेंगे। राज्यपाल यहां से 9.35 बजे सड़क मार्ग से रवाना होकर 10.35 बजे देशनोक पहुंचेंगे तथा प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के प्रस्तावित कार्यक्रमों में शामिल होंगे। बागडे यहां से 12 बजे नाल एयरपोर्ट के लिए प्रस्थान करेंगे।

मैं अगले महीने इंग्लैंड दौरे पर जाना चाहता था, जहां भारत को अंग्रेजों के खिलाफ 5 टेस्ट मैचों की सीरीज खेलनी है।

- रोहित शर्मा

भारतीय क्रिकेटर, संन्यास को लेकर जवाब देते हुए।

खेल जगत

आज का खिलाड़ी ▶ **डॉ. मनसुख मांडविया**

केंद्रीय युवा मामले और खेल मंत्री डॉ. मनसुख मांडविया ने कहा कि हम खेलो इंडिया बीच गेम्स के जरिए स्पोर्ट्स क्रांति की शुरुआत कर रहे हैं। डॉ. मांडविया ने सोमवार को दीव के घोघला बीच पर एक रंगारंग समारोह में केआईबीजी खेलों की शुरुआत करते हुए कहा, आज हम केवल एक खेल आयोजन का उद्घाटन नहीं कर रहे हैं, बल्कि हम भारत की पहली बीच स्पोर्ट्स क्रांति की शुरुआत कर रहे हैं। मेरा मानना है कि जहाँ लहरें हैं, वहाँ जोश होना चाहिए। जहाँ रेत है, वहाँ जोश की आग होनी चाहिए और खेलो इंडिया बीच गेम्स ने आज हम सभी के दिलों में वह आग जला दी है।

क्या आप जानते हैं ?... कोहली ने 2016 सीजन में 4 शतक और 7 अर्धशतक लगाकर 973 रन बनाए थे। यह किसी भी बल्लेबाज द्वारा एक आईपीएल सीजन में सबसे ज्यादा रन का रिकॉर्ड है।

राहुल चौधरी के शतक से जीता जयपुर

जयपुर, 20 मई। जयपुर जिला क्रिकेट संघ द्वारा आयोजित एकदिवसीय सीरीज के तहत श्री गंगानगर खेले गए दूसरे मैच में जयपुर बी टीम ने श्री गंगानगर को 3 विकेट से हराया। के एल सैनी स्टेडियम पर श्री गंगानगर ने टॉस जीतकर

पहले बल्लेबाजी करते हुए राहुल गर्ग के 15 रन, सुमित गोदारा के 15 रन, अंकुर शर्मा के 24 रन, शोभित मिश्रा के 54 रन ओशनिक ग्रोवर के 36 रन व के तेजेंद्र सिंह के 60 रन से 44.2 ओवर में 245 रन बनाए। जयपुर के लिए चिराग शर्मा 32 पर 3, पूरव शर्मा ने 51 पर 2, मिहित अग्रवाल ने 42 पर 2 व आयुष आमेरिया ने 21 पर 2 विकेट लिए। जवाबी पारी में जयपुर की टीम ने भावित कुमावत के 20 रन, आयुष आमेरिया के 38 रन, राहुल चौधरी के 103 रन, अभय शर्मा के 12 रन, शुभम पटवाल के 31 रन नाबाद व चिराग शर्मा के नाबाद 14 रनों से 41.5 ओवर में 7 विकेट पर 246 रन बनाकर मैच जीत लिया। श्री गंगानगर टीम के लिए हितेश ने 34 पर 2, हिमांशु ने 49 पर 2, धनंजय , मंथन व हिमांशु ने एक - एक विकेट लिया। कल उदयपुर की टीम जयपुर की ए टीम के साथ के एल सैनी स्टेडियम पर मैच खेलेगी।

अंडर-19 नंद सिंह मेमोरियल क्रिकेट लीग : मनय कटारिया का शानदार अर्द्धशतक राजीव गांधी फाइनल में

जयपुर, 20 मई। 17वी अंडर-19 राज्य स्तरीय नन्द सिंह मेमोरियल क्रिकेट लीग में आज नारायणा ग्राउंड पर खेले गए संघर्षपूर्ण मैच में राजीव गांधी ने भदौरिया एकेडमी को 1 विकेट से हराकर फाइनल में प्रवेश किया। टॉस जीतकर भदौरिया एकेडमी ने पहले बल्लेबाजी करते हुए शिवांशु सोनी 53, हार्दिक गौड 69, अशाद सिद्दीकी 42, ऋतिक 41, शिवम् उमेश 23 के सहयोग से 9 विकेट पर 50 ओवर में 278 रन बनाए। राजीव गांधी की ओर से श्यामसुंदर 3 , आयुष गुर्जर 2 , लक्ष्य वैष्णव, देवांग, मनय कटारिया, दीपांशु राजौरिया ने 1 -1 विकेट लिए। लक्ष्य का पीछा करते राजीव गांधी एकेडमी ने मनय कटारिया की शानदार जुझारू पारी खेलते हुए 80 रन बनाए। शफान खान 40, निशांत गुर्जर 29, अक्षत चंदवाल 25, श्यामसुंदर 21, आयुष गुर्जर 15 रनों के सहयोग से 9 विकेट पर 280 रन बनाए। भदौरिया की ओर से गेंदबाजी करते हुए चिराग तंवर 3, केशव 2, निखिल सिंह , शिवांशु ने 1-1 लिए। आज के मैच के मैन ऑफ द मैच मनय कटारिया रहे।

पेंचक सिलाट में दमन और दीव ने जीते दो स्वर्ण पदक

दीव, 20 मई। मेजबान दादरा और नगर हवेली तथा दमण और दीव ने खेलो इंडिया बीच गेम्स के पहले संस्करण के दूसरे दिन मंगलवार को पेंचक सिलाट प्रतियोगिता में शानदार प्रदर्शन करते हुए दो स्वर्ण अपने नाम किए। पेंचक सिलाट इंडोनेशिया की एक पारंपरिक मार्शल आर्ट शैली है।दमन और दीव के प्रसन्ना नरेंद्र बेंद्रे ने सीनियर पुरुष 'तुंगल' (कलात्मक) वर्ग में स्वर्ण पदक जीता, जबकि महिला वर्ग में मेजबान टीम की कीर्तन मनोजकुमार आचार्य ने भी स्वर्ण पदक अपने नाम किया। घोघला बीच पर सुबह के सत्र में पेंचक सिलाट की एक और कलात्मक स्पर्धा में पंजाब के आर्यन ने सीनियर पुरुष 'क्रिएटिव सोलो' वर्ग में स्वर्ण पदक जीता। उन्होंने ओडिशा के सोहिल गुरुंग को हराया। बीच सॉकर प्रतियोगिता की शुरुआत सोमवार को हुई थी, जिसमें पुरुष और महिला वर्गों के ग्रुप मुकाबले एकतरफा रहे। लक्षद्वीप की पुरुष टीम ने गुजरात को 19-1 से हराकर प्रतियोगिता की अब तक की सबसे बड़ी जीत दर्ज की।

किदांबी श्रीकांत ने किया मलेशिया मास्टर्स के मुख्य ड्रॉ के लिए क्वालीफाई

बुकिट जलील (मलेशिया), 20 मई। भारतीय बैडमिंटन स्टार किदांबी श्रीकांत ने मंगलवार को मलेशिया मास्टर्स 2025 बैडमिंटन टूर्नामेंट में पुरुष एकल वर्ग में मुख्य ड्रॉ के लिए क्वालीफाई किया। आज यहां स्टेडियम एक्सियाटा एरिना केएल स्पोर्ट्स सिटी में खेले गये मुकाबले में किदांबी श्रीकांत ने चीनी ताइपे के शटलर कुओ कुआन-लिन और हुआंग यू काई को हराकर मुख्य ड्रॉ में जगह बनाई। काबिज किदांबी श्रीकांत ने 29 मिनट तक चले मुकाबले में चीनी ताइपे के कुओ कुआन-लिन को 21-8, 21-13 से हराकर आसान जीत दर्ज की। श्रीकांत का दूसरा क्वालीफाइंग मैच दुनिया के 86वें नंबर के खिलाड़ी हुआंग यू काई के खिलाफ थोड़ा अधिक चुनौतीपूर्ण था। भारतीय बैडमिंटन खिलाड़ी ने पहला गेम गंवा दिया, लेकिन अगले दो गेम में वापसी करते हुए मैच 9-21, 21-12, 21-16 से जीत लिया और मुख्य ड्रॉ में जगह बनाई। पुरुष एकल क्वालीफायर में भारत के अन्य दो खिलाड़ी बाहर हो गए। थारुन मन्नेपल्ली को थाईलैंड के पैनिचाफोन तीरात्सकुल ने 21-13, 23-21 से हराया, जबकि शंकर सुब्रमण्यन ने संघर्ष किया, लेकिन उन्हें चीन के जुआन चेन झू ने 22-20, 22-20 से हार का सामना करना पड़ा। वहीं महिला एकल वर्ग में भारत की अनमोल खरब क्वालीफायर में चीनी ताइपे की हंग यी-टिंग के खिलाफ 21-14, 21-18 से हार गई।

राजस्थान रॉयल्स ने चेन्नई सुपर किंग्स को छह विकेट से हराया

नई दिल्ली, 20 मई। युद्धवीर सिंह चरक और आकाश मधवाल (तीन-तीन विकेट) के बाद वैभव सूर्यवंशी (57) और कप्तान संजू सैमसन (41) रनों पारियों के दम पर राजस्थान रॉयल्स ने मंगलवार को इंडियन प्रीमियर लीग (आईपीएल) 2025 के 63वें मुकाबले में चेन्नई सुपर किंग्स को 17 गेंदे शेष रहते छह विकेट से हराया।

188 रनों के लक्ष्य का पीछा करने उतरी राजस्थान रॉयल्स के लिए यशस्वी जायसवाल और वैभव सूर्यवंशी सलामी जोड़ी ने तूफानी शुरुआत करते हुए पहले विकेट लिए 37 रन जोड़े। चौथे ओवर में अंशुल काम्बोज ने यशस्वी जायसवाल को आउट कर इस साझेदारी का अंत किया। यशस्वी जायसवाल ने 19 गेंदों में पांच चौके और दो छक्के लगाते हुए (36) रनों की पारी खेली। इसके बाद बल्लेबाजी करने आये कप्तान संजू सैमसन ने दूसरे विकेट लिए 98 रन जोड़े। 14वें ओवर में आर अश्विन ने यशस्वी जायसवाल को आउट कर चेन्नई को दूसरी सफलता दिलाई। जायसवाल ने 31 गेंदों में तीन चौके और दो छक्के लगाते हुए (41) रन बनाये। तीसरे विकेट के रूप में अश्विन ने वैभव सूर्यवंशी को अपना शिकार बनाया।

वैभव सूर्यवंशी ने 33 गेंदों में चार चौके और चार छक्के लगाते हुए (57) रनों की पारी खेली। रियान पराग (तीन) को नूर अहमद ने बोल्ड आउट किया। राजस्थान रॉयल्स ने 17.1 ओवर में चार विकेट पर 188 रन बनाकर मुकाबला चार विकेट से जीत लिया। ध्रुव जुरेल 12 गेंदों में (31) और शिमरॉन हेटमायर पांच गेंदो में (12) रन बनाकर नाबाद रहे। चेन्नई सुपर किंग्स की ओर से आर अश्विन को दो विकेट मिले। अंशुल काम्बोज और नूर अहमद ने एक-एक बल्लेबाज को आउट किया।

इससे पहले आज यहां राजस्थान रॉयल्स के कप्तान संजू सैमसन ने टॉस जीतकर पहले गेंदबाजी करने का फैसला किया। बल्लेबाजी करने उतरी चेन्नई को दूसरे ही ओवर में युद्धवीर सिंह चरक ने डेवन कॉन्वे (10) को आउटकर पहला झटका दिया। इसी ओवर में युद्धवीर ने उर्विल पटेल (शून्य) को आउटकर राजस्थान रॉयल्स को दूसरी सफलता दिलाई। इसके बाद बल्लेबाजी करने आये रवि अश्विन ने सलामी बल्लेबाज आयुष म्हात्रे के साथ पारी को संभाला और दोनों बल्लेबाजों ने तीसरे विकेट लिये 56 रन जोड़े। छठे ओवर में तुषार देशपांडे ने आयुष म्हात्रे को आउटकर इस साझेदारी का अंत किया। आयुष म्हात्र ने 20 गेंदों में आठ चौके और एक छक्का लगाते हुए (43) रनों की पारी खेली। अगले ही ओवर में हसरंगा ने रवि अश्विन आठ गेंदों में (13) को आउटकर राजस्थान को चौथी सफलता दिलाई।

आरसीबी और एसआरएच का मैच लखनऊ में

मुल्लांपुर और अहमदाबाद में होंगे प्लेऑफ मैच

मुम्बई, 20 मई। मौसम संबंधी परेशानियों को देखते हुए भारतीय क्रिकेट कंट्रोल बोर्ड (बीसीसीआई) ने इंडियन प्रीमियर लीग (आईपीएल) के शुक्रवार को रॉयल चैलेंजर्स बेंगलुरु बनाम सनराइजर्स हैदराबाद के घरेलू लीग मैच को लखनऊ में कराने का फैसला किया है। इसके अलावा प्लेऑफ के मैचों में भी बदलाव किया गया है। बीसीसीआई ने आईपीएल 2025 के प्लेऑफ वेन्यू के तौर पर अहमदाबाद और मुल्लांपुर में कराने का फैसला लिया है। मुल्लांपुर में 29 मई को पहला क्वालिफायर और अगले दिन एलिमिनेटर मुकाबला खेला जाएगा। जबकि अहमदाबाद एक जून को दूसरा क्वालिफायर और तीन जून को फाइनल की मेजबानी करेगा। आरसीबी को 27 मई को अपना अंतिम लीग मुकाबला भी 27 मई को लखनऊ सुपर जायंट्स के खिलाफ इकाना स्टेडियम में ही खेलना है। मौसम विभाग ने बेंगलुरु में गुरुवार तक भारी बारिश का पूर्वानुमान और ऑरेंज एलर्ट जारी होने के चलते कार्यक्रम को बदला गया। आरसीबी को आज अपराह्न कार्यक्रम में बदलाव की जानकारी दी गई और उन्हें हैदराबाद के खिलाफ मैच के लिए लखनऊ में ही रुकने के लिए कहा गया है। ऐसा माना जा रहा है किक कार्यक्रम में बदलाव से आरसीबी को शीर्ष दो स्थान में रहकर प्लेऑफ में प्रवेश करने का बेहतर अवसर मिलेगा।

सौरभ और शाहबाज जेएससीए के सचिव और संयुक्त सचिव चुने गये

रांची, 20 मई। पूर्व भारतीय क्रिकेटर सौरभ तिवारी और शाहबाज नदीम को झारखंड राज्य क्रिकेट संघ का सचिव और संयुक्त सचिव चुना गया है। जेएससीए की नयी कार्यकारिणी के चुनाव में तिवारी ने अपने प्रतिद्वंद्वी एसबी सिंह को 438-194 के बड़े अंतर से हराया। संयुक्त सचिव पद के लिए हुए मतदान में नदीम ने भी 409-199 के स्कोर से राजकुमार शर्मा को दो सौ से अधिक मतों के अंतर से हराकर बड़ी जीत दर्ज की।

बेयरस्टो, ग्लीसन और असलंका को मुंबई इंडियंस ने किया अनुबंधित

मुम्बई, 20 मई। इंडियन प्रीमियर लीग (आईपीएल) की फ्रैंचाईची मुंबई इंडियंस ने इंग्लैंड के जॉनी बेयरस्टो, रिचर्ड ग्लीसन और श्रीलंका के चरित असलंका को विल जैक्स, रयान रिकलटन और कॉर्बिन बॉश के स्थान पर अस्थायी तौर पर टीम में जगह दी है।

इंडियन प्रीमियर लीग (आईपीएल) की ओर से जारी बयान में कहा गया है कि मुम्बई इंडियंस ने बेयरस्टो को 5.25 करोड़ रुपये, तेज गेंदबाज ग्लीसन को एक करोड़ और असलंका को 75 लाख रुपये में अनुबंधित किया है। ये खिलाड़ी मुंबई इंडियंस प्लेऑफ में जगह बनाने पर टीम के साथ उपलब्ध रहेंगे। मुम्बई इंडियंस और दिल्ली कैपिटल्स के बीच बुधवार प्लेऑफ में जगह बनाने के लिए भिड़ंत होगी। जैक्स 26 मई को मुम्बई इंडियंस का अंतिम लीग मैच खेलने के बाद वेस्टइंडीज के खिलाफ इंग्लैंड की एकदिवसीय श्रृंखला के कारण टूर्नामेंट बीच में ही छोड़ देंगे। वहीं, रिकलटन और बॉश वर्ल्ड टेस्ट चैंपियनशिप (डब्ल्यूटीसी) फाइनल की तैयारी के लिए दक्षिण अफ्रीका की राष्ट्रीय टीम से जुड़ेंगे।

बेयरस्टो ने आईपीएल के पांच सत्र में 50 मैच खेले हैं। वह वर्ष 2019-20 में सनराइजर्स हैदराबाद और 2022 और 2024 में पंजाब किंग्स के लिए खेल चुके है। लीग बेयरस्टो ने में 34.54 की औसत और 144.45 की स्ट्राइक रेट के साथ रन बनाए हैं। इसमें दो शतक भी शामिल हैं। वहीं ग्लीसन ने पिछले सत्र में चेन्नई सुपर किंग्स के लिए दो मैच खेले थे।श्रीलंका के सीमित ओवर कप्तान असलंका पहली बार आईपीएल में खेलेंगे।

अभिषेक को मैच फीस का 25% जुर्माना और राठी एक मैच के लिए निलंबित

लखनऊ, 20 मई। इंडियन प्रीमियर लीग (आईपीएल) की आचार संहिता का उल्लंघन के लिए सनराइजर्स हैदराबाद के बल्लेबाज अभिषेक शर्मा पर मैच फीस का 25 प्रतिशत जुर्माना लगाया गया। वहीं लखनऊ सुपर जायंट्स के स्पिन गेंदबाज दिग्वेश राठी को इस सत्र में तीसरी बार उल्लंघन का दोषी पाये जाने पर एक मैच के निलंबन के साथ मैच फीस का 50 प्रतिशत जुर्माना भी लगाया गया है। यह घटना सोमवार को लखनऊ सुपर जायंट्स और सनराइजर्स हैदराबाद के बीच खेले गये मैच के दौरान आठवें ओवर में उस समय जब राठी ने अभिषेक शर्मा को आउट किया। राठी ने अभिषेक को आउट करने के बाद उन्हें 'नोटबुक' में एंट्री का इशारा किया और फिर दोनों खिलाड़ियों के बीच बहस हुई। इस दौरान अंपायर माइकल गॉफ को बीच-बचाव करना पड़ा। राठी को इस सत्र में तीसरी बार आईपीएल के आचार संहिता का उल्लंघन का दोषी पाया गया। इस सत्र में राठी के खिलाफ कुल पांच डिमेरिट अंक जोड़े गये हैं, इस कारण उन्हें एक मैच के लिए निलंबित किया गया है। वह अब वह गुरुवार को गुजरात टाइटंस के साथ होने वाले मैच में नहीं खेल पाएंगे। अभिषेक की इस सत्र में पहली गलती को देखते हुए उन पर मैच फीस का 25 प्रतिशत जुर्माना लगाया गया।

दक्ष कासलीवाल की नाबाद अर्द्धशतकीय पारी की बदौलत केन्डलविक एकेडमी की एकतरफा जीत

जयपुर, 20 मई। यूनियन क्रिकेट क्लब द्वारा आयोजित 27वीं नवीन नफीस स्मृति क्रिकेट प्रतियोगिता में आज अरावली क्रिकेट ग्राउण्ड, हाथोज, जयपुर पर खेले गये पूल ई के मैच में दक्ष कासलीवाल 65 रन नाबाद मोहम्मद कैफ 32 रन नाबाद पारियों की बदौलत केन्डलविक क्रिकेट एकेडमी ने कोड़ाई स्पोटर्स एकेडमी को 9 विकेट से हराकर लगातार चौथी जीत दर्ज की। टॉस जीतकर पहले बल्लेबाजी करते हुये कोडाई स्पोर्ट्स एकेडमी के दीवान राजोरिया 30 रन, सुमित सैनी 27 रन, गौरांश चौहान 18 रन नाबाद, भावेश कांवट 17 रन नाबाद, राज 11 रन प्रणित पुगलिया 10 रन की मदद से निर्धारित 20 ओवर में 5 विकेट खोकर 128 रन बनाये।

गेन्दबाजी में केन्डलविक क्रिकेट एकेडमी की ओर से सार्थक त्यागी 31 रन पर 2 विकेट हिमांक झालानी, आदित्य सर्राफ और मेहूल सिंह प्रत्येक 1-1 विकेट लेकर सफल गेंदबाज रहे। 129 रन के विजय लक्ष्य को लेकर खेलने उतरी केन्डलविक क्रिकेट एकेडमी की ओर से मोहम्मद कैफ ने 32 रन नाबाद तथा मेहूल सिंह 28 रन 9 गेन्द 3 चौके 2 छक्के ने मिलकर 2.4 ओवर में 41 रन जोड़कर अच्छी शुरूआत की। मेहूल के आउट होने के बाद खेलने उत्तरे दक्ष कासलीवाल 65 रन नाबाद (44 गेन्ट 10 चौके 1 छक्का) ने मोहम्मद कैफ के साथ मिलकर 89 रन नाबाद की साझेदारी निभाकर विजयी लक्ष्य 13.5 ओवर में 130 रन बनाकर 9 विकेट से जीत दर्ज कर पूल में प्रथम स्थान प्राप्त कर लिया। कोडाई स्पोर्ट्स एकेडमी की ओर से तौसिफ अली 30 रन पर 1 विकेट लेकर एकमात्र सफल गेन्दबाज रहे। मैच का मेन ऑफ मैच दक्ष कासलीवाल 65 रन नाबाद केन्डलविक क्रिकेट एकेडमी रहे।

वर्षा प्रभावित मैचों के लिए दो घंटे का अतिरिक्त समय

मुम्बई, 20 मई। देशभर में मानसून की शुरुआत को देखते हुए आईपीएल के लीग चरण के बारिश से प्रभावित होने वाले मैचों के लिए दो घंटे का अतिरिक्त समय दिया जायेगा। इंडियन प्रीमियर लीग (आईपीएल) की शासकीय परिषद ने बारिश के कारण बाधा होने की स्थिति में पूरे 40 ओवर का मैच कराये जाने के लिए 120 मिनट का अतिरिक्त समय दिये जाने निर्णय लिया है। इससे पहले केवल प्लेऑफ मैचों में दो घंटे का अतिरिक्त समय दिया जाता है।

दिग्वेश राठी की सजा पर धवन ने दी प्रतिक्रिया

लखनऊ, 20 मई। लखनऊ सुपर जाएंट्स के स्पिनर दिग्वेश राठी सोमवार को सनराइजर्स हैदराबाद के ओपनर अभिषेक शर्मा से भिड़ गए थे। उन्होंने नोटबुक सेलिब्रेशन के दौरान अभिषेक को बाहर जाने का इशारा किय था, जिसके बाद दोनों में जमकर बहस हुई। अंपायर को बीच-बचाव कराना पड़ा था। बीसीसीआई ने राठी को कड़ी सजा सजाई सुनाई है।

उन्हें आईपीएल 2025 में एक मैच के लिए बैन कर दिया गया है। वह निलंबन के कारण एलएसजी के अगले मैच में नहीं खेलेंगे, जो 22 मई को गुजरात टाइटंस के खिलाफ होगा। राठी की सजा पर भारत के पूर्व धाकड़ सलामी बल्लेबाज शिखर धवन ने अपनी प्रतिक्रिया दी है।धवन ने मंगलवार को सोशल मीडिया प्लेऑफ एक्स पर लिखा कि, कभी-कभी कठिन तरीके से सीखना ही एकमात्र तरीका होता है जिससे सबक याद रहता है। उम्मीद है कि एक ऐसा टर्निंग पॉइंट होगा जहां राठी उस आग को और अधिक रचनात्मक तरीके से इस्तेमाल करना सीखेंगे और मैदान पर हर खिलाड़ी का सम्मान करेंगे, जिसका वह हकदार है।धवन की पोस्ट पर क्रिकेट फैंस के जमकर रिएक्शन आ रहे हैं। एक यूजर ने कमेंट किया कि, खिलाड़ियों को एक-दूसरे का सम्मान करना चाहिए। अन्य ने कहा कि, दिग्वेश राठी का मैदान पर व्यवहार वाकई में उचित नहीं है।

आईपीएल प्रेस रिलीज में कहा गया कि, लखनऊ सुपर जाएंट्स के गेंदबाज दिग्वेश सिंह पर सनराइजर्स हैदराबाद के खिलाफ अपनी टीम के मैच के दौरान आईपीएल आचार संहित का उल्लंघन करने के लिए मैच फीस का 50 फीसदी जुर्माना लगाया गया है। ये इस सीजन में नियम 2.5 के तहत उनका तीसरा लेवल एक अपराध था और इसलिए उन्हें पहले के तीन डिमेरिट अंकों के अलावा दो और डिमेरिट अंक दिए गए हैं। इसमें एक अप्रैल 2025 को पंजाब किंग्स के खिलाफ एक डिमेरिट अंक और चार अप्रैल 2025 को मुंबई इंडियंस के खिलाफ दो डिमेरिट अंक शामिल हैं। उनके पास सीजन में 5 डिमेरिट अंक हैं, जिसका परिणाम एक मैच का निलंबन होता है इसलिए दिग्वेश को अब एलएसएजी के अगले मैच से निलंबित किया जाएगा। वहीं आईपीएल आचार संहिता का उल्लंघन के लिए अभिषेक शर्मा पर मैच फीस का 25 प्रतिशत जुर्माना लगाया गया।

कोलकाता में नहीं होगा आईपीएल 2025 फाइनल

नई दिल्ली, 20 मई। आईपीएल 2025 प्लेऑफ के वेन्यू का ऐलान हो गया है। बीसीसीआई ने फाइनल को शिफ्ट कर दिया है जिसके बाद अब खिताबी मुकाबला कोलकाता में नहीं बल्कि अहमदाबाद के नरेंद्र मोदी स्टेडियम में खेला जाएगा। अहमदाबाद ने 2022 और 2023 में भी आईपीएल फाइनल की मेजबानी की थी। क्वालीफायर 1 और एलिमिनेटर भी शिफ्ट हो गए हैं। ये दोनों मुकाबले मुल्लांपुर के मैदान में आयोजित होंगे जो पहले हैदराबाद में खेले जाने थे।बीसीसीआई ने मंगलवार को एक बयान में बताया कि अहमदाबाद के नरेंद्र मोदी स्टेडियम में 3 जून को आईपीएल 2025 का फाइनल होगा।

ये मैदान 1 जून को क्वालीफायर 2 की भी मेजबानी करेगा। वहीं मुल्लांपुर के महाराजा यादवेंद्र सिंह इंटरनेशनल क्रिकेट स्टेडियम में 29 मई को क्वालीफायर 1 और 30मई को एलिमिनेटर मुकाबला खेला जाएगा। इससे पहले, आईपीएल फाइनल 25 मई को कोलकाता में खेला जाना था। ईडन गार्डन्स में क्वालिफायर 2 भी आयोजित होना था। क्वालिफायर 1 और एलिमिनेटर मैच हैदराबाद के राजीव गांधी इंटरनेशनल स्टेडियम में खेले जाने थे। बीसीसीआई ने बयान में कहा कि, आईपीएल संचालन परिषद ने मौसम की परिस्थितियों और अन्य चीजों को ध्यान में रखते हुए प्लेऑफ के नए वेन्यू पर फैसला किया है। बोर्ड ने ये भी पुष्टि की है कि प्लेऑफ चरण के समान लीग चरण के बाकी मुकाबलों के खेलने की परिस्थितियों के लिए एक घंटे का अतिरिक्त समय आवंटित किया गया है।

सुनयना प्रकाश बनी इंडियन सॉफ्ट हॉकी लीग की चेयरपर्सन और कुमार लाखोटिया बने एमेच्योर सॉफ्ट हॉकी फैडरेशन ऑफ इंडिया के संयुक्त सचिव

जयपुर, 20 मई। एमेच्योर सॉफ्ट हॉकी फेडरेशन ऑफ इंडिया के अध्यक्ष डॉ. आशुतोष पंत ने की बताया कि एमेच्योर सॉफ्ट हॉकी फेडरेशन ऑफ इंडिया की साधारण सभा में यह तय किया गया कि भारतीय ओलंपिक संघ की विधिक समिति की चेयरपर्सन एवं सुप्रीम कोर्ट की वरिष्ठ अधिवक्ता सुनयना प्रकाश को इंडियन सॉफ्ट हॉकी लीग की चेयरपर्सन नियुक्त किया गया है। तथा एमेच्योर सॉफ्ट हॉकी ऑफ इंडिया की वाइस प्रेसिडेंट बनाया गयासुनयना प्रकाश का विधिक अनुभव, नेतृत्व क्षमता और सामाजिक सक्रियता सॉफ्ट हॉकी को राष्ट्रीय स्तर पर नई पहचान दिलाएगी।

उनके मार्गदर्शन में लीग को सशक्त दिशा मिलेगी।श्रीमती सुनयना प्रकाश सुप्रीम कोर्ट में वंचितों और पीड़ितों को न्याय दिलाने में अग्रणी रही हैं। वे शिक्षा, महिला सशक्तिकरण और सामाजिक जागरूकता के क्षेत्र में सक्रिय हैं।

कुमार लाखोटिया बने संयुक्त सचिव ,फेडरेशन की बैठक में श्री कुमार लाखोटिया को एमेच्योर सॉफ्ट हॉकी फेडरेशन ऑफ इंडिया का संयुक्त सचिव नियुक्त किया गया। लाखोटिया वर्तमान में दिल्ली भाजपा राज्य इकाई के विशेष आमंत्रित सदस्य हैं तथा 2018 से राष्ट्रीय एवं अंतरराष्ट्रीय प्रवासी प्रकोष्ठ के संयोजक के रूप में सक्रिय हैं। वे राजस्थान भाजपा की प्रदेश कार्यकारिणी (2018-2020) के सदस्य भी रह चुके हैं। फेडरेशन के महासचिव सिंह ने सुनैना प्रकाश व कुमार लाखोटिया को निर्वाचित होने पर बधाई दी

व्यक्तिगत ई-मेल आईडी का उपयोग करके मुझे नोटिस भेजे गये : धर्मवीर सिंह

जयपुर, 20 मई। पाली जिला संघ के सचिव धर्मवीर सिंह ने कहा कि जयदीप बिहानी, संयोजक, तदर्थ समिति राजस्थान क्रिकेट संघ नोटिस के आरोपों और कथनों को अस्वीकार किया जाता है और जब तक इसे विशेष रूप से स्वीकार नहीं किया जाता है, तब तक इसे अस्वीकार माना जाएगा। इसके अलावा, उस प्राधिकार और योग्यता को अस्वीकार करते हैं जिसके तहत विषय नोटिस जारी किया गया है क्योंकि विषय नोटिस के मात्र अवलोकन से यह स्पष्ट होता है कि इसमें न तो समिति के बहुमत से पारित किसी प्रस्ताव/निर्णय का उल्लेख है, न ही इसमें आधिकारिक प्रेषण संख्या का उल्लेख है और न ही हमारे संघ की सम्बद्धता समाप्त करने के एजेंडे पर चर्चा करने के लिए बैठक बुलाने संबंधी संचार के किसी विवरण का उल्लेख है और न ही हमने और तदर्थ समिति के अन्य सदस्यों को आज तक ऐसा कोई नोटिस प्राप्त नहीं हुआ है। अतः प्रथम दृष्टया यह स्थापित होता है कि विषयगत नोटिस केवल आपकी इच्छा और मनमर्जी से तथा तदर्थ समिति के सदस्यों के बहुमत के बिना ही हमें जारी किया गया है; अतः यह आधारहीन होने के कारण टिकने योग्य नहीं है। जहां तक जांच के संबंध में आरसीए की शक्ति का संबंध है, वर्तमान में आरसीए की ऐसी कोई स्थायी/विधिवत निर्वाचित कार्यकारी संस्था अस्तित्व में नहीं है तथा आरसीए का संचालन तदर्थ समिति द्वारा किया जा रहा है, जिसमें छह सदस्य शामिल हैं, जिसमें हमारा संघ भी तदर्थ समिति का सदस्य है। इसके अलावा, हमारे संघ के विरुद्ध ऐसी जांच आरंभ करने के संबंध में न तो तदर्थ सदस्यों के बहुमत द्वारा ऐसा निर्णय पारित किया गया है और न ही तदर्थ समिति द्वारा ऐसी जांच आरंभ की गई है। तथापि, नोटिस में जयदीप बिहानी, उप रजिस्ट्रार सहकारी समिति, पाली द्वारा जारी दिनांक 30.04.2025 के पत्र का संदर्भ दिया है। उक्त पत्र के अनुसरण में हमसे कुछ अभिलेख मांगते हुए कार्यवाही शुरू की है। हालाँकि, उप पंजीयक द्वारा जारी आदेश की प्रति आपको हमसे ऐसे अभिलेख मांगने का निर्देश देते हुए उपलब्ध कराई गई है। जहाँ तक उप पंजीयक, सहकारी समिति, पाली द्वारा शुरू की गई कथित जांच का सवाल है,

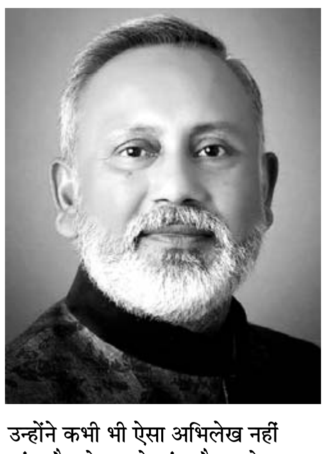

उन्होंने कभी भी ऐसा अभिलेख नहीं मांगा है, जो आपने मांगा है। इसके अलावा, उप पंजीयक सहकारी समिति, पाली ने पहले ही जांच अधिकारी नियुक्त कर दिया है। धर्मवीर ने बियानी पर आरोप लगाते हुए कहा कि रजिस्ट्रार, सहकारी समिति, जयपुर द्वारा पारित आदेश दिनांक 28.03.2024 के तहत तीन माह की अवधि के भीतर आरसीए के नए चुनाव कराने तथा नए चुनाव होने तक आरसीए का प्रबंधन देखने के लिए एड-कमेटी नियुक्त की गई थी, जिसके

तहत जिला क्रिकेट संघों के पदाधिकारियों को एड-कमेटी के सदस्य नियुक्त किया गया था: जयदीप बिहानी, कोषाध्यक्ष, डीसीए श्रीगंगानगर संयोजक, पवन गोयल, सचिव, डीसीए अलवर, रतन सिंह शेखावत, सचिव डीसीए बीकानेर, हरीश चंद्र सिंह, सचिव डीसीए झुंझुनू, धनंजय सिंह खींवसर, अध्यक्ष डीसीए नागौर, धर्मवीर सिंह शेखावत, सचिव डीसीए पाली, सदस्य बनाये गये थे। तदर्थ समिति द्वारा आरसीए का कोई नया चुनाव नहीं कराया गया तथा रजिस्ट्रार सहकारी समितियां द्वारा नए चुनाव कराने के लिए प्रत्येक तीन माह का समय बढ़ाया जा रहा है, लेकिन तदर्थ समिति के सदस्यों द्वारा अनेक बार अनुरोध किए जाने के बावजूद आपके द्वारा कोई बैठक आयोजित नहीं की जा रही है तथा तदर्थ सदस्यों के अनुरोधों की अनदेखी की जा रही है तथा बियानी द्वारा सभी निर्णय व्यक्तिगत रूप से लिए जा रहे हैं, जिसमें अन्य तदर्थ सदस्यों की सहमति भी नहीं ली जा रही है। ऐसी परिस्थितियों में, 19.05.2025 को तदर्थ सदस्यों के बहुमत के साथ एक बैठक बुलाई गई थी, जिसमें बियानी द्वारा व्यक्तिगत रूप से जारी किए गए सभी निर्णय, पत्र, संचार, निर्देश आदि को वापस ले लिया गया क्योंकि इसमें अन्य तदर्थ सदस्यों की सहमति नहीं है और यह बिना अधिकार और बहुमत के है। यह भी संकल्प लिया गया है कि आपको अन्य तदर्थ सदस्यों की बहुमत और सहमति के बिना व्यक्तिगत रूप से कोई भी निर्णय लेने से रोका जाता है। जहां तक चुनाव और वित्त के दौरान अनियमितताओं के बारे में शिकायतें प्राप्त करने के आरोपों का संबंध है, हमारा संघ अपने उपनियमों और शासी अधिनियम और नियमों के अनुसार काम कर रहा है और इसमें शासी कानून का कोई उल्लंघन नहीं हुआ है। इसके अलावा, हमारे संघ के चुनाव आरसीए की निगरानी में संघ के उपनियमों के अनुसार आयोजित किए जा रहे हैं। इसके अलावा, हमारे संघ का पिछला चुनाव 15.03.2025 को आरसीए के पर्यवेक्षक की उपस्थिति में आयोजित किया गया था और 18.03.2025 को प्रमाण पत्र जारी करते समय इसे आरसीए द्वारा संबद्ध किया गया था।चूंकि अध्यक्ष पद के लिए कोई नामांकन नहीं था, इसलिए अध्यक्ष पद को रिक्त रखा गया और उसके बाद दिनांक 09.04.2025 को आरसीए पर्यवेक्षक और राजस्थान खेल परिषद पर्यवेक्षक की उपस्थिति में पूरी प्रक्रिया के साथ अध्यक्ष पद के लिए चुनाव कराया गया और दिनांक 11.04.2025 को आरसीए द्वारा प्रमाण पत्र जारी करते हुए संबद्ध किया गया। इसके अलावा, उक्त चुनाव को किसी अन्य द्वारा सक्षम न्यायालयों के समक्ष कभी भी चुनौती नहीं दी गई।

भारतीय सेना के सम्मान को समर्पित सिंदूर यात्रा में सीएम भजनलाल शर्मा सपत्नीक शामिल हुए

सिंदूर यात्रा में भारी संख्या में माताओं-बहनों ने भाग लिया, भारत माता के जयकारों से गूंज उठा परकोटा

जयपुर, 20 मई। मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा ने कहा कि प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी के मजबूत नेतृत्व में हमारी सेना ने ऑपरेशन सिंदूर के माध्यम से बहनों का सिंदूर उजाड़ने वाले आतंकवादियों को कड़ा सबक सिखाया। बहनों के माथे की शोभा होने के साथ ही, सिंदूर हमारी संस्कृति और सम्मान का प्रतीक है।

मुख्यमंत्री मंगलवार को जयपुर में मातृशक्ति की ओर से आयोजित 'सिंदूर यात्रा' में धर्मपत्नी गीता शर्मा के साथ शामिल हुए।

मातृशक्ति की ओर से भारतीय सेना के सम्मान में आयोजित सिंदूर यात्रा में प्रदेश की महिलाओं के साथ, मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा की धर्मपत्नी गीता देवी ने भी पैदल यात्रा की। इस अवसर पर उन्होंने माताओं और बहनों के जोश और देशभक्ति की भावना की सराहना की।

गीता देवी ने यात्रा में साथ चल रही महिलाओं का आभार व्यक्त करते हुए कहा कि कर्नल सोफिया कुरैशी और विंग कमांडर व्योमिका सिंह जैसे उदाहरणों ने नारी शक्ति के शौर्य और

- **मुख्यमंत्री भजनलाल ने कहा कि भारत की अखंड एकता ने आतंकवादियों को कड़ा संदेश दिया है कि आतताइयों को सबक सिखाने के लिए देशवासी पूरी तरह एकजुट हैं।**

मुख्यमंत्री ने कहा कि ऑपरेशन सिंदूर की सफलता देशवासियों के संकल्प और जज्बे का प्रतीक है। भारत की अखण्ड एकता ने आतंकवादियों को कड़ा संदेश दिया है कि आततायियों को सबक सिखाने के लिए देशवासी पूरी तरह एकजुट हैं। मुख्यमंत्री ने ऑपरेशन सिंदूर की सफलता के लिए बहादुर जवानों को धन्यवाद दिया तथा वीर शहीदों को नमन किया।

मुख्यमंत्री ने कहा कि हमारे देश की जांबाज बेटियों कर्नल सोफिया कुरैशी और विंग कमांडर व्योमिका सिंह ने बताया कि कैसे हमारी सेना ने विश्व के सामने भारत की सैन्य ताकत और नारी शक्ति का परचम लहराया।

देशभक्ति को न केवल भारत, बल्कि पूरी दुनिया के सामने गौरवपूर्ण ढंग से प्रस्तुत किया है। इस सिंदूर यात्रा में बड़ी संख्या में महिलाएं भागीदार बनीं और भारत माता के जयघोष से वातावरण गूंज उठा।

हवामहल से प्रारंभ हुई यात्रा बड़ी चौपड़, त्रिपोलिया बाजार से होती हुई, छोटी चौपड़ पर सम्पन्न हुई। यात्रा का विभिन्न स्थानों पर पुष्प वर्षा कर स्वागत किया गया।

इस दौरान उप मुख्यमंत्री दीया कुमारी, जयपुर सांसद डॉ. मंजू शर्मा, जयपुर नगर निगम हैरिटेज मेयर कुसुम यादव, भाजपा की राष्ट्रीय मंत्री डॉ. अलका गुर्जर, प्रदेश महामंत्री संतोष अहलावत, प्रदेश मंत्री स्टेफी चौहान, अभियान सह-संयोजक अपूर्वा सिंह, भाजपा नेता रवि नैय्यर, चन्द्रमनोहर बटवाड़ा, मोहन लाल गुप्ता सहित, अन्य जनप्रतिनिधि एवं बड़ी संख्या में नारी शक्ति उपस्थित रहीं।

जयपुर में मंगलवार को मातृशक्ति की ओर से आयोजित 'सिंदूर यात्रा' में मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा धर्मपत्नी गीता शर्मा के साथ शामिल हुए। हवामहल से छोटी चौपड़ तक निकाली गई इस यात्रा का विभिन्न स्थानों पर पुष्प वर्षा से स्वागत किया गया।

आज से विदेश यात्रा पर जाएंगे संसदीय प्रतिनिधिमंडल

नयी दिल्ली, 20 मई। पहलगाम आतंकवादी हमले एवं ऑपरेशन सिन्दूर को लेकर वैश्विक कूटनीतिक समर्थन जुटाने के लिए गठित सात संसदीय दल 21 मई से पांच जून तक 33 देशों की यात्रा करेंगे और इन दलों में शामिल 51 राजनेता एवं आठ राजनयिक पाकिस्तान में मौजूद वैश्विक आतंकवादी ढांचे और उसके समर्थकों की पोल दुनिया के सामने खोलेंगे।

सूत्रों के अनुसार, भारतीय जनता पार्टी (भाजपा) के उपाध्यक्ष बैजयंत पाण्डा के नेतृत्व वाला पहला समूह 23 मई को बहरीन, 25 मई को कुवैत, 27

- **सात संसदीय दल 21 मई से 5 जून तक 33 देशों की यात्रा करेंगे।**

मई को सऊदी अरब और 30 मई को अल्जीरिया जाएगा। इस समूह में अन्य सदस्य भाजपा के निशिकांत दुबे, भाजपा के फांगनोन कोन्याक, भाजपा की रेखा शर्मा, ऑल इंडिया मजलिसे इत्तेहादुल मुस्लमीन के असद्दुदीन ओवैसी, नामांकित सतनाम सिंह संधु और गुलाम नबी आज़ाद हैं। पूर्व विदेश सचिव हर्ष वर्धन श्रृंगला भी इस समूह में जाएंगे। भाजपा के डॉ रविशंकर प्रसाद के नेतृत्व वाला दूसरा समूह 25 मई को फ्रांस, 27 मई को इटली, 29 मई को डेनमार्क, एक जून को ब्रिटेन और पांच जून को जर्मनी जाएगा।

पाक सेना प्रमुख जनरल मुनीर का प्रमोशन, फील्ड मार्शल बनाए गए

आसिफ मुनीर से पहले 1959 में पाकिस्तान में "फील्ड मार्शल" बना था, जनरल अयूब ने खुद को फील्ड मार्शल घोषित किया था

इस्लामाबाद, 20 मई। पाकिस्तान सरकार ने सेना अध्यक्ष जनरल सैयद आसिम मुनीर की पदोन्नित कर उन्हें फील्ड मार्शल बना दिया है।

प्रधानमंत्री शहबाज़ शरीफ की अध्यक्षता में मंगलवार को हुई संघीय मंत्रिमंडल की बैठक में इससे संबंधित प्रस्ताव को मंजूरी दी गयी। यह निर्णय भारत के साथ हुये सैन्य टकराव के बाद लिया गया है। मंत्रिमंडल के अनुसार जनरल मुनीर की पदोन्नित उनके उत्कृष्ट सैन्य नेतृत्व, बहादुरी और पाकिस्तान की संप्रभुता एवं प्रादेशिक अखंडता के प्रति प्रतिबद्धता के मद्देनजर की गयी है।

मंत्रिमंडल ने वायुसेना प्रमुख एयर चीफ मार्शल जहीर अहमद बाबर सिधू की सेवाओं और नेतृत्व क्षमता को मान्यता देते हुये उनका कार्यकाल बढ़ाने का भी महत्वपूर्ण फैसला लिया है।

मंत्रिमंडल ने बैठक में पांच सूत्री कार्यसूची पर भी विचार-विमर्श किया। इसमें देश की संपूर्ण राजनीतिक, आर्थिक और सुरक्षा स्थिति शामिल है। बैठक में

- **पाक सेना में फील्ड मार्शल सर्वोच्च रैंक का पद है, जो तीनों सेनाओं में सबसे ऊँचा माना जाता है।**
- **जनरल मुनीर को फील्ड मार्शल बनाना पाकिस्तान के इतिहास में विरला फैसला है। प्रधानमंत्री शहबाज़ शरीफ ने राष्ट्रपति आसिफ अली ज़रदारी से विचार विमर्श कर यह घोषणा की।**

अगले वित्तीय वर्ष के बजट प्रस्तावों पर भी विचार किया गया।

जनरल मुनीर को फील्ड मार्शल के रैंक में पदोन्नति देना पाकिस्तान के इतिहास में एक विरला फैसला है। समझा जाता है कि प्रधानमंत्री ने राष्ट्रपति आसिफ अली ज़रदारी से भेंट कर उन्हें सेना प्रमुख को पदोन्नित देने के संबध में लिए जाने वाले फैसले पर विश्वास में लिया था।

मंत्रिमंडल ने एलान किया है कि भारत के विरुद्ध हाल के सैन्य अभियान के दौरान अपनी सेवायें देने वालों को उच्च स्तरीय राष्ट्रीय सम्मान से नवाज़ा जायेगा। इसके साथ ही अधिकारियों, सैनिकों, शहीदों, सेवानिवृत्त योद्धाओं और राष्ट्रीय हितों के लिये योगदान देने वाले विभिन्न क्षेत्रों के लोगों को भी उनकी सेवाओं के लिये सम्मानित किया जायेगा।

पाकिस्तान में आसिम मुनीर से पहले 1959 में सैन्य तानाशाह अयूब खान ने खुद को फील्ड मार्शल घोषित कर दिया था।

फील्ड मार्शल पाकिस्तान सेना में सर्वोच्च सैन्य रैंक है, जो एक फाइव स्टार रैंक मानी जाती है। यह रैंक जनरल (फोर स्टार) से ऊपर है। पाकिस्तान में फील्ड मार्शल का पद सेना, नौसेना और वायुसेना में सबसे ऊंचा होता है।

नीतीश कुमार के दो पुराने व विश्वसनीय...

(प्रथम पृष्ठ का शेष)

बहुत फायदा मिलेगा।" जुलाई, 2021 में जब नरेन्द्र मोदी सरकार ने जे डी यू को केवल एक कैबिनेट मंत्री का पद देने की पेशकश की थी, तथा आर सी पी ने उसके लिए स्वयं को मनोनीत कर दिया था, तभी से नीतीश के साथ उनके संबंधों में दरार पैदा हो गई थी और उसके बाद आर सी पी काफी भटके। आर सी पी के इस कदम से नीतीश और जेडीयू के ताकतवर नेता लल्लन सिंह उनसे नाराज हो गये थे। कुछ समय तक चुप बैठने के बाद, आर सी पी मई, 2023 में बाकायदा भाजपा में शामिल हो गये थे। लेकिन गत वर्ष जनवरी में कुमार के एन डी ए में शामिल हो जाने के बाद, आर सी पी की प्रासंगिकता समाप्त हो गई। वर्ष 2024 के लोकसभा चुनावों में, जब भाजपा ने उन्हें कोई महत्वपूर्ण भूमिका नहीं दी, तो आर सी पी ने अपनी स्वयं की पार्टी बना ली, लेकिन उस पार्टी का कोई उम्मीदवार जीत नहीं पाया। इस समय, किशोर के साथ जुड़कर वे अपने राजनैतिक भविष्य के पुनः उदय होने की आशा संजोये हुए हैं।

सुप्रीम कोर्ट ने वक्फ कानून को चुनौती देने वाली याचिकाओं की सुनवाई की

नयी दिल्ली, 20 मई। उच्चतम न्यायालय की संविधान पीठ ने वक्फ (संशोधन) अधिनियम, 2025 की संवैधानिक वैधता को चुनौती देने वाली याचिकाओं पर मंगलवार को सुनवाई की।

मुख्य न्यायाधीश बी आर गवई और न्यायमूर्ति ऑगस्टीन जॉर्ज मसीह की अध्यक्षता वाली पीठ के समक्ष वरिष्ठ अधिवक्ता कपिल सिब्बल और अभिषेक मनु सिंघवी की अगुवाई में याचिकाकर्ताओं ने नए प्रावधानों के कार्यान्वयन पर अंतरिम रोक लगाने का की गुहार लगाई। दोनों अधिवक्ताओं ने दलील देते हुए कहा कि वर्तमान स्वरूप में यह कानून मौलिक धार्मिक अधिकारों का उल्लंघन करता है।

सॉलिसिटर जनरल तुषार मेहता ने अदालत के समक्ष केन्द्र सरकार का पक्ष रखा। वरिष्ठ अधिवक्ता कपिल सिब्बल

- **मुस्लिम पक्ष की तरफ से कपिल सिब्बल व अभिषेक मनु सिंघवी ने जिरह की वहीं सॉलिसिटर जनरल तुषार मेहता ने केन्द्र सरकार का पक्ष रखा।**

ने अपनी शुरुआती दलीलों में 2025 के संशोधनों को केन्द्र द्वारा वक्फ संपत्तियों का धीरे-धीरे अधिग्रहण करने की कोशिश करार दिया और कहा कि यह मुसलमानों के धार्मिक मामलों के प्रबंधन के अधिकार को कमजोर करता है। उन्होंने कहा कि नए प्रावधान दशकों से विकसित वक्फ ढांचे में एक व्यापक बदलाव हैं।

सिब्बल ने वक्फ संपत्तियों का निर्धारण करने के लिए जांच तंत्र में उचित प्रक्रिया की कमी को भी रेखांकित किया। उन्होंने तर्क दिया,नामित अधिकारी एक सरकारी अधिकारी होता है जो अपने मामले में न्यायाधीश के रूप में कार्य करता है। उन्होंने जोर देकर कहा कि वक्फ न्यायाधिकरण में तभी जाने की अनुमति है, जब किसी संपत्ति को वक्फ का दर्जा देने से मना कर दिया जाता है।

कांग्रेस ने "ऑपरेशन सिन्दूर" पर...

(प्रथम पृष्ठ का शेष)

कूटनीति की विफलता बताया और आतंकवाद विरोधी अभियानों के बीच अचानक युद्धिवराम को लेकर चिंता जताई।

कांग्रेस अध्यक्ष ने पीएम मोदी पर सार्वजनिक जवाबदेही से बचने का आरोप लगाया और पूर्व अमेरिकी राष्ट्रपति डॉनल्ड ट्रंप के उस दावे का हवाला दिया कि उन्होंने भारत और पाकिस्तान के बीच युद्धिवराम कराया।

खड़गे ने कहा, जब हमारी सेना आतंकवाद के खिलाफ अभियान में लगी थी, उसी समय अचानक युद्धिवराम की घोषणा कर दी गई। पूरा देश अपनी सेना के साथ खड़ा था, लेकिन प्रधानमंत्री, ट्रंप के बयानों पर चुप रहे और देश को सच बताने के बजाय विदेशों में तस्वीरें खिंचवाते रहे, उन्होंने जोड़ा।

ये सवाल उस समय और तेज हुए, जब विपक्ष के नेता राहुल गांधी ने सवाल उठाया कि भारत की सीमा पर बसे नागरिकों को सूचित करने से पहले पाकिस्तान को चेतावनी क्यों दी गई।

विवाद तब और बढ़ गया, जब राहुल गांधी ने विदेश मंत्री एस. जयशंकर का एक वीडियो साझा किया, जिसमें वे पत्रकारों से कहते दिखे: ऑपरेशन की शुरुआत में, हमने पाकिस्तान को संदेश दिया कि हम उनके सैन्य ठिकानों पर नहीं, बल्कि आतंकी इन्फ्रास्ट्रक्चर पर प्रहार कर रहे हैं, ताकि सेना खुद को अलग रख सके।

राहुल गांधी ने लिखा, "हमले की शुरुआत में पाकिस्तान को जानकारी देना अपराध है। विदेश मंत्री ने सार्वजनिक रूप से स्वीकार किया है कि सरकार ने ऐसा किया। इसका आदेश किसने दिया? हमारी वायुसेना को कितने विमान गंवाने पड़े?"

सोमवार को राहुल गांधी ने इस बयान को दोहराते हुए कहा, विदेश मंत्री जयशंकर की चुप्पी केवल संदेहास्पद नहीं है, वह निंदनीय है। मैं फिर पूछता हूँ: क्या पाकिस्तान को पहले से चेतावनी देने के कारण हमने अपने विमान खोये?

विदेश मंत्रालय ने सफाई दी कि जयशंकर की टिप्पणी को तोड़-मरोड़ कर प्रस्तुत किया गया है, लेकिन यह स्पष्ट नहीं किया गया कि उन्होंने यह बयान दिया या नहीं।

मंत्रालय ने कहा, "विदेश मंत्री ने कहा था कि हमने "ऑपरेशन की शुरुआत में" पाकिस्तान को चेतावनी दी, न कि उससे पहले। इसे झूठे ढंग से ऑपरेशन से पूर्व की चेतावनी के रूप में पेश किया जा रहा है।" एक पूर्व भारतीय राजनयिक ने नाम न छापने की शर्त पर कहा, "एक विदेश मंत्री को ऐसी चेतावनी देने की ज़रूरत ही क्यों पड़ी? क्या उन्हें लगता है कि पाकिस्तान इतना नासमझ है कि वह उस चेतावनी के निहितार्थ नहीं समझेगा?"

अधीक्षण अभियंता का ...

(प्रथम पृष्ठ का शेष)

अवहेलना की है। ऐसे में उनके सर्किल कार्यालय को तत्काल कुर्क और सील किया जाए और उन्हें चेंबर में प्रवेश भी नहीं करने किया जाए। अदालत ने डिस्ट्रिक्ट जज, सीकर को कहा है कि वे अधीक्षण अभियंता के कार्यालय को कुर्क व सील करना सुनिश्चित करें और उन्हें कक्ष से बाहर बैठकर काम करने के लिए व्यवस्था कराई जाए। जस्टिस सुदेश बंसल की एकलपीठ ने ये आदेश मुकेश कुमार शर्मा व अन्य की ओर से दायर याचिकाओं पर सुनवाई करते हुए दिए।

अदालत ने एसीएस, पीएचईडी को कहा है कि वे याचिकाकर्ताओं को न्यूनतम वेतन देने के संबंध में 21 अगस्त, 2020 और 16 अक्टूबर, 2020 को दिए आदेश की पालना सुनिश्चित करें। इसके साथ ही, अधीक्षण अभियंता को नोटिस जारी कर स्पष्टीकरण लिया जाए कि क्यों न उनके खिलाफ विभागीय कार्रवाई की जाए। अदालत ने अधीक्षण अभियंता को अदालती आदेश की अवहेलना करने पर अवमानना नोटिस भी जारी कर पूछा है कि क्यों न उन्हें इस प्रकरण में दंडित किया जाए। अदालत ने कहा कि गत 21 अप्रैल को अदालत ने अधीक्षण अभियंता को कहा था कि आदेश की पालना करें अन्यथा शपथ पत्र पेश कर पालना नहीं करने का कारण बताएं। इसके बावजूद, न तो उनकी ओर से शपथ पत्र पेश किया गया और न ही वे स्वयं अदालत में पेश हुए। याचिका में अधिवक्ता विनायक जोशी ने अदालत को बताया कि याचिकाकर्ता पीएचईडी की जनता जल योजना में पंप चालक के तौर पर कार्यरत थे। न्यूनतम वेतन अथॉरिटी ने 21 अगस्त और 16 अक्टूबर, 2020 को पीएचईडी को आदेश दिए थे कि वे साल 1995 से साल 2012 तक याचिकाकर्ताओं के न्यूनतम वेतन की गणना कर भुगतान करें। इसके बावजूद, विभाग ने आदेशों की पालना नहीं की। सुनवाई के दौरान, अतिरिक्त महाधिवक्ता माही यादव ने अदालत को बताया कि सीकर अधीक्षण अभियंता के रूप में रमेश कुमार राठी कार्यरत हैं। इस पर अदालत ने उन्हें अवमानना नोटिस जारी करते हुए उनका चेंबर कुर्क और सील कर उन्हें बाहर से दैनिक काम करने को कहा है।

हाईकोर्ट ने ...

(प्रथम पृष्ठ का शेष)

एसएलपी खारिज होने की जानकारी नहीं दी है। वहीं, राज्य सरकार के अफसर इतना तो समझते हैं कि कौन सा भवन अवैध है और कौनसा नहीं। इसलिए अदालती आदेश की पालना जल्दी कराई जाए।

याचिका पर सुनवाई करते हुए खंडपीठ ने राज्य सरकार को सात जुलाई तक का समय दिया है। हाईकोर्ट ने गत 25 फरवरी को राज्य सरकार को निर्देश दिया था कि वह पूरी तरह से अवैध तौर पर चिन्हित 19 भवनों को तत्काल सील करे। इसके साथ ही कहा गया था कि रिहायशी क्षेत्र में अवैध निर्माण होना व व्यावसायिक गतिविधियों को संचालित करना कानूनी प्रावधानों की अवहेलना है। हाईकोर्ट के प्रसंज्ञान लेने के बाद, नगर निगम ने परकोटे के भवनों की तीन तरह की सूची बनाई थी। पहली सूची में पूरी तरह से अवैध 19 भवनों को शामिल किया था।

'पाकिस्तान समर्थित आतंकवाद को समाप्त करने के लिए पूरा देश एकजुट है'

सचिन पायलट ने सचित्र प्रदर्शनी "स्वतंत्र भारत की झलक" का उद्घाटन किया

कांग्रेस के राष्ट्रीय महासचिव, पूर्व उप मुख्यमंत्री सचिन पायलट ने राजस्थान इंटरनेशनल सेंटर में पूर्व प्रधानमंत्री राजीव गांधी की पुण्यतिथि की पूर्व संध्या पर सचित्र प्रदर्शनी, "स्वतंत्र भारत की झलक" का उद्घाटन किया।

- **कांग्रेस के राष्ट्रीय महासचिव पायलट ने कहा कि भारत-पाकिस्तान के बीच सीज़ फायर की घोषणा अमेरिका के राष्ट्रपति द्वारा करना अप्रत्याशित है। जिस देश ने सीज़ फायर के कुछ घंटों बाद ही उनका उल्लंघन कर दिया उसकी क्या विश्वसनीयता है।**
- **पूर्व उपमुख्यमंत्री ने कहा कि स्थापित मापदंडों के बावजूद भाजपा सरकार विधायक कंवरलाल को बचाने का काम कर रही है, यह बहुत दुर्भाग्यपूर्ण है।**

जयपुर, 20 मई। कांग्रेस के राष्ट्रीय महासचिव, पूर्व उप मुख्यमंत्री एवं टोंक विधायक सचिन पायलट ने मंगलवार को राजस्थान इंटरनेशनल सेंटर जयपुर में आयोजित, भारत के पूर्व प्रधानमंत्री राजीव गांधी जी की पुण्यतिथि की पूर्व संध्या पर लोक स्वराज मंच द्वारा आयोजित सचित्र प्रदर्शनी, "स्वतंत्र भारत की झलक" का उद्घाटन किया।

इस अवसर पर सचिन पायलट ने मीडिया से बात की और भारत-पाकिस्तान के मध्य अप्रत्याशित तरीके से हुए सीज़फायर पर सवालिया निशान लगाते हुए केन्द्र सरकार से मांग की है कि वह देश को बताये कि किन मापदण्डों एवं आश्वासनों पर पाकिस्तान के साथ समझौता किया गया है।

उन्होंने कहा कि भारत-पाकिस्तान के मध्य जिस प्रकार से सीज़फायर किया गया और उसकी घोषणा किसी तीसरे देश के राष्ट्रपति द्वारा की गई, यह बहुत ही अप्रत्याशित है। उन्होंने कहा कि जिस देश ने सीज़फायर के कुछ घण्टों बाद ही उसका उल्लंघन कर दिया हो वह भविष्य में इसकी पुनरावृति नहीं करेगा, इसकी क्या विश्वसनीयता है।

उन्होंने चिंता व्यक्त करते हुए कहा कि आई.एम.एफ. द्वारा पाकिस्तान को बहुत बड़ा ऋण दिया गया है, अमेरिका द्वारा पाकिस्तान के साथ व्यापार विस्तार की बात की जा रही है, ऐसे में इसकी क्या गारंटी है कि पाकिस्तान अपने संसाधनों का दुरूपयोग भारत के खिलाफ आतंकवाद को पनपाने के लिए नहीं करेगा।

उन्होंने कहा कि पाकिस्तान समर्थित आतंकवाद को समाप्त करने के लिए सारे दल, पक्ष-विपक्ष, पूरा देश एकजुट है। जो ताकतें आतंकवाद को पनपाने का काम करती हैं, उनका सफाया होना चाहिए। ऑपरेशन सिंदूर के दौरान हमारी सेना ने जो शानदार प्रदर्शन किया है, उसके लिए भारतीय सेना की जितनी प्रशंसा की जाये उतनी कम है।

प्रधानमंत्री के प्रदेश के दौरे के सम्बन्ध में पायलट ने कहा कि प्रधानमंत्री जी का प्रदेश में स्वागत है। प्रधानमंत्री पहले भी कई बार प्रदेश के दौरे पर आ चुके हैं, बड़ी-बड़ी घोषणाएं करके गये हैं, जो कि धरातल पर नहीं उतरी हैं। उन्होंने मांग की कि ई.आर.सी.पी. को राष्ट्रीय परियोजना बनाने का वादा, जो अभी तक पूरा नहीं हुआ है, कम से कम इसे पूरा करके जायें।

भाजपा विधायक कंवरलाल की विधानसभा सदस्यता मामले पर पायलट ने कहा कि यह बहुत ही दुर्भाग्यपूर्ण है कि माननीय न्यायालय के निर्णय के बाद स्थापित मापदण्डों के बावजूद भाजपा सरकार अपने विधायक को बचाने का काम कर रही है।

श्रीगंगानगर में 12 करोड़ की हेरोइन के साथ 5 तस्कर गिरफ्तार

तस्करों के पास तुर्की की जिगाना पिस्टल व प्रतिबंधित ऑस्ट्रेलिया मेड 6 ग्लॉक पिस्टल, मैगज़ीन व जिंदा कारतूस बरामद हुए

श्रीगंगानगर, (कासं)। भारत और पाकिस्तान के बीच ऑपरेशन सिंदूर के बाद कोल्ड वार जारी है। राजस्थान के सीमावर्ती जिलों में पुलिस हाई अलर्ट पर है और सुरक्षा एजेंसियों ने भी निगरानी बढ़ा दी है।

इस बीच, श्रीगंगानगर में पुलिस ने अंतरराष्ट्रीय ड्रग्स और हथियार तस्करी के बड़े गिरोह का भंडाफोड़ किया है। कोतवाली और जवाहरनगर थाना पुलिस ने 2 अलग-अलग कार्यवाहियों को अंजाम देते हुए 5 नशा तस्करों को गिरफ्तार किया है। आरोपियों से 2 किलो 183 ग्राम हेरोइन बरामद की गई, जिसकी अंतरराष्ट्रीय बाजार में करीब 12 करोड़ रूपए की कीमत है, जबकि एक तुर्किया मेड जिगाना पिस्टल और भारत में आमजन के लिए प्रतिबंधित ऑस्ट्रिया मेड 6 ग्लॉक पिस्टल के साथ ही, 13 मैगजीन और 32 जिंदा कारतूस भी बरामद किए गए।

पुलिस को आरोपियों के तार लॉरेंस गैंग से जुड़े होने की आशंका है। साथ ही, जिले में विदेशी हथियार किसे सप्लाई किए जा रहे थे, इसकी भी जांच शुरू कर दी गई। डीआईजी गौरव यादव ने बताया कि आरोपी पंजाब के अमृतसर और मलोट से हेरोइन और विदेशी हथियार लाकर श्रीगंगानगर में सप्लाई करने की तैयारी में थे। पुलिस ने समय रहते गिरोह को पकड़ लिया। इससे बड़ी आपराधिक वारदात टल गई।

हालांकि प्रारंभिक जानकारी के अनुसार, आरोपी श्रीगंगानगर में बड़ी वारदात को करने की तैयारी में थे। इसलिए पाकिस्तान से पंजाब पहुंची हेरोइन को श्रीगंगानगर लाया जा रहा था। वहीं, देश में प्रतिबंधित विदेशी हथियारों की भी मोटी रकम लेकर सप्लाई करने की प्लानिंग थी।

पुलिस के अनुसार, जिले में अभी तक पाकिस्तान से सटे बॉर्डर एरिया में ही हेरोइन मिलने के मामले सामने आए

- **डी.आई.जी. गौरव यादव ने बताया कि आरोपी पंजाब के अमृतसर और मलोट से हेरोईन व विदेशी हथियार लाकर श्रीगंगानगर में सप्लाई करने की तैयारी में थे।**

हैं। लेकिन ऑपरेशन सिंदूर के बाद बॉर्डर एरिया में सख्ती बढ़ा दी गई है। ऐसे में तस्करों ने दूसरा रूट चुना। संभवतः यह पहली बार है कि जब पंजाब से श्रीगंगानगर तक सड़क मार्ग से इतनी तादाद में हेरोइन की खेप पहुंचाने की तैयारी थी। आरोपियों के पास से एक स्विफ्ट कार और एक मोटरसाइकिल भी जब्त की है। इनका इस्तेमाल तस्करी समेत अन्य अपराधों में किया जा रहा था। पूछताछ में कई अहम जानकारी सामने आई हैं।

पुलिस के अनुसार, गिरोह के पंजाब और अन्य सीमावर्ती राज्यों के साथ अंतरराष्ट्रीय स्तर पर तार जुड़े होने की संभावना है। इस ऑपरेशन में जिला स्पेशल टीम के कांस्टेबल अश्विनी की भूमिका अहम रही। उनकी सतर्कता से यह गिरोह पकड़ा गया। डीआईजी गौरव यादव ने कहा कि श्रीगंगानगर जैसे संवेदनशील इलाके में पुलिस चौकसी बढ़ा दी गई है। ड्रग्स और हथियार तस्करी में शामिल हर व्यक्ति पर सख्त कार्यवाही की जायेगी।

डीआईजी गौरव यादव ने बताया कि पुलिस ने जवाहरनगर और कोतवाली थाना इलाके में कार्यवाही करते हुए, इन सभी आरोपियों को गिरफ्तार किया है। कोतवाली थाना पुलिस ने 5 विदेशी पिस्टल, 330 ग्राम हेरोइन और 29 जिंदा कारतूस के साथ एक स्विफ्ट गाड़ी को जब्त किया है। आरोपियों में देवेंद्र भांभू (29) पुत्र चुन्नीलाल भांभू निवासी वाटरवर्क्स कॉलोनी, श्रीगंगानगर, सुभाष (21) उर्फ अंकित पुत्र ओमप्रकाश निवासी 6 पुलिस थाना सदर, श्रीगंगानगर और सतनाम (25) उर्फ गुरविंदर पुत्र गुरमीत निवासी 6 श्रीगंगानगर है। फिलहाल तीनों से पूछताछ जारी है।

जवाहर नगर थाना पुलिस ने 2 आरोपियों को गिरफ्तार किया है। इनमें साहिल उर्फ चीकू (21) पुत्र विजयसिंह निवासी उम्मेवाला पीएस गोलूवाला, और सत्यनारायण (19) पुत्र अमीलाल, निवासी फरसेवाला गंगानगर हैं। दोनों आरोपियों के कब्जे से 2 ग्लॉक पिस्टल और 3 कारतूस के साथ 1 किलो 850 ग्राम हेरोइन बरामद की है। वहीं, पुलिस ने तस्करी में प्रयुक्त बाइक भी जब्त की है।

सुप्रीम कोर्ट ने मध्यप्रदेश ...

(प्रथम पृष्ठ का शेष)

लगा स्वतः संज्ञान की जरुरत है। आपको कुछ करना होगा। मध्य प्रदेश हाई कोर्ट ने 14 मई को स्वतः संज्ञान लेकर पुलिस को शाह के खिलाफ एफआईआर दर्ज करने का निर्देश दिया। अगले दिन 15 मई को हाई कोर्ट ने इसे "बड़ा धोखा" करार दिया और कहा कि वह खुद कार्यवाही की मॉनिटरिंग करेगा। उसके बाद शुक्रवार को सुप्रीम कोर्ट ने शाह की माफी ठुकरा दी और एसआईटी का गठन किया, जिसके गठन की 28 मई तक रिपोर्ट मांगी है।

विवाद तब सामने आया, जब मंत्री शाह द्वारा एक सार्वजनिक सभा में कर्नल सोफिया कुरैशी को लेकर की गई टिप्पणियाँ वायरल हो गईं। कुरैशी ने हाल ही में "ऑपरेशन सिंदूर" के बाद मीडिया को ब्रीफ किया था और इसमें उनके गरिमापूर्ण नेतृत्व की भारी प्रशंसा हुई थी। हालांकि शाह ने बाद में सफाई दी कि उनकी बातों को गलत समझा गया और उनका उद्देश्य कर्नल कुरैशी की प्रशंसा करना था, सुप्रीम कोर्ट ने उनकी माफी को "गंभीरता से रहित" बताया और सिरे से खारिज कर दिया।

धाराएं:

मध्यप्रदेश हाईकोर्ट के निर्देश पर, शाह के खिलाफ भारतीय न्याय संहिता (बीएनएस) की धाराओं 152, 196(1)(बी), और 197(1)(सी) के तहत एफआईआर दर्ज की गई है।

अटारी बॉर्डर ...

(प्रथम पृष्ठ का शेष)

एक तरफ भारतीयों की ओर से पूरा जोश दिखाया जा रहा था। वहीं इस बीच दूसरी तरफ पाकिस्तानी सेना की गैलरी पूरी तरह से खाली थी। पाकिस्तानी रेंजर्स ने भी औपचारिकता के तौर पर अपनी तरफ से झंडा फहराने की रस्म अदा की।

सिरसी रोड...

(प्रथम पृष्ठ का शेष)

अपीलेट ट्रिब्यूनल में 25 अपीलें हुई थीं, जिनमें से 5 अपीलों पर पक्षकारों को जेडीए की कार्रवाई पर स्टे मिला है। इस पर अदालत ने जेडीए से स्टेट्स रिपोर्ट सहित यह बताने के लिए कहा है कि वह इन अतिक्रमणों को कब और कैसे हटाएंगे। अवमानना याचिका में कहा गया कि खंडपीठ ने जेडीए को निर्देश दिया था कि वह 200 फीट सिरसी रोड बाईपास से शुरू होकर खातीपुरा तिराहे तक और खातीपुरा तिराहे से झारखंड मंदिर मोड़ तक की रोड के दोनों ओर से सभी तरह के अतिक्रमण दो माह में हटाए। इसके बावजूद, जेडीए की ओर से पूरे अतिक्रमण नहीं हटाए गए।

मार्डन मीडिया, बीकानेर के लिए मुद्रक एवं प्रकाशक सोमेश शर्मा द्वारा वतन प्रेस, कुम्भाना हाऊस, हनुमान हत्था, बीकानेर से मुद्रित एवं प्रकाशित। संपादक-राजेश शर्मा, आर.एन.आई. नं. 35214/79, जयपुर कार्यालय: सुधर्मा एम.आई.रोड, जयपुर। फोन: 2372634, 4103333-34, कोटा कार्यालय : पलायथा हाऊस, छत्रपति शिवाजी मार्ग, कोटा। फोन: 2386031, 2386032,फैक्स:0744-2386033, उदयपुर कार्यालय: आयड मैन रोड आयड, उदयपुर। फोन: 2413092, फैक्स : 0294-2410146, अजमेर कार्यालय:-राष्ट्रदूत भवन, चुंगी नाका के पास, अजमेर। फोन: 2627612, फैक्स:0145-2624665, जालोर कार्यालय :- जी 1/63, इन्डस्ट्रीयल एरिया, फेस प्रथम, जालोर। फोन: 226422,226423, फैक्स: 02973-226424 हिण्डौनसिटी कार्यालय :- जी -1-201, रीको औद्योगिक क्षेत्र, हिण्डौनसिटी। फोन: 230200, 230400, फैक्स: 07469-230600 चूरू कार्यालय : एच-150, रीको औद्योगिक क्षेत्र, चूरू, फोन : 256906, 256907, फैक्स: 01562-256908